वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास

Veba ādhārita ṛgvedīya khoja evaṃ anukramaṇikā tantra kā vikāsa

दिल्ली विश्वविद्यालय की एम.फिल. (संस्कृत) उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध

शोधकर्त्ता

जलज कुमार

शोध-निर्देशक

डॉ. सुभाष चन्द्र

सहायक आचार्य, संगणकीय भाषाविज्ञान

संस्कृत विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली-110007

2016

वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास

Veba ādhārita ṛgvedīya khoja evaṃ anukramaṇikā tantra kā vikāsa

दिल्ली विश्वविद्यालय की एम.फिल. (संस्कृत) उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध

शोधकर्त्ता

जलज कुमार

शोध-निर्देशक

डॉ. सुभाष चन्द्र

सहायक आचार्य, संगणकीय भाषाविज्ञान

संस्कृत विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली-110007

2016

30 मार्च, 2016

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की एम. फिल. उपाधि के हेतु डॉ. सुभाष चन्द्र के निर्देशन में लिखा किया गया **"वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तंत्र का विकास"** नामक यह लघु शोध प्रबन्ध मेरा मौलिक कार्य है। इस शोधकार्य का प्रस्तुतीकरण एवं प्रकाशन सम्पूर्णत: अथवा अंशत: कहीं भी नहीं किया गया है।

शोधकर्त्ता

जलज कुमार

शोध-निर्देशक

डॉ. सुभाष चन्द्र

विभागाध्यक्ष

प्रो. रमेशचन्द्र भारद्वाज

Department of Sanskrit
University of Delhi
Delhi-110007, India

Date : 30.03.2016

Certificate of Originality

The research work embodied in this dissertation entitled **"वेब आधारित ऋग्वेदीय अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास"** has been carried out by me at the Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi, India. The Manuscript has been subjected to plagiarism checked by **Turnitin software**. The work submitted for consideration of award of M.Phil. is original.

(Jalaj Kumar)
Candidate

University of Delhi

Supervisor's Certificate for Exclusion of Self-Published work

The content of the chapters _____ have been published in

1.

2.

3.

4.

This published work has been included in the dissertation and has not been submitted for any degree to any University/institute.

Signature of Student **Signature of Supervisor**

Student Approval Form

Name of the Author	**JALAJ KUMAR**
Department	**DEPARTMENT OF SANSKRIT**
Degree	**MASTER OF PHILOSOPHY**
University	**UNIVERSITY OF DELHI**
Guide	**DR. SUBHASH CHANDRA**
Dissertation Title	**वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास**
Year of Award	**TO BE AWARDED**

Agreement

1. I hereby certify that, if appropriate, I have obtained and attached hereto a written permission/statement from the owner(s) of each third party copyrighted matter to be included in my dissertation, allowing distribution as specified below.
2. I hereby grant to the university and its agents the non-exclusive license to archive and make accessible, under the conditions specified below, my dissertation, in whole or in part in all forms of media, now or hereafter known. I retain all other ownership rights to the copyright of the dissertation. I also retain the right to use in future works (such as articles or books) all or part of this thesis, dissertation, or project report.

Conditions:

1. Release the entire work access Worldwide	
2. Release the entire work for 'My University' only for **1 year** **2 year** **3 year** **and after this time release the for access worldwide**	

3. Release the entire work for 'My University' only while at the same time releasing the following parts of the work (e.g. because other parts relate to publication) for worldwide access. **a) Bibliographic details and Synopsis only.** **b) Bibliographic details, synopsis and the following chapters only.** **c) Preview/Table of Contents/24 page only.**	
4. View Only (No Downloads) (worldwide)	

Signature of the Scholar **Signature an Seal of the Guide**

Place: UNIVERSITY OF DELHI, DELHI

Date: 30.03.2016

आभार

इस शोध को पूर्ण करने में बहुत से लोगों का योगदान रहा है। जिनमें गुरुजनों का आशीर्वाद तथा अग्रजों एवं मित्रों की प्रेरणा का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। समय-समय पर सभी ने अपने महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किए।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक डॉ. सुभाष चन्द्र, सहायक आचार्य, संगणकीय भाषाविज्ञान, संस्कृत विभाग का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंने 'वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तंत्र का विकास' इस विषय पर शोध करने के लिए मेरा उत्साहवर्धन किया तथा निर्देशन के लिए सभी प्रक्रियाओं को आगे बढ़ाया। संस्कृत शास्त्र के साथ-साथ संगणकीय भाषाविज्ञान में आपकी योग्यता, संस्कृत के संवर्धन की नई सोच, निरन्तर सहायता एवं शोध निर्देशन कौशल के कारण ही यह कार्य पूर्ण हो पाया। आपके द्वारा शोधार्थियों को दिए जाने वाले निरन्तर समय के कारण ही मुझमे संगणकीय भाषाविज्ञान में अभिरुचि के साथ कौशल का भी विकास हुआ। आपके द्वारा पढ़ाई हुई शोध प्रविधि का प्रयोग मैंने बखूबी इस शोध में किया है जिससे मेरे शोध में एक नवीनता आई है। यद्यपि संगणकीय भाषाविज्ञान का ज्ञान मुझे पहले से नही था फिर भी आपने हमें अपने व्यस्त कार्यक्रम में से निरन्तर समय एवं मेरे लिए बिल्कुल नवीन विषय संगणकीय भाषाविज्ञान में प्रशिक्षण के साथ-साथ कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग का भी ज्ञान हमें बड़ी ही सरलता एवं सुगमता से कराया। आपके प्रेरणादायी मार्गदर्शन तथा वात्सल्यपूर्ण प्रेम के कारण मैं यह शोध कार्य पूर्ण कर पाया हूँ। शोध एवं छात्रों के प्रति आपका समर्पण हमारे लिए हमेशा सम्माननीय एवं स्मरणीय है। आपने इस लघु शोधप्रबन्ध के प्रत्येक अध्याय को कम से कम पाँच बार अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों, व्याकरणिक अशुद्धियों के निवारण के साथ सम्पादित (Edit) किया जिसके कारण यह कार्य इस स्थिति को प्राप्त हो पाया है। अत: परमपूज्यनीय गुरुजी के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और यह उम्मीद करता हूँ कि इनका निर्देशन मुझे भविष्य में भी मिलता रहे।

छात्रों के हित के प्रति सदैव समर्पित, अत्यन्त स्नेहशील एवं संस्कृत के उत्थान में दूरदृष्टि रखने वाले संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष आदरणीय प्रो. रमेशचन्द्र भारद्वाज जी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे इस शोधकार्य के विषय का चुनाव करने में मदद की। इनके अतिरिक्त विभागीय एम. फिल. शोधसमिति के प्रति भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिनकी सहमति से इस विषय पर शोध करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। हमारे विभाग के अन्य प्राध्यापकगणों प्रो.

शारदा शर्मा, सहाचार्य डॉ. भारतेन्दु पाण्डेय, डॉ. दयाशंकर तिवारी, डॉ. मीरा द्विवेदी, डॉ. ओमनाथ बिमली, डॉ. रंजन त्रिपाठी, डॉ. पूर्णिमा कौल, डॉ. रणजीत बेहेरा, डॉ. सत्यपाल सिंह, डॉ. वेदप्रकाश ड़िन्ड़ोरिया तथा सहायक आचार्य डॉ. अवधेश प्रताप सिंह, डॉ. बलराम शुक्ल, डॉ. धनञ्जय कुमार आचार्य, डॉ. करुणा आर्य, श्री एम. किशन, डॉ. मोहिनी आर्य, डॉ. राजीव रञ्जन, डॉ. श्रुति राय, डॉ. सोमवीर, डॉ. टेकचन्द मीणा, डॉ. उमाशंकर तथा डॉ. विजय शंकर द्विवेदी को भी मैं धन्यवाद देना चाहूँगा जिनका निर्देशन समय-समय पर प्राप्त होता रहा।

गुरुकुलीय विद्या प्राप्त करते समय तत्कालीन आचार्य विद्यादेव जी, प्राचार्य रामदेव जी, गुरु आनन्द जी, गुरु देवेन्द्र जी, गुरु स्वामी प्रकाशमुनि जी आदि तथा एम.ए. के दौरान वेद की प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रो. शशि तिवारी जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। सम्पादन का कार्य बहुत ही कठिन होता है। इस शोध का सम्पादन वेद विशेषज्ञों द्वारा भी किया गया है। जिनमें डॉ. रणजीत बेहेरा, डॉ. विजयशंकर द्विवेदी, डॉ. सुमन शर्मा, अग्रज शिव कुमार, अनुज अङ्कुश कुमार, सुनील आर्य, दीपक आर्य, महेन्द्र आर्य एवं रेखा कुमारी की बहुत ही अहम् भूमिका रही है। अतः इनका मैं हृदय से आभारी हूँ।

मैं विशेष रूप से हमारे संस्कृत विभाग के कार्यालय में कार्यरत प्रताप सिंह, मोनिका चतुर्वेदी, मयंक, सन्दीप तथा सभी कार्यरत सदस्यगणों का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। इस शोध को सम्पन्न करने के लिए आरजीएनएफ के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने आर्थिक सहायता प्रदान की। जिसके का कारण कार्य करना बहुत ही आसान हो गया। इसके लिए मैं यूजीसी का भी आभारी हूँ।

मैं संगणकीय भाषाविज्ञान के वरिष्ठ शोधार्थी भूपेन्द्र, माधव, विवेक, साक्षी जी तथा सहपाठी रवि के प्रति हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने सदा मुझे प्रोत्सहित किया और मेरा हौसला बढ़ाया। भाई सुनील, अङ्कुश, दीपक, महेन्द्र, मुकुल, सम्पत, वन्दना एवं रेखा का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूँ जिन्होंने मेरे लघु शोध प्रबन्ध के कुछ अध्यायों को पूर्ण करवाने में सहायता प्रदान की। मुझे यहाँ तक पहुँचाने में मेरे परिवार के सभी सदस्यों एवं सभी सम्बन्धियों की अहम् भूमिका रही है तथा सभी के आशीर्वादों एवं प्रेरणापूर्ण मार्गदर्शन कराने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। अतः उनके लिए भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनका

आशीर्वाद मुझ पर हमेशा रहता है। मैं अपने सभी अग्रजों, अनुजों एवं सभी साथियों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मेरी माता जी एवं पिता जी का भी धन्यवाद करना चाहूँगा जिनके बिना मेरा यहाँ पहुँचना तथा इस कार्य को सम्पन्न करना कदापि सम्भव नही था।

मैं दिल्ली विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, साहित्य अकादमी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पुस्तकालयों के कर्मचारियों का भी धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ जिन्होंने पुस्तक प्राप्ति में मेरा सहयोग किया।

इस शोध का परिणाम दिल्ली विश्वविद्यालय के सर्वर (Server) पर सबके उपयोग के लिए उपलब्ध है। अतः इसके लिए मैं विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर केन्द्र का भी आभारी हूँ जिन्होंने इसे होस्ट (Host) करने के लिए सभी सुविधाएँ प्रदान की।

जलज कुमार

विषय-सूची

आभार ..... i-iii
विषय सूची ..... iv-ix
संस्कृत लिप्यन्तर के लिए अन्ताराष्ट्रीय वर्णमाला (आईएएसटी) x
बराह सॉफ्टवेयर द्वारा देवनागरी के लिए यूनीकोड में संस्कृत टंकण सहायता xi
ग्रन्थ संकेत-सूची ..... xii-xiii

परिचय 01-06

प्रथम अध्याय 07-53
वेदों का सामान्य परिचय एवं ऋग्वेद की संरचना
1. वैदिक वाङ्मय का स्वरूप 09-09
2. वैदिक संहिताओं का परिचय 09-18
3. ऋग्वेद की संरचना 18-36
4. ऋग्वेद का समीक्षात्मक संस्करण 36-37
5. ऋग्वेद का काल 38-49
6. ऋग्वैदिक भाष्यों, निरुक्त तथा वैदिक व्याकरण का संक्षिप्त परिचय 49-53

द्वितीय अध्याय 54-75
अनुक्रमणिका एवं वैदिक अनुक्रमणिकाओं का संक्षिप्त परिचय
1. अनुक्रमणिका का संक्षिप्त परिचय 54-55
2. अनुक्रमणी का महत्त्व 55-56
3. अनुक्रमणिका का इतिहास 56-59
4. अनुक्रमणियों की व्याख्या पद्धति 59-59
5. ऋग्वेदीय अनुक्रमणियों का संक्षिप्त परिचय 60-68
6. यजुर्वेदीय अनुक्रमणियों का संक्षिप्त परिचय 68-70
7. सामवेदीय अनुक्रमणियों का संक्षिप्त परिचय 70-74
8. अथर्ववेदीय अनुक्रमणियों का संक्षिप्त परिचय 74-75

तृतीय अध्याय 76-105
ऑनलाइन अनुक्रमणिका का संक्षिप्त परिचय एवं अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण

1. अनुक्रमणिका....76-76
2. ऑनलाइन अनुक्रमणिका....76-78
3. ऑनलाइन अनुक्रमणिका की आवश्यकता....78-79
4. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका....79-80
5. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका का संक्षिप्त इतिहास....80-81
6. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका की पद्धतियाँ....81-82
7. मुद्रित तथा ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका....82-83
8. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका की महत्त्वता....84-84
9. मुद्रित अनुक्रमणिका का सामान्य परिचय....84-86
   9.1. विषयानुक्रमणिका....85-85
   9.2. नामानुक्रमणिका....85-85
10. संस्कृत ग्रन्थों से सम्बन्धित अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण....86-105
   10.1. संस्कृत ग्रन्थों से सम्बन्धित मुद्रित अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण परिचय....86-87
   10.2. मुद्रित अनुक्रमणिका के क्षेत्र में ऋग्वेद में कार्य....88-89
   10.3. मुद्रित अनुक्रमणिका के क्षेत्र में यजुर्वेद में कार्य....90-91
   10.4. मुद्रित अनुक्रमणिका के क्षेत्र में सामवेद में कार्य....92-93
   10.5. मुद्रित अनुक्रमणिका के क्षेत्र में अथर्ववेद में कार्य....93-94
   10.6. वैदिक कोषों का सर्वेक्षण....95-101
   10.7. संस्कृत ग्रन्थों से सम्बन्धित वेब आधारित अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण...101-105

चतुर्थ अध्याय....106-118

ऋग्वैदिक ई-पाठ तथा अनुक्रमणिका तन्त्र विकास के संगणकीय पक्ष

1. ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तन्त्र की संरचना....108-111
   1.1. पाइथॉन सर्वर पेजेज (Python Server Pages)....108-110
   1.2. स्पाइसी वेब सर्वर (Spyce Web Server)....110-110
   1.3. डेटाबेस एवं टेक्स्ट फाइल (Databases & Text Files)....110-111
2. ऋग्वैदिक अनुक्रमणिका तन्त्र के घटक....111-117
3. ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तन्त्र की प्रक्रिया....117-118

पञ्चम अध्याय....119-126

वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का परिचय

1. इन्पुट मकैनिज्म (Input Mechanism) 119-124
2. आउटपुट (Output) 124-126

निष्कर्ष एवं भावी अनुसन्धान की सम्भावनाएँ 127-129
1. निष्कर्ष 127-128
   1.1. सिस्टम की कुछ विशिष्टताएँ 127-128
   1.2. सिस्टम की कुछ सीमाएँ 128-128
2. भावी अनुसन्धान की सम्भावनाएँ 128-129
   1.1. वैदिक संहिताओं के लिए ऑनलाइन अनुक्रमणिका 128-128
   1.2. वैदिक संहिताओं पर सायण भाष्य 129-129
   1.3. वैदिक संहिताओं पर उपलब्ध अन्य भाष्यों का ऑनलाइन सिस्टम 129-129
   1.4. सन्धियुक्त शब्दों को तोड़ना 129-129

तालिका सूची ..... पृष्ठ सङ्ख्या
तालिका 1.1 13-13
यजुर्वेद पर उपलब्ध भाष्य
तालिका 1.2 16-16
सामवेद पर उपलब्ध भाष्य
तालिका 1.3 17-17
अथर्ववेद पर उपलब्ध भाष्य
तालिका 1.4 18-18
अथर्ववेदीय महत्त्वपूर्ण अंशों पर भाष्य
तालिका 1.5 22-22
ऋग्वेद में मन्त्रों की संख्या
तालिका 1.6 23-23
श्री काशीकर द्वारा संकलित खिल-सूक्तों का संक्षिप्त विवरण
तालिका 1.7 24-24
मन्त्र तथा मन्त्रद्रष्टा ऋषि
तालिका 1.8 25-25
ऋग्वेद में प्रमुख 7 छन्द
तालिका 1.9 26-26
ऋग्वेद में प्रयुक्त शेष छन्द
तालिका 1.10 49-49

ऋग्वेद पर उपलब्ध भाष्य
तालिका संख्या: 1.11 51-51
ऋग्वेद के महत्त्वपूर्ण अंशों के भाष्य
तालिका 4.1 111-111
ऋग्वेद मन्त्र डेटाबेस की संरचना
तालिका 4.2 114-114
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का स्वर युक्त संहिता पाठ
तालिका 4.3 114-114
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का स्वरबिना संहिता पाठ
तालिका 4.4 114-114
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का मण्डल क्रम
तालिका 4.5 115-115
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का अष्टक क्रम
तालिका 4.6 115-115
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का पदपाठ
तालिका 4.7 116-116
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र द्रष्टा ऋषि नाम
तालिका 4.8 116-116
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का देवता
तालिका 4.9 116-116
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का छन्द
तालिका 4.10 116-116
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का स्वर
तालिका 4.11 117-117
डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का हिन्दी अनुवाद
तालिका 5.1 125-125
अनुक्रमणिका सिस्टम में प्राप्त अनुक्रमणी सूची का एक प्रारूप
तालिका 5.2 125-125
खोजे गए शब्द का परिणाम

चित्र सूची ..... पृष्ठ सङ्ख्या

चित्र 4.1 107-107
तन्त्र का यूजर इण्टरफेस
चित्र 4.2 107-107
वेब आधारित ऋग्वैदिक अनुक्रमणिका तन्त्र की संरचना (Architecture of the system)

चित्र 4.3 118-118
ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तन्त्र की प्रक्रिया
चित्र 5.1 120-120
पाठबॉक्स
चित्र 5.2 121-121
देवताओं के नामों की सूची
चित्र 5.3 122-122
देवतागणों के नामों की सूची
चित्र 5.4 123-123
देवता युग्मों के नामों की सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची 130-154
सन्दर्भ ग्रन्थ (References) 130-154
हिन्दी ग्रन्थ (Hindi References) 130-135
अंग्रेजी ग्रन्थ (English References) 135-140
वेबसाइट ग्रन्थ (Web References) 140-144
सहायक ग्रन्थ (Bibliography) 144-154
हिन्दी ग्रन्थ (Hindi Bibliography) 144-150
अंग्रेजी ग्रन्थ (English Bibliography) 150-152
वेबसाइट ग्रन्थ (Web Bibliography) 152-154

परिशिष्ट 155-163
प्रथम परिशिष्ट 155-155
ऋग्वेद मन्त्र डेटाबेस की संरचना
द्वितीय परिशिष्ट 156-156
परिणाम
तृतीय परिशिष्ट 157-157
मन्त्र के लिन्क को खोलने पर प्राप्त मन्त्र सूचना
चतुर्थ परिशिष्ट 158-158
ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तंत्र की प्रक्रिया
पञ्चम परिशिष्ट 159-159
ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तंत्र का इण्टरफेस
षष्ठ परिशिष्ट 160-160

देवतानाम से सर्च में प्रयुक्त देवताओं की सूची
सप्तम परिशिष्ट..... 161-161
देवतागण से सर्च में प्रयुक्त देवतागणों की सूची
अष्टम परिशिष्ट..... 162-162
देवतायुग्म से सर्च में प्रयुक्त देवतायुग्मों की सूची
नवम परिशिष्ट..... 163-163
वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र की संरचना

संस्कृत लिप्यन्तर के लिए अन्ताराष्ट्रीय वर्णमाला (आएएएसटी)

INTERNATIONAL ALPHABET FOR SANSKRIT TRANSLITERATION (IAST)

अ	आ	इ	ई	उ
a	*ā*	*i*	*ī*	*u*
ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ए
ū	*ṛ*	*ṝ*	*ḷ*	*e*
ऐ	ओ	औ	ं	ः
ai	*o*	*au*	*ṃ*	*ḥ*
क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
k	*kh*	*g*	*gh*	*ṅ*
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
c	*C*	*j*	*jh*	*ñ*
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
ṭ	*ṭh*	*ḍ*	*ḍh*	*ṇ*
त्	थ्	द्	ध्	न्
t	*th*	*d*	*dh*	*n*
प्	फ्	ब्	भ्	म्
p	*ph*	*b*	*bh*	*m*
य्	र्	ल्	व्	
y	*r*	*l*	*v*	
स्	श्	ष्	ह्	
s	*ś*	*ṣ*	*h*	
क्ष्	ज्ञ्	श्र्		
kṣ	*jñ*	*śr*		

बराह सॉफ्टवेयर द्वारा देवनागरी के लिए यूनीकोड में
संस्कृत टंकण हेतु सहायक तालिका

Unicode Devanagari Input Mechanism through Baraha software (http://www.baraha.com)				
अ (a)	आ (A/aa)	इ (i)	ई (I/ee)	उ (u)
ऊ (U/oo)	ऋ (Ru)	ॠ (RRu)	ऌ (lRu)	ॡ (lRRu)
ए (e)	ऐ (ai)	ओ (o)	औ (au)	अं (aM)
ः (aH)				
क् (k)	ख् (K/kh)	ग् (g)	घ् (G/gh)	ङ् (~G)
च् (c)	छ् (C)	ज् (j)	झ् (J/jh)	ञ् (~j)
ट् (T)	ठ् (Th)	ड् (D)	ढ् (Dh)	ण् (N)
त् (t)	थ् (th)	द् (d)	ध् (dh)	न् (n)
प् (p)	फ् (ph)	ब् (b)	भ् (bh)	म् (m)
य् (y)	र् (r)	ल् (l)		व् (v/w)
स् (s)	श् (S/sh)	ष् (Sh)	ह् (h)	ळ् (Lx)
क्ष् (kSh)	ज्ञ् (j~j)	श्र् (Sr/Shr)		

संकेत सूची

शब्द	संकेत
ऋग्वेद संहिता	ऋ.
ऋग्वेद मन्त्र	ऋ.म.
यजुर्वेद संहिता	यजु.
अथर्ववेद संहिता	अथर्व.
सामवेद संहिता	साम.
ऋग्वेदभाष्य भूमिका	ऋ. भू.
जैमिनी सूत्र	जै. सू.
विक्रम संवत्	वि.सं.
आपस्तम्ब श्रौतसूत्र	आ. श्रौ.
अष्टाध्यायी	अष्टा.
श्रीमद्भागवद पुराणम्	श्रीमद्भा. पु.
महाभाष्य आह्निक	महा. आ.
सर्वानुक्रमणी	सर्वा.
कूर्मपुराण	कू. पु.
उपनिषद्	उप.
शतपथ ब्राह्मण	शत. ब्रा.
चरण अष्टक	च. अ.
मीमांसा सूत्र	मी. सू.
शबर भाष्य	श. भा.
सामतर्पण	सा. त.
मनुस्मृति	मनु.
सर्वानुक्रमणी परिभाषा	सर्वा. परि.
वायुपुराणम्	वायु. पु.

महाभारत	महा.
भाष्य	भा.
सर्वानुक्रमणी व्याख्या	सर्वा. व्या.
वेदार्थदीपिका	वे.दी.
अनुवाकानुक्रमणी	अनु.अ.
श्लोक सङ्ख्या	श्लो.स.
ऋक्सर्वानुक्रमणी परिभाषा	ऋ. परि.
मास्टर ऑफ फिलोसॉफी	एम.फिल.
जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी	जे.एन.यू.
Research and development	R&D
नेशनल लैंग्वेग प्रोसेसिंग	एन. एल. पी.

परिचय

ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन एवं पवित्र भारतीय ग्रन्थ है। संस्कृत भाषा में निहित यह वैदिक मन्त्रों का विशाल संग्रह है। यह हिन्दू धर्म के चार पवित्र धर्मवैधानिक ग्रन्थों में सर्वप्रथम स्थान पर विद्यमान है जो वेदों के रूप में जाने जाते हैं तथा विश्व भर में प्रतिष्ठित हैं। इसमें मन्त्रों के माध्यम से ऋषियों एवं ऋषिकाओं के द्वारा देवी-देवताओं की स्तुतियाँ की गई हैं। इसके छन्दों का गायन प्रार्थनाओं, धार्मिक कार्यों तथा अन्य शुभ अवसरों पर देवताओं की स्तुतियों में होता है। प्राचीन भारतीय मान्यता के अनुसार ऋग्वेद संहिता को पैल ने वेद व्यास के मार्गदर्शन में एकत्र किया था।[1] पाश्चात्य मान्यता के अनुसार इसे प्राचीन काल के इतिहास के रूप में भी जाना जाता है जिसकी सहायता से प्राचीन काल में स्थित मनुष्य के रहन-सहन, खान-पान आदि की जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। भाषाशास्त्रीय एवं भाषाविज्ञान सम्बन्धी साक्ष्य यह प्रदर्शित करते हैं कि ऋग्वेद की रचना 1700-1100 ई. पू. में सप्त सिन्धु (सप्त नदियों का देश) नामक स्थान में हुई थी जो वर्तमान में पंजाब प्रांत के आसपास का क्षेत्र है।[2] इस प्रकार यह इण्डो-यूरोपियन भाषा का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है जिसमें कुल 10552 मन्त्र (खिल सूक्तों के 80 मन्त्रों सहित) हैं और कुल मिलाकर 397246 शब्द हैं जो शाकल शाखा के अनुसार 10 मण्डलों, 85 अनुवाक तथा 1028 सूक्तों (11 खिल सूक्तों सहित) में विभक्त हैं।[3] यह ग्रन्थ विश्व की सर्वोच्च सांस्कृतिक धरोहरों में सर्वप्रथम स्थान रखता है।

प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य ऋग्वेद संहिता का संगणकीय डेटाबेस तैयार करके वेब आधारित खोज एवं ऑनलाइन अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास करना है। जिसके माध्यम से ऋग्वेद संहिता के मन्त्रों एवं शब्दों को तात्कालिक संदर्भ प्राप्त करने हेतु किसी भी समय तुरन्त खोजा जा

---

[1] http://www.cs.mcgill.ca/~rwest/link-suggestion/wpcd_2008-09_augmented/wp/r/Rigveda.htm

[2] संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास, ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड की भूमिका।

[3] वैदिक साहित्य का इतिहास, कपिल देव द्विवेदी, पृ० 13-46 ।

सकता है तथा इसका प्रयोग शोधार्थी के द्वारा किसी भी प्रकार के वैदिक अनुसंधान के लिए किया जा सकता है।

ऋग्वेदीय अनुक्रमणिका तन्त्र की आवश्यकता

ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। ऋग्वेद का महत्त्व सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में अक्षुण्ण है । ऋग्वेद वैज्ञानिक, धार्मिक, शास्त्रीय, काव्यशास्त्रीय, साहित्यिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, भाषावैज्ञानिक एवं बौद्धिक दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त (10.90) में पुरुष (परमात्मा) के विराट् स्वरूप का वर्णन किया गया है और उसी से समस्त विश्व की सृष्टि तथा चारों वेदों की उत्पत्ति हुई है। सर्वप्रथम चतुर्वर्ण-व्यवस्था का वर्णन भी ऋग्वेद के इसी सूक्त में आता है। नासदीय सूक्त (10.129) में सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व तथा पश्चात् की स्थिति का सुंदर वर्णन किया गया है । हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121) में प्रजापति का दार्शनिक भावों में महत्त्व प्रतिपादित है। अस्य वामीय सूक्त (1.164) ऋग्वेद के अति महत्त्वपूर्ण सूक्तों मे आता है। इसके 52 मन्त्रों में दर्शन, अध्यात्म, मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान, ज्योतिष, भौतिक विज्ञान और छन्दों के महत्त्व से सम्बन्धित अनेक तथ्यों का विवरणात्मक वर्णन है। एकेश्वरवाद को प्रस्थापित करने वाला मन्त्र 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति०' भी इसी सूक्त में है । इसी प्रकार श्रद्धा सूक्त, संज्ञान सूक्त, दानस्तुति सूक्त, अक्ष सूक्त, विवाह सूक्त, अनेको आख्यान सूक्त एवं अनेको संवाद सूक्त ऋग्वेद की ऋचाओं में वर्णित हैं। इतिहास की दृष्टि से विचार करे तो आर्यों की प्राचीनतम संस्कृति भी ऋग्वेद में वर्णित है।

एक दृष्टि से तो ऋग्वेद की ऋचाएँ अति महत्त्वपूर्ण हैं किन्तु अगर दूसरी दृष्टि हम इसे देखे तो ये इतना विस्तृत है कि किसी के लिए भी इसमें से इन तथ्यों के तात्कालिक संदर्भ खोज पाना अत्यन्त दुर्लभ कार्य है । अतः प्रस्तुत खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र के द्वारा ऋग्वेद में उल्लिखित किसी भी शब्द को खोज पाना आसान हो जाएगा। जिससे तात्कालिक संदर्भ हेतु बहुत ही सहायता प्राप्त होगी जो शोधछात्रों, ज्ञिज्ञासुओं एवं उपयोगकर्ताओं के प्रयोग के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

यह अनुक्रमणिका सिस्टम संस्कृत विभाग (http//:sanskrit.du.ac.in) दिल्ली विश्वविद्यालय पर सभी के उपयोग के लिए उपलब्ध है।

वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का परिचय

जैसाकि पहले बताया जा चुका है यह अनुक्रमणिका तन्त्र संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय पर उपलब्ध है। इस वेबसाइट को खोलने पर चित्र सङ्ख्या 1 में दिखाया गया प्रयोक्ता इन्टरफेस खुलता है। जिसमें पाठ टंकित करने के लिए एक पाठबॉक्स (Text Box) दिया गया है तथा साथ ही साथ ऋग्वैदिक मन्त्रों की अन्य प्रकार से खोज करने के लिए उपलब्ध 5 पद्धतियों पेज के मध्य में दिया गया है। जिनकी सहायता से मन्त्र सूचना के लिए उपलब्ध देवता का नाम, देवतागण, देवता युग्म, मण्डल क्रम तथा अकारादिक्रम से वर्णमाला का पाठ बॉक्स में टंकित किए बिना ही यहाँ से चुनाव किया जा सकता है। मन्त्र का नाम टंकित करने के बाद या किसी भी सूची से चुनने के बाद प्रयोक्ता को नीचे दिए गए **"ऋग्वेद में खोज के लिये यहाँ क्लिक करें"** बटन पर क्लिक करने पर प्रयोक्ता द्वारा टंकित या चुने गए मन्त्र की अनुक्रमणिका सूची जो चार प्रकारों (सम्पूर्ण शब्द के द्वारा खोज, इन्पुट अक्षर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों द्वारा खोज, इन्पुट अक्षर से अन्त होने वाले शब्दों द्वारा खोज तथा इन्पुट अक्षर के मध्य में आने वाले शब्दों द्वारा खोज) पर आधारित होती है इसी पेज पर नीचे प्राप्त होती है। इस अनुक्रमणिका सूची में मन्त्र के लिन्क को खोलने पर क्रम सङ्ख्या, स्वर सहित संहिता पाठ, स्वरबिना संहितापाठ, मण्डल क्रम, अष्टक क्रम, पदपाठ, ऋषि, देवता, छन्द, स्वर तथा हिन्दी अनुवाद प्राप्त होता है।

वेब आधारित अनुक्रमणिका प्रणाली के उपयोग

वेब आधारित अनुक्रमणिका प्रणाली किसी भी खोज तन्त्र का मूलतत्त्व है। वर्ल्ड वाइड वेब (www) का सुव्यवस्थित ढंग से संचालन करता है उसे औटोमैटिक इन्डैक्सर[4] (स्वचालित अनुक्रमणिका प्रणाली) कहा जाता है। वेब क्रॉलर एक इन्टरनेट बॉट (स्वचालित प्रोग्राम) है। तात्कालिक परिणाम देने के लिए क्रॉलर खोजे गए वेब पृष्ठों तथा सूचीबद्ध किए गए पृष्ठों की प्रतिलिपि बनाता है। संस्कृत के क्षेत्र में अनुक्रमणिका प्रणाली का प्रयोग विविध प्रकार के एन. एल.

[4] https://en.wikipedia.org/wiki/Web_crawler

पी. एप्लीकेशन (नेशनल लैंग्वेग प्रोसेसिंग) बनाने में होता है जैसे कि संस्कृत वर्ल्डनेट, शब्दकोश, संस्कृत इण्डीयन लैंग्वेज मशीन ट्रांस्लेशन सिस्टम (एमटीएस), ऑनलाइन इण्डैक्सिंग ऑफ महाभारत इत्यादि । प्रस्तुत अनुसंधान संस्कृत की एन. एल. प्रणाली में एक महत्त्वपूर्ण संसाधन होने के अतिरिक्त ऋग्वेद की ऋचाओं में स्थित प्रामाणिक, निर्देशात्मक और तात्कालिक सांदर्भिक ज्ञान हेतु भी आवश्यक सिद्ध हो सकता है । यह तन्त्र ऐतिहासिक, सामाजिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, भौगोलिक, भाषावैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक शोधों के तात्कालिक तथ्य उपलब्ध कराने में भी अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है जिसे ऋग्वेद के अतिविस्तृत पाठ में से आसानी से प्राप्त नहीं किया जा सकता है ।

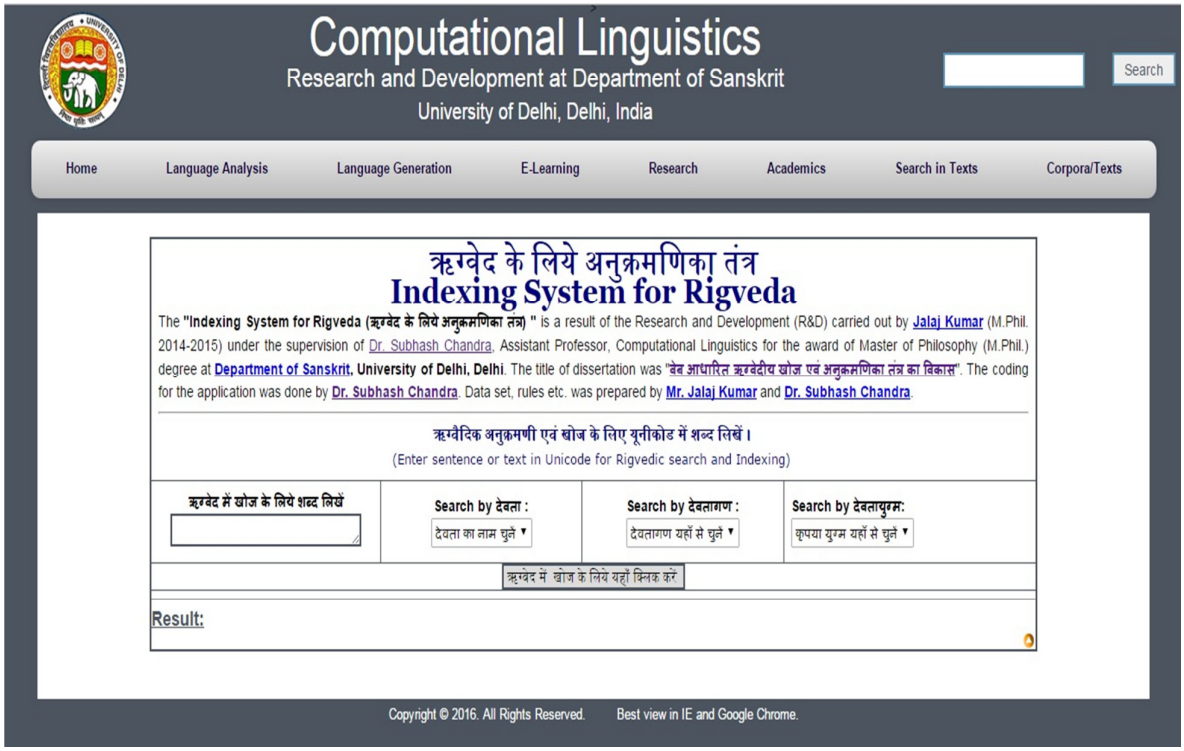

चित्र 1: वेब आधारित ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तंत्र का इण्टरफेस

(User Interface for Rigvedic Indexing System)

लघु शोध प्रबन्ध का संक्षिप्त परिचय

इस शोध प्रबन्ध में कुल पाँच अध्याय है तथा अन्त में निष्कर्ष एवं भावी अनुसंधान के विषय में बताया गया है। प्रत्येक अध्याय का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है-

प्रथम अध्याय: "वेदों का सामान्य परिचय एवं ऋग्वेद की संरचना" नामक इस अध्याय में वैदिक संहिताओं का सामान्य परिचय दिया गया है । सामान्य परिचय के अन्तर्गत उनकी शाखाएँ, विभाजन तथा उनसे सम्बन्धित ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, श्रौत-सूत्रों की भी जानकारी प्रस्तुत की गई है। वैदिक संहिताओं से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण भाष्य तथा उनके किसी महत्त्वपूर्ण अंश पर भी जो भाष्य प्राप्त हुए हैं उन्हें उनके वर्ष के साथ क्रमशः प्रस्तुत किया गया है। ऋग्वेद का विस्तृत परिचय देते हुए इसकी संरचना तथा ऋग्वेद के समीक्षात्मक संस्करण को कैसे, किसने तथा कहाँ-कहाँ इसकी रचना की गई इसका भी वर्णन किया गया है। ऋग्वेद की शाखाएँ, विभाजन, देवता, ऋषि, छन्द, वर्ण्य-विषय इत्यादि की जानकारी देते हुए ऋग्वेद के महत्त्व को प्रतिपादित किया है।

द्वितीय अध्याय: दूसरा अध्याय "अनुक्रमणिका एवं वैदिक अनुक्रमणिकाओं का संक्षिप्त परिचय" है जिसमें अनुक्रमणिका का संक्षिप्त परिचय, इतिहास तथा इसके प्रकारों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए इसके महत्त्व को दर्शाया गया है। वेदों के संरक्षण के लिए उपयोगी प्राचीन काल में प्रयुक्त अनुक्रमणी साहित्य तथा अनुक्रमणियों का परिचय देते हुए उनके महत्त्व को भी प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय: तृतीय अध्याय "ऑनलाइन अनुक्रमणिका का संक्षिप्त परिचय एवं अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण" नामक इस अध्याय में ऑनलाइन अनुक्रमणिका, ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका, मुद्रित अनुक्रमणिका का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी आवश्यकता तथा उनके भेदों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। संस्कृत ग्रन्थों से सम्बन्धित मुद्रित (वैदिक संहिताओं तथा कोषों) तथा वेब आधारित अनुक्रमणिकाओं के कार्यों का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय: चतुर्थ अध्याय का नाम "ऋग्वैदिक ई-पाठ तथा अनुक्रमणिका तन्त्र विकास के संगणकीय पक्ष" है । इस अध्याय में ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तन्त्र की संरचना के अन्तर्गत पाइथॉन सर्वर पेजेज, स्पाइसी वेब सर्वर, डेटाबेस एवं टेक्स्ट फाइल, ऋग्वैदिक अनुक्रमणिका तन्त्र

के घटक (पूर्व प्रकिया, ऋग्वेद अनुक्रमणीकार (खोज की 4 पद्धतियाँ), आउटपुट जनरेटर, मन्त्र डेटाबेस) की व्याख्या चित्रों तथा तालिकाओं के दर्शाते हुए की गई है । सम्पूर्ण अध्याय में वेब आधारित ऋग्वेदीय अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास, उसका संकेतीकरण, उसका मैकेनिज्म, खोज करने के प्रकार, मन्त्र डेटाबेस, परिणाम तथा सिस्टम कार्य किस प्रकार करता है इसको चित्र एवं तालिकाओं के माध्यम से भी दर्शाया गया है ।

पंचम अध्याय: "वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का परिचय" नामक पंचम अध्याय में अनुक्रमणिका तन्त्र के इन्पुट मकैनिज्म में सम्मिलित पाठबॉक्स, देवता नाम से खोज, देवतागण से खोज, देवता युग्म से खोज, मण्डल क्रम से खोज, ऋग्वेद में प्राप्त होने वाले शब्दों की अकारादि क्रम से खोज तथा सब्मिट बटन के प्रयोग के विषय में चित्रों के माध्यम से विस्तार से समझाया गया है । अन्त में तन्त्र के आउटपुट में परिणाम किस प्रकार प्राप्त होता है यह तालिका के माध्यम से दर्शाया गया है ।

प्रथम अध्याय
वेदों का सामान्य परिचय एवं ऋग्वेद की संरचना

वेद वैश्विक साहित्य के सर्वाधिक प्राचीनतम ग्रन्थों में से एक हैं। वेद शब्द के लिए संस्कृत व्याकरण में चार धातुओं का प्रयोग किया जाता है। जिनकें अर्थ भी भिन्न-भिन्न हैं। प्रथम धातु '*विद् सत्तायाम्*' जो कि दिवादिगण की है इसका अर्थ- 'होना' है। द्वितीय धातु '*विद् ज्ञाने*' जो अदादिगण की है जिसका अर्थ- 'जानना' है। तृतीय धातु '*विद् विचारणे*' जो रुधादिगण की है जिसका अर्थ- 'विचारना' है तथा चतुर्थ धातु '*विद्लृ लाभे*' जो तुदादिगण की है जिसका अर्थ- 'प्राप्त करना' है (गैरोला, 1960 तथा झा, 2004)। वेद शब्द ज्ञानार्थक विद् धातु (विद् ज्ञाने) से तद्धित घञ् (अ) प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ ज्ञान से लिया जाता है। इस प्रकार वेद शब्द का आशय ज्ञानराशि अथवा ज्ञान का भण्डार से लिया जा सकता है (Varadachari, 1960 तथा तिवारी, 2014)। हमारे प्राचीन ऋषियों द्वारा आर्ष दृष्टि से प्राप्त किए गए ज्ञान को वेद कहा जाता है। आचार्य सायण[5] (पाठक, 1960) ने वेद को परिभाषित करते हुए कहा है कि "जिस ग्रन्थ के द्वारा इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट निवारण का अलौकिक उपाय बताया जाता है उसे वेद कहते हैं" (शर्मा, 2010 तथा तिवारी, 2014)।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के रूप में वेदों की सङ्ख्या चार है। इनमें से सर्वाधिक प्राचीन ऋग्वेद को माना गया है। इन संहिताओं के मन्त्रों को तीन भागों में विभाजित करके इन्हें ऋक्, यजुष् तथा साम का नाम दिया गया। ऋग्वेद की ऋचाओं को पद्य[6] कहा गया है। इन पद्यों का गान करने से ही साम[7] अर्थात् सामवेद का प्रादुर्भाव हुआ है। इनके पश्चात् जो मन्त्र शेष रहे उन्हें यजुष्[8] अर्थात् यजुर्वेद का निर्माण हुआ होगा। गद्यों से युक्त मन्त्रों को यजुष् कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि सर्वप्रथम ये तीन वेद ही संहिताओं से युक्त हुए थे। जो वेदत्रयी नाम

---

[5] "इष्टप्राप्त्यनिष्ट परिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति, स वेदः।।" (ऋ. भू.)।

[6] तेषामृग् यत्रार्थवशेन पादव्यवस्था (जै. सू. 2.1.35)।

[7] गीतिषु सामाख्या (जै. सू. 2.1.36)।

[8] शेषे यजुः शब्दः (जै. सू. 2.1.37)।

से प्रसिद्ध हैं। त्रयी का अर्थ पद्य, गान और गद्य होता है (शास्त्री, 1972; शर्मा, 2010 तथा गुप्ता, 2011)।

ऋग्वेद के मन्त्रों में देवताओं के लिए प्रयुक्त प्रार्थनाओं, सृष्टि विद्या तथा उसमें प्रतिपादित विज्ञान को संकलित किया गया है। यजुर्वेद में मन्त्रों को कर्मकाण्ड हेतु एकत्रित किया गया है। सामवेदीय मन्त्रों के द्वारा भी गान पद्धति से देवताओं से प्रार्थनाएँ की जाती हैं (शास्त्री, 2009)। ज्ञान तथा विचारों को एकत्रित करना ऋग्वेद का विषय है। चिन्तन, कर्मपक्ष, कर्मकाण्ड तथा संकल्प का संग्रह यजुर्वेद का विषय है। आन्तरिक ऊर्जा, संगीत तथा समन्वय का संकलन करना सामवेद का विषय है (द्विवेदी, 2010)। अथर्वा ऋषि ने रहस्यात्मक कार्यों को अथर्ववेद में संयोजित किया है। प्राचीन काल से यह प्रचलित है कि छन्द, गान और गद्य तीनों विद्याएँ चारों वेदों में स्थापित हैं। इस प्रकार त्रयी चारों वेदों को माना जाता है तथा सभी वेद एक ही काल के हैं (शास्त्री, 2009)। प्राचीन काल में गुरुमुख उच्चारण से पठन-पाठन होने के कारण गुरु अपने शिष्यों को वेद मन्त्रों का गान करवाकर उन्हें कण्ठस्थ करवाया करते थे जिस कारण वेदों का दूसरा नाम श्रुति पड़ा (शास्त्री एवं पाण्डेय, 2031 वि.सं.; द्विवेदी, 2010 तथा तिवारी, 2014)। इसी प्रकार वेदों के लिए निगम, आगम, त्रयी, छन्दस्, आम्नाय, स्वाध्याय इन शब्दों का भी प्रयोग प्राप्त होता है (द्विवेदी, 2010)।

यज्ञीय कर्मकाण्डों में चारों वेदों ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद के लिए चार ऋत्विज् क्रमशः होता, उद्गाता, अध्वर्यु तथा ब्रह्मा होते हैं जो वैदिक मन्त्रों के प्रतिनिधी कहलाते हैं तथा यज्ञों में मन्त्रों का पाठ और यज्ञ से जुड़े कार्यों को भी करते हैं (उपाध्याय, 2006)। ऋत्विजों के कर्त्तव्यों को ऋग्वेद[9] (सातवलेकर, 1967) में प्रदर्शित किया गया है। होता का कार्य यज्ञ में ऋग्वेद की ऋचाओं का गान करना है, उद्गाता यज्ञ में साम मन्त्रों के गान द्वारा देवस्तुति करता है,

[9] ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान् गायत्रं त्वो गायति शक्करिषु।
ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उ त्वः॥ (ऋ. 10.71.11)।

अध्वर्यु यज्ञ में विभिन्न क्रियाओं को करता है तथा ब्रह्मा को यज्ञ का निदेशक कहा जाता है (शर्मा, 2010)।

1. वैदिक वाङ्मय का स्वरूप

आपस्तम्ब श्रौतसूत्र (गर्बे, 1983) के अनुसार 'वेद के अन्तर्गत मन्त्र और ब्राह्मण ग्रन्थ निहित हैं'[10] (Chakravorti, 1978 तथा तिवारी, 2014)। मन्त्र (संहिता ग्रन्थ) द्वारा यज्ञों में मन्त्रों का पाठ करके देवताओं से प्रार्थनाएँ की जाती हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों के द्वारा यज्ञीय कार्यों तथा उनके अभिप्रायों का विवेचन प्रस्तुत किया जाता है। ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थों के अन्तर्गत ही आते हैं। प्राचीन काल से ही मन्त्र (संहिता), ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् को वेद का ही भाग स्वीकार किया गया है (शास्त्री एवं पाण्डेय, 1994 तथा द्विवेदी, 2010)। किन्तु विद्वानों में मत वैभिन्यता सर्वदा दृष्टिगोचर होती है यथा मीमांसा दर्शन ब्राह्मण भाग को वेद मानता है, वेदान्त दर्शन उपनिषद् भाग को वेद मानता है तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती और पाश्चात्त्य विद्वानों ने मन्त्र भाग को वेद माना है। लेकिन अलग-अलग मत वाले विद्वान् इन चारों खण्डों के समावेश को वैदिक वाङ्मय मानते हैं (शर्मा, 2010 तथा तिवारी, 2014)।

2. वैदिक संहिताओं का परिचय

वैदिक मन्त्रों के संग्रह को संहिता कहते हैं (शास्त्री, 1972 तथा शास्त्रिदातारः, 1989)। पाणिनि ने "वर्णों के परस्पर सान्निध्य को संहिता कहा है[11]" (जिज्ञासु, 1964)। संहिता में सन्धि युक्त मन्त्रों का संकलन किया गया है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद इन चारों को वैदिक संहिता कहा जाता है। श्रीमद्भागवत पुराण[12] (स्वामि, 1983) के अनुसार कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास

---

[10] मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्। (आ. श्रौ.)।

[11] परः सन्निकर्षः संहिता। (अ. 1/4/108)।

[12] तदृग्वेदधरः पैलः सामगो जैमिनिः कविः।
वैशम्पायन एवैको निष्णातो यजुषामुत।
अथर्वाङ्गिरसामासीत्सुमन्तुर्दारुणो मुनिः॥ (श्रीमद्भा. पु. 1.4.21-22)।

ने मूल वेद को चार भागों में विभाजित करके अपने चार शिष्यों को पढ़ाया था। मूल वेद में से ऋग्वेद पैल ऋषि को, यजुर्वेद वैशम्पायन ऋषि को, सामवेद जैमिनी ऋषि को तथा अथर्ववेद सुमन्तु ऋषि को पढ़ाया था (उपाध्याय, 2006 तथा सिंह, 1999)। श्रीमद्भागवत पुराण[13] (स्वामि, 1983) के श्लोक में ही वर्णन आया है कि मनुष्य की बुद्धि के क्षीण होने के कारण वेदव्यास के शिष्यों ने अपने वेद को अनेक शाखाओं में अपने शिष्यों को प्रदान किया था (सिंह, 1999)।

2.1. ऋग्वेद संहिता

ऋग्वेद संहिता को चारों वेदों में सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना गया है। महर्षि पतञ्जलिकृत महाभाष्य[14] (शास्त्री, 1938) में 'ऋग्वेद संहिता की 21 शाखाओं' का वर्णन किया गया है। इसकी पाँच प्रमुख शाखाएँ थीं- शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन तथा माण्डूकायन। वर्तमान में शाकल तथा शांखायन शाखाएँ ही प्राप्त होती हैं। महर्षि शौनक ने शौनकीय-अनुक्रमणी श्लोक 43 में ऋग्वेद संहिता के 10580 मन्त्र, 153826 शब्द तथा 432000 अक्षर कहे हैं। ऋग्वेद के मन्त्रों की सङ्ख्या विद्वानों ने 10467 से 10589 तक मानी है। किन्तु अन्तिम सङ्ख्या महर्षि दयानन्द ने निर्धारित की है जो मन्त्रों की गिनती करने पर सही निकलती है। अतः ऋग्वेद में 10552 मन्त्र हैं (सेन, 1983 तथा उपाध्याय, 2006)। इसका विभाजन अष्टक क्रम तथा मण्डल क्रम के माध्यम से दो प्रकारों से किया जाता है। ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद माना जाता है (द्विवेदी, 2010 तथा शर्मा, 2010)। ऋग्वेद के विषय में विस्तार से आगे चर्चा की गयी है।

2.2. यजुर्वेद संहिता

यजुर्वेद संहिता शुक्ल तथा कृष्ण के भेद से दो प्रकार की मानी जाती है (Varadachari, 1960 तथा तिवारी, 2014)। वैदिक साहित्य में प्राप्त वर्णनों के अनुसार यजुर्वेद की 100 या 101

---

[13] त एत ऋषयो वेदं स्वं स्वं व्यस्यनेकधा। शिष्यैः प्रशिष्यैस्तच्छिष्यैर्वेदास्ते शाखिनोऽभवन्॥ (श्रीमद्भा. पु. 1.4.23)। त एव वेदादुर्मेधैर्धार्यन्ते पुरुषैर्यथा। एवं चकार भगवान्व्यासः कृपणवत्सलः॥ (श्रीमद्भा. पु. 1.4. 24)।

[14] एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्। (महा. आ. 1)।

शाखाएँ थीं । यह वर्णन महाभाष्य[15] (शास्त्री, 1938), षड्गुरुशिष्य की वृत्ति सर्वानुक्रमणी[16] (मैक्ड़ॉनल, 1886) तथा कूर्मपुराण[17] में मिलता है । चरणव्यूह (पाठक, 1888) में भी यजुर्वेद की 86 शाखाओं का वर्णन है जिसमें से चरकशाखा की 12, मैत्रायणी शाखा की 7, वाजस्नेयि शाखा की 17, तैत्तिरीय शाखा की 6 तथा कठ शाखा की 44 शाखाएँ हैं (उपाध्याय, 2006) । किन्तु वर्तमान में शुक्ल यजुर्वेद की केवल दो शाखाएँ तथा कृष्ण यजुर्वेद की चार शाखाएँ ही प्राप्त होती हैं (शास्त्रिदातारः, 1989) । इसके दो सम्प्रदाय प्राप्त होते हैं जिन्हें आदित्य तथा ब्रह्म सम्प्रदाय कहा जाता है । 'शुक्ल यजुर्वेद' आदित्य सम्प्रदाय का वेद है तथा 'कृष्ण यजुर्वेद' ब्रह्म सम्प्रदाय का वेद है (झा, 2004; शर्मा, 2010; द्विवेदी, 2010 तथा तिवारी, 2014) । शुक्ल यजुर्वेद में केवल मन्त्र ही हैं इसमें विनियोगो आदि का मिश्रण नहीं है । इसी शुक्लत्व के कारण इसे शुक्ल यजुर्वेद कहा जाता है[18] (झा, 2004; शर्मा, 2010 तथा तिवारी, 2014) । कृष्ण यजुर्वेद की संहिताओं में मन्त्रों के साथ-साथ उनकी व्याख्या, विनियोग तथा अन्य विवरण भी मिश्रित हैं । इन मिश्रणों के कारण ही इसे कृष्ण कहा जाता है[19] (झा, 2004 तथा तिवारी, 2014) । यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है (Chakravorti, 1978) ।

2.2.1. शुक्ल यजुर्वेद संहिता- शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं- माध्यन्दिन या वाजस्नेयि तथा काण्व । जिनमें से प्रत्येक शाखाओं की माध्यन्दिन तथा काण्व संहिता नाम से एक-एक संहिताएँ प्राप्त होती है । माध्यन्दिन संहिता का विभाजन अध्याय और मन्त्र के रूप में किया गया है जिनमें कुल 40 अध्याय हैं तथा इन सभी अध्यायों में कुल 1975 मन्त्र प्राप्त होते हैं । काण्व संहिता का विभाजन अध्याय, अनुवाक और मन्त्र के माध्यम से होता है । इसमें कुल 40 अध्याय, 328 अनुवाक तथा कुल मिलाकर 2086 मन्त्र हैं (शास्त्री एवं पाण्डेय, 1994 तथा झा, 2004) । शुक्ल यजुर्वेद का

---

[15] एकशतमध्वर्युशाखाः । (महा. आ. 1) ।

[16] यजुरेकशताध्वकम् । (षड्गुरुशिष्य, सर्वा.) ।

[17] शाखानां तु शतेनाथ यजुर्वेदमथाकरोत् । (कू. पु. 49/51) ।

[18] विनियोगामिश्रितत्वं शुक्लत्वम् । (संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ 48) ।

[19] विनियोगामिश्रितत्वं कृष्णत्वम् । (संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृष्ठ 48) ।

ब्राह्मण शतपथ है (सहाय, 1978 तथा भारद्वाज एवं भारद्वाज, 1987) । इसका आरण्यक ग्रन्थ बृहदारण्यक है । उपनिषद् ग्रन्थों में ईशोपनिषद् तथा बृहदारण्यकोपनिषद् ही प्राप्त होते हैं तथा कल्पसूत्रों के अन्तर्गत श्रौतसूत्रों में कात्यायन श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्रों में पारस्कर गृह्यसूत्र तथा शुल्बसूत्रों में बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, कात्यायन, मैत्रायणीय, हिरण्यकेशी (सत्याषाढ़) तथा वाराह शुल्बसूत्र प्राप्त होते हैं (Chakravorti, 1978 तथा शास्त्रिदातारः, 1989) ।

2.2.2 कृष्ण यजुर्वेद संहिता- कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक तथा कपिष्ठल-कठ चार शाखाएँ हैं । तैत्तिरीय संहिता का विभाजन काण्ड, प्रपाठक, अनुवाक तथा मन्त्र के प्रकार से होता है। इसमें 7 काण्ड, 44 प्रपाठक, 631 अनुवाक तथा 2198 कण्डिका या मन्त्र हैं (झा, 2004; उपाध्याय, 2006 तथा शर्मा, 2010) । इस शाखा में संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, शुल्बसूत्र तथा धर्मसूत्र प्राप्त होते हैं । अतः यह एक मात्र शाखा है जिसके सारे ग्रन्थ प्राप्त होते हैं । आचार्य सायण ने सर्वप्रथम इसी शाखा पर अपना भाष्य लिखा था । मैत्रायणी संहिता में मन्त्र तथा व्याख्या मिश्रित है । इसका विभाजन काण्ड, प्रपाठक तथा मन्त्र के प्रकार से किया गया है । इस संहिता में 4 काण्ड, 54 प्रपाठक तथा 3144 मन्त्र दिए गए हैं । काठक संहिता का विभाजन खण्ड, उपखण्ड, अनुवाक तथा मन्त्र के प्रकार से किया जाता है । यह संहिता 5 खण्डों में विभक्त है जिसमें 13 उपखण्ड, 843 अनुवाक तथा 3091 मन्त्र हैं । कपिष्ठल-कठ संहिता का विभाजन ऋग्वेद के विभाजन क्रम अष्टक तथा अध्याय के समान प्राप्त होता है । इस संहिता में 6 अष्टकों में 48 अध्याय हैं । किन्तु इस संहिता के मध्य में 9 से 24, 32, 33 तथा 43 सङ्ख्या वाले अध्याय पूर्णतः खण्डित हैं (झा, 2004 तथा द्विवेदी, 2010) । तैत्तिरीय ब्राह्मण तथा तैत्तिरीय आरण्यक इस शाखा के एक-एक ब्राह्मण तथा आरण्यक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं । तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी तथा महानारायण नामक इसके पाँच उपनिषद् प्राप्त होते हैं । इसके कल्पसूत्रों के अन्तर्गत श्रौतसूत्रों में बौधायन, वाधूल, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, सत्याषाढ़, वाराह तथा वैखानस शामिल हैं । गृह्यसूत्रों में बौधायन, मानव, भारद्वाज, आपस्तम्ब, काठक, आग्निवेश्य, हिरण्यकेशी, वाराह, वैखानस, चारायणीय तथा बैजवाप शामिल हैं । शुल्बसूत्रों के अन्तर्गत

बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, कात्यायन, मैत्रायणीय, हिरण्यकेशी तथा वाराह आदि प्राप्त होते हैं (शास्त्री, 1972 तथा तिवारी, 2014)।

2.2.3 यजुर्वेद पर उपलब्ध भाष्य

यजुर्वेद पर उपलब्ध भाष्यों में सायण, दयानन्द, उव्वट-महीधर तथा सातवलेकर द्वारा रचित भाष्य प्रमुख हैं। यजुर्वेद पर अन्य भाषाओं में भी अनुवाद उपलब्ध होते हैं।

क्रं.	लेखक	अनुवाद भाषा	वर्ष
1.	माधव शास्त्री	संस्कृत	1915
2.	उवट भाष्य	संस्कृत	1929
3.	एन.एस.सोनटक्के तथा टी.एन. धर्माधिकारी	संस्कृत	1970
4.	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	हिन्दी	1970
5.	स्वामी दयानन्द	संस्कृत, हिन्दी	1973
6.	पं. सुदर्शन देव आचार्य	संस्कृत, हिन्दी	1974
7.	उव्वट-महीधर	संस्कृत	1978
8.	बी. आर. शर्मा	हिन्दी	1988
9.	पं. व्रज वल्लभ द्विवेदी	संस्कृत, हिन्दी	संवत् 2046
10.	स्वामी गोविन्दान्द वेदान्ताचार्य तथा प्रमाचार्य शास्त्री	हिन्दी	संवत् 2046
11.	Ralph T.H. Griffith	English	1990
12.	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य तथा भगवती देवी शर्मा	हिन्दी	1995

तालिका 1.1: यजुर्वेद पर उपलब्ध भाष्य

2.3. सामवेद संहिता

महर्षि पतञ्जलिकृत महाभाष्य[20] (शास्त्री, 1938) में तथा षड्गुरुशिष्य के चरणष्टक[21] में सामवेद की एक सहस्त्र शाखाओं का वर्णन है (द्विवेदी, 2010 तथा तिवारी, 2014)। लेकिन इन

[20] सहस्त्रवर्त्मा सामवेदः। (महा. आ. 1)।

[21] सहस्त्राध्वा सामवेदः। (षड्गुरुशिष्य, च. अ.)।

उदाहरणों में आए 'वर्त्मन्' तथा 'अध्वन्' शब्दों का तात्पर्य शाखा से नहीं है। इनका तात्पर्य गीति के एक सहस्त्र भेदों को दर्शाता है। इसका समर्थन सामवेद के एक मन्त्र[22] में प्राप्त होता है जिसमें 'सहस्त्रवर्तनि' शब्द का अर्थ 'सहस्त्र प्रकार से छन्दों को गाने वाला' किया गया है। मीमांसासूत्र[23] के भाष्य[24] में शबरस्वामी ने लिखा है कि 'सामवेद में सहस्त्रों प्रकार के गान की विधियाँ हैं'। इस वक्तव्य का समर्थन सामतर्पण[25] करता है जिसमें मात्र 13 सामवेदी आचार्यों का उल्लेख है। इससे ज्यादा आचार्यों का उल्लेख कहीं प्राप्त नहीं होता है। राणायन (राणायनि), शाट्यमुग्र्य (सात्यमुग्रि), व्यास, भागुरि, औलुण्डी, गौल्गुलवि, भानुमन् औपमन्यव, काराटि (दाराल), मशक गार्ग्य (गार्ग्य सावर्णि), वार्षगव्य (वार्षगण्य), कुथुम (कुथुमि, कौथुमि), शालिहोत्र तथा जैमिनि नामक 13 आचार्यों के नाम सामतर्पण में हैं। इन 13 आचार्यों के नाम प्रपञ्चहृदय, दिव्यावदान, चरणव्यूह तथा जैमिनि गृह्यसूत्रों में कुछ नाम भेदों के साथ प्राप्त होते हैं (द्विवेदी, 2010)। सामवेद की इन शाखाओं का उल्लेख भागवत, विष्णुपुराण तथा वायुपुराण में भी प्राप्त होता है। वर्तमान में सामवेद की 13 शाखाओं में कौथुमीय, राणायनीय तथा जैमिनीय तीन शाखाएँ ही प्राप्त हैं (गैरोला, 1960 तथा झा, 2004)।

कौथुमीय संहिता दो भागों में विभक्त है- पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक। इस शाखा में कुल 1875 मन्त्र हैं जिनमें से पूर्वार्चिक में 650 मन्त्र तथा उत्तरार्चिक में 1225 मन्त्र हैं। सामवेद के 1875 मन्त्रों में से ऋग्वेद के 1771 मन्त्र हैं तथा 104 मन्त्र ही केवल सामवेद के हैं। सामवेद की इस शाखा का प्रचलन हर स्थान पर है। राणायनीय संहिता में कौथुमीय शाखा की भांति ही 1875 मन्त्र प्राप्त होते हैं। कौथुमीय तथा राणायनीय शाखाओं में मात्र गणना पद्धति का ही अन्तर प्राप्त होता है। दोनों शाखाओं में मन्त्र तथा उनका क्रम यथास्थान है। इसका विभाजन प्रपाठक, अर्धप्रपाठक, दशति तथा मन्त्र के प्रकार से किया जाता है। जैमिनीय संहिता में कौथुमीय शाखा के

---

[22] युञ्जे वाचं शतपदीं गाये सहस्त्रवर्तनि। गायत्रं त्रैष्टुभं जगत्॥ (साम. म. स. 1829)।

[23] अर्थैकत्वाद् विकल्पः स्यात्। (मी. सू. 1.2.1.29)।

[24] सामवेदे सन्ति सहस्त्रं गीत्युपायाः। (मी. सू. 1.2.1.29 पर श. भा.)।

[25] राणायन-शाट्यमुग्र्य-व्यास-भागुरि-औलुण्डी-गैल्गुलवि-भानुमानौपमन्यव-काराटि-मशकगार्ग्य-वार्षगव्य-कुथुम-स्हालिहोत्र-जैमिनि-त्रयोदशैते मे सामगाचार्याः स्वस्ति कुर्वन्तु तर्पिताः। (सा. त.)।

1875 मन्त्र की अपेक्षा 1667 मन्त्र प्राप्त होते हैं। कौथुमीय शाखा से 188 मन्त्र इस संहिता में कम प्राप्त होते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में कौथुमीय शाखा के तांड्य महाब्राह्मण, षड्विंश ब्राह्मण, सामविधान, आर्षेय, मन्त्र, देवताध्याय, वंश और संहितोपनिषद् ब्राह्मण तथा जैमिनीय शाखा के जैमिनीय, जैमिनीय तवलकार तथा जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण प्राप्त होते हैं (Chakravorti, 1978 तथा उपाध्याय, 2006)। आरण्यकों में केवल एक तवलकार आरण्यक प्राप्त होता है। उपनिषदों में छान्दोग्य तथा केन उपनिषद् प्राप्त होते हैं। कल्पसूत्रों के अन्तर्गत श्रौतसूत्रों में आर्षेय कल्पसूत्र, क्षुद्र कल्पसूत्र, जैमिनीय श्रौतसूत्र, लाट्यायन श्रौतसूत्र, द्राह्यायण श्रौतसूत्र, निदान सूत्र तथा उपनिदान सूत्र प्राप्त होते हैं। गृह्यसूत्रों में गोभिल, कौथुम, खादिर, द्राह्यायण तथा जैमिनीय गृह्यसूत्र प्राप्त होते हैं (शास्त्री, 1972 तथा तिवारी, 2014)। सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद है (Chakravorti, 1978)।

2.3.1. पूर्वार्चिक भाग- पूर्वार्चिक कौथुमीय संहिता का पूर्व भाग है। इसमें 4 काण्ड हैं जिनको 6 अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसका विभाजन काण्ड, अध्याय, खण्ड तथा मन्त्र के प्रकार से किया गया है। पूर्वार्चिक के 4 काण्डों में 6 अध्याय, 40 खण्ड तथा 650 मन्त्र हैं। आग्नेय, ऐन्द्र, पवमान तथा आरण्य नामक 4 काण्ड तथा महानाम्नी आर्चिक परिशिष्ट के रूप में है। आग्नेय काण्ड के 1 अध्याय में 12 खण्ड तथा 114 मन्त्र हैं। ऐन्द्र काण्ड के 2-4 अध्यायों में 12 खण्ड तथा 352 मन्त्र हैं। पावमान काण्ड के 5 अध्याय में 11 खण्ड तथा 119 मन्त्र हैं। आरण्य काण्ड के 6 अध्याय में 5 खण्ड तथा 55 मन्त्र हैं। अन्त में परिशिष्ट रूपी महानाम्नी आर्चिक में 10 मन्त्र हैं (झा, 2004; द्विवेदी, 2010 तथा शर्मा, 2010)।

2.3.2. उत्तरार्चिक भाग- उत्तरार्चिक कौथुमीय संहिता का उत्तर भाग है। इसका विभाजन अध्याय या प्रपाठक, सूक्त तथा मन्त्र के प्रकार से किया गया है। इस भाग में 21 अध्याय या 9 प्रपाठक, 400 सूक्त तथा 1225 मन्त्र हैं (झा, 2004; उपाध्याय, 2006; द्विवेदी, 2010; शर्मा, 2010 तथा तिवारी, 2014)। इसमें तीन प्रकार के मन्त्रों का समूह प्राप्त होता है। प्रथम समूह में 267 सूक्त हैं

जिनमें प्रत्येक में 3-3 मन्त्र हैं। द्वितीय समूह में 66 सूक्त हैं जिनमें प्रत्येक में 2-2 मन्त्र प्राप्त होते हैं। तृतीय समूह में बचे हुए 47 सूक्त हैं जिनमें 1-12 मन्त्रों तक के समूह हैं (द्विवेदी, 2010 तथा शर्मा, 2010)।

2.3.3. सामवेद पर उपलब्ध भाष्य

सामवेद पर उपलब्ध भाष्यों में सायण भाष्य, सातवलेकर तथा श्रीराम शर्मा के भाष्य प्रमुख हैं। सामवेद के भाष्यों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी प्राप्त होते हैं।

क्रं.	लेखक	अनुवाद भाषा	वर्ष
1.	जीवानन्द सागर	संस्कृत, हिन्दी	1892
2.	थ्योड़र बेनफे	अंग्रेजी	1898
3.	Ralph T. H. Griffith	English	1893
4.	वीरेन्द्र शास्त्री	हिन्दी	1950
5.	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	हिन्दी	1963
6.	Devi Chand	English	1981
7.	विश्वनाथ शर्मा तथा रामचन्द्र शर्मा	हिन्दी	1983
8.	सत्यव्रत सामश्रमी	बंगला	1983
9.	पं. विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड	हिन्दी	संवत् 2033
10.	रामस्वरूप शर्मा गौडः	हिन्दी	1989
11.	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य तथा भगवती देवी शर्मा	हिन्दी	1995
12.	रवि प्रकाश आर्य	अंग्रेजी	2001

तालिका 1.2: सामवेद पर उपलब्ध भाष्य

2.4. अथर्ववेद संहिता

महर्षि पतञ्जलिकृत महाभाष्य[26] (शास्त्री, 1938) में अथर्ववेद की नौ शाखाओं का वर्णन किया गया है। इन शाखाओं के नाम पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श तथा चारणवैद्य थे। अथर्ववेद संहिता की शौनकीय तथा पैप्पलाद दो शाखाएँ हैं। शौनक

[26] नवधाऽऽथर्वणो वेदः। (महा. आ. 1)।

संहिता का विभाजन काण्ड, सूक्त और मन्त्र के प्रकार से किया जाता है। इसमें कुल 20 काण्ड, 730 सूक्त तथा 5987 मन्त्र हैं (गैरोला, 1960; शास्त्री, 1972; तथा तिवारी, 2014)। इस संहिता में यजुर्वेद के समान ही गद्य भाग में कुल 50 से अधिक सूक्त प्राप्त होते हैं जो संहिता का षष्ठांश (1/6) है। पैप्पलाद संहिता वर्तमान में पूर्ण उपलब्ध नहीं है किन्तु इसके ब्राह्मण ग्रन्थों में गोपथ ब्राह्मण उपलब्ध होता है (गैरोला, 1960; शास्त्री एवं पाण्डेय, 1994; शर्मा, 2010 तथा द्विवेदी, 2010)। इस संहिता से सम्बन्धित कोई भी आरण्यक ग्रन्थ नहीं है। उपनिषद् ग्रन्थों में प्रश्न, मुण्डक तथा माण्डूक्य उपनिषद् ग्रन्थ हैं। कल्पसूत्रों के अन्तर्गत श्रौतसूत्रों में वैतान श्रौतसूत्र तथा गृह्यसूत्रों में कौशिक गृह्यसूत्र मिलते हैं (भारद्वाज एवं भारद्वाज, 1987 तथा शास्त्रिदातारः, 1989)। अथर्ववेद के उपवेदों में इतिहास, पुराण, सर्पवेद, पिशाचवेद तथा असुरवेद हैं (Varadachari, 1960)।

क्रं.	लेखक	अनुवाद भाषा	वर्ष
1.	विश्वबन्धु	संस्कृत, हिन्दी	1960
2.	दुर्गा मोहन भट्टाचार्य	हिन्दी	1964
3.	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	हिन्दी	1965
4.	विश्वनाथ विद्यालंकार	हिन्दी	1975
5.	Raghunath	Atharvaveda of the Paiplaad	1976
6.	श्रीकान्त शास्त्री	हिन्दी	आग्रहायण 2031
7.	William Dwight Whitney	English	1987
8.	जयदेव वर्मा	हिन्दी	वि. सं. 1987
9.	शंकर पांडुरंग	संस्कृत, हिन्दी	1989
10.	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य तथा भगवती देवी शर्मा	हिन्दी	1995
11.	Ralph T. H. Griffith	English	1998
12.	के. एल. जोशी	अंग्रेजी	2000

तालिका 1.3: अथर्ववेद पर उपलब्ध भाष्य

2.4.1. अथर्ववेद पर उपलब्ध भाष्य

अथर्ववेद पर उपलब्ध भाष्यों में विश्वबन्धु द्वारा प्रस्तुत स्कन्दस्वामी का भाष्य, सायण तथा सातवलेकर आदि विद्वानों के भाष्य प्रमुख हैं। अथर्ववेद के भाष्यों पर विद्वानों ने अन्य भाषाओं में अनुवाद भी किए हैं। इसकी सूची तालिका संख्या 1.3 में दी गई है।

2.4.2. अथर्ववेदीय महत्त्वपूर्ण अंशों पर भाष्य

कुछ विद्वानों ने पूर्ण संहिता पर भाष्य न प्रस्तुत करके किसी भी वेद की संहिता के अंश पर भाष्य लिखा है। यह अंश उन लेखकों के द्वारा महत्त्वपूर्ण भी हो सकता है अथवा समयाभाव में या केवल अपने प्रिय अंश पर उन्होंने भाष्य प्रस्तुत किया होगा। इन भाष्यों के नाम एकत्रित कर इन्हें तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसकी सूची तालिका संख्या 1.4 में दी गई है।

क्रं.	लेखक	पुस्तक	वर्ष
1.	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	अथर्ववेद ब्रह्मविद्या प्रकरण	1962
2.	डॉ. सूर्यकान्त	अथर्ववेद एवं गोपथ ब्राह्मण	1964
3.	श्रीराम शर्मा आचार्य तथा भगवती देवी शर्मा	अथर्ववेद	1972
4.	Raghuveer	Athervaved of the paiplaad	1976
5.	भगवद्दत्त	अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका	1985
6.	डॉ. सुदेश नारंग	अथर्ववेद पृथिवी सूक्त	1992

तालिका 1.4: अथर्ववेदीय महत्त्वपूर्ण अंशों पर भाष्य

3. ऋग्वेद की संरचना

ऋग्वेद वैदिक साहित्य का अद्वितीय ग्रन्थ है जिसकी महत्त्व सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में अवर्णनीय है। इसके मन्त्रों में वर्णित अनेकों उद्घाटित तथा दबे हुए रहस्य हैं। इसके निश्चित काल के विषय में भी अभी तक किसी भी प्रकार के ऐसे प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं जो सर्वमान्य हों।

3.1. ऋग्वेद संहिता

ऋग्वेद संहिता को विश्व में वर्तमान समय में अभी तक की उपलब्ध रचनाओं में विभिन्न दृष्टियों से प्रथम रचना का स्थान प्राप्त है। ऋग्वेद का महत्त्व वैदिक साहित्य में अद्वितीय है। ऋग्वेद के मन्त्रों को ऋचा, ऋच् या ऋक् (ऋच्यते स्तूयते अनया इति ऋक्) कहा जाता है जिनसे विभिन्न देवों की स्तुति की जाती है। इन ऋचाओं के गान से देवों का आह्वान किया जाता है (सहाय, 1978 तथा शर्मा, 2010)। ऐसी ऋचाओं के संग्रह के कारण इसे ऋग्वेद संहिता कहते हैं। इसके मन्त्र द्रष्टा अग्नि ऋषि कहे जाते हैं (द्विवेदी, 2010)। ऋग्वेद में दश मण्डलों का समावेश होने के कारण इसे दशतयी भी कहा जाता है (गैरोला, 1960)।

3.2. ऋग्वेद की शाखाएँ

महर्षि पतञ्जलि द्वारा रचित महाभाष्य[27] (शास्त्री, 1938) में ऋग्वेद की 21 शाखाओं का वर्णन प्राप्त होता है। चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की मुख्य 5 शाखाओं के नाम शाकल (ऐतरेय), बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन और माण्डूकायन प्राप्त होते हैं। इन संहिताओं में से केवल शाकल तथा शांखायन शाखा की ही संहिताएँ प्राप्त होती हैं अन्य तीनों संहिताओं के केवल नाम शेष हैं। ब्राह्मण तथा आरण्यक ग्रन्थों में ऐतरेय और शांखायन (कौषितकि) शाखा के ही ब्राह्मण और आरण्यक प्राप्त होते हैं। उपनिषदों में ऐतरेय, कौषीतकि एवं बाष्कल शाखा के उपनिषद् ही प्राप्त होते हैं। कल्पसूत्रों में आश्वलायन शाखा एवं शांखायन के श्रौतसूत्र प्राप्त होते हैं। आश्वलायन, शांखायन एवं कौषीतकि (शाम्बव्य) के मात्र गृह्यसूत्र ही प्राप्त होते हैं (शास्त्री, 1972 तथा शास्त्री, 2009)। शौनक, भारवीय, शाकल्य, पैंगि, पराशर, बह्वृच तथा ऐतरेय के गृह्यसूत्र अभी तक अप्रकाशित हैं (द्विवेदी, 2010)।

[27] एकविंशतिधा बाह्वृच्यम्। (महा. आ. 1)।

3.3. ऋग्वेद का विभाजन

ऋग्वेद संहिता का विभाजन अष्टक तथा मण्डल इन दो प्रकार के क्रमों के अनुसार किया जाता है (सातवलेकर, 1967 तथा झा, 2004)।

3.3.1. अष्टक क्रम

अष्टकों में विभाजित होने के कारण इसे अष्टक क्रम कहा जाता है। अष्टक का अर्थ यहाँ आठ से लिया जाता है क्योंकि इस क्रम में सम्पूर्ण ऋग्वेद को आठ भागों में एक समान विभाजित किया गया है। इसमें कुल आठ अष्टक हैं तथा 8 x 8 = 64 अध्याय हैं। इसके हर अध्याय में वर्गों की सङ्ख्या 25-49 प्राप्त होती है। वर्गों की सङ्ख्या 221-313 तक अष्टकों में मिलती है। हर एक वर्ग में करीब 5 मन्त्र प्राप्त होते हैं। इसमें बालखिल्य सूक्तों को जोड़ने से यह सङ्ख्या प्राप्त होती है (द्विवेदी, 2010)। इस क्रम में कुल 8 अष्टक, 64 अध्याय, 2,024 वर्ग तथा 10,552 मन्त्र एकत्रित हैं (शास्त्री, 1972 तथा तिवारी, 2014)। यह विभाजन क्रम सङ्ख्या तथा गणना की दृष्टि से सुंदर है तथा यज्ञ में ऋग्वेद का पारायण करने के लिए किया गया था। इसमें ऋषि या देवता की समरूपता का ध्यान न रखते हुए आकृति की दृष्टि से तैयार किया गया है। इस विभाजन क्रम का प्रयोग सम्भवतः कम ही किया जाता है (शर्मा, 2010)। जैसे– ऋचां त्वा पोषमास्ते पुपुष्वान्। (ऋ. अष्टक क्रम 8/2/24/6)।

3.3.2. मण्डल क्रम

मण्डलों में विभाजन होने के कारण इस विभाजन को मण्डल क्रम कहा जाता है। इसमें कुल 10 मण्डल, 1028 सूक्त तथा 10,552 मन्त्र हैं (सातवलेकर, 1967 तथा शास्त्री, 2009)। इसमें सूक्तों का विभाजन देवताओं के आधार पर किया गया है। सभी मण्डलों में सूक्त तथा मन्त्र सङ्ख्या एक समान नहीं हैं। कुछ मण्डल आकार में छोटे हैं तथा कुछ मण्डल आकार में बड़े हैं। विद्वानों द्वारा इस क्रम का प्रयोग अधिक किया जाता है क्योंकि यह अधिक प्रचलित एवं उचित है। ऋग्वेद के मन्त्रों की सङ्ख्या बताने के लिए मण्डल/सूक्त/मन्त्र में सङ्ख्या को विभाजित किया जाता है

(शर्मा, 2010 तथा द्विवेदी, 2010) । जैसे– ऋचां त्वा पोषमास्ते पुपुष्वान् । (ऋ. मण्डल क्रम 10.71.11)

उक्त उदाहरणों के द्वारा समझा जा सकता है कि ऋग्वेद संहिता का विभाजन दो प्रकार से प्राप्त होता है किन्तु मन्त्र प्रारम्भ से अन्त तक संहिता में उसी स्थान पर होते हैं। ये दोनों प्रकार के विभाजन केवल मन्त्रों की गणना करने के तरीके हैं।

3.4. ऋग्वेद का स्वरूप

ऋग्वेद की शाकल शाखा में 10 मण्डल, 1017 सूक्त तथा 10472 मन्त्र हैं। अष्टम मण्डल में 48$^{वें}$ सूक्त के बाद 59$^{वें}$ सूक्त तक 11 बालखिल्य सूक्त शाकल शाखा में जोड़े गए हैं। इनकी मन्त्र सङ्ख्या 80 है (उपाध्याय, 1996 तथा द्विवेदी, 2010) । ऋग्वेद में बालखिल्य सूक्तों को भी सम्मिलित कर लेने के कारण सूक्तों की सङ्ख्या 1028 हो जाती है। इस प्रकार पूरे ऋग्वेद में 8 अष्टक, 64 अध्याय, 2024 वर्ग, 10552 मन्त्र तथा 10 मण्डल, 85 अनुवाक, 1028 सूक्त, 10552 मन्त्र तथा 397265 अक्षर हैं (उपाध्याय, 2006 तथा शर्मा, 2010)। इस प्रकार ऋग्वेद सभी वेदों में सबसे बृहद् संहिता है जिसमें मन्त्रों की संख्या तालिका सङ्ख्या 1.5 में दी गई है।

3.5. ऋग्वेद में खिल सूक्त

वैदिक साहित्य में खिलसूक्तों को सघन वन के समान माना गया है। खिल सूक्तों में याज्ञिकों ने अलग-अलग वेदों से उन मन्त्रों का संकलन किया है जिनमें यज्ञ रूपी दृष्टि का अवलोकन है (पाण्डेय, 2004)। ऋग्वेद की शाकल शाखा में बाष्कल शाखा से कुछ अतिरिक्त मन्त्र एकत्रित किए गए हैं जो शाकल शाखा में प्राप्त नहीं होते हैं। अधिकांश उन्हीं मन्त्रों को खिल सूक्तों में स्थान प्राप्त है। खिलसूक्तों का मुख्य प्रमाणिक स्रोत प्रो. जी. ब्यूलर को प्राप्त शारदा लिपि में लिपिबद्ध ऋग्वेद की एक कश्मीरी पाण्डुलिपि को माना जाता है। इस पाण्डुलिपि के दशम मण्डल के अन्त में सभी खिलसूक्त क्रम से स्थापित थे (पाण्डेय, 2004 तथा द्विवेदी, 2010) । इसकी प्राप्ती का समाचार

1877 ई. में सबसे पहले 'संस्कृत हस्तलिखित ग्रन्थों के विस्तृत विवरण' के पृष्ठ 35-36 में दिया गया था जिसका प्रकाशन बम्बई से होता है। इस पाण्डुलिपि में कुल 191 पृष्ठ हैं। इसमें खिल पृष्ठ 176 बी. से 189 बी. पृष्ठ तक है।

मण्डल	सूक्त सङ्ख्या	मन्त्र सङ्ख्या
प्रथम	191	2006
द्वितीय	43	429
तृतीय	62	617
चतुर्थ	58	589
पंचम	87	727
षष्ठ	75	765
सप्तम	104	841
अष्टम	92+11 बालखिल्य सूक्त	1716
नवम	114	1108
दशम	191	1754

तालिका 1.5: ऋग्वेद में मन्त्रों की संख्या

खिलों की व्यवस्था और विन्यास ऋग्वेद से भिन्न है। इसमें ऋग्वेद के अष्टक और अध्याय तथा मण्डल और अनुवाक नहीं हैं। इनके विभाजन क्रम की व्यवस्था को यजुर्वेद के तुल्य कहा जा सकता है। समस्त खिल सूक्त 5 अध्यायों में विभक्त हैं। पाण्डुलिपि के सारे अध्यायों में सबसे पहले ऋषि, देवता और छन्दों की सूचना वाली अनुक्रमणी दी गई है। यह भी प्राप्त होता है कि खिल सूक्तों का उस शाखा में मूल स्थान कहाँ पर था। यह ज्ञात करने के लिए सूक्त के अन्त में ऋग्वेदीय मन्त्रों के चिह्न भी दिए गए हैं। डॉ. एच. वेंत्सेल (H. Wenzel) ने इस पाण्डुलिपि का प्रतिरूप करवाया था। इसकी जाँच यूरोप में मैक्समूलर, मैक्डॉनेल तथा कुछ अन्य विद्वानों ने की थी। यह पाण्डुलिपि वर्तमान में पूना स्थित भण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर में विद्यमान है (पाण्डेय, 2004)। पाण्डुलिपि से यह विदित होता है कि इसका प्रतिलिपिकार भट्टभीमस्वामी रामिस्वामि का पुत्र तथा शबलस्वामी का पौत्र है। इस पाण्डुलिपि की पुष्पिका में शताब्दी का वर्णन नहीं है। ब्यूलर ने

इसको 400 वर्ष पहले रचित माना है। वह (सप्तर्षि) सं. 51 का मतलब 75 ईस्वी मानते हैं। कीथ ने सं. 51 को 1575 ईस्वी माना है (पाण्डेय, 2004)।

ऋग्वेद संहिता के खिल सूक्तों की अनेकों प्रकाशित संस्करणों में विभिन्न सङ्ख्याएँ दी गई हैं। मैक्समूलर द्वारा प्रकाशित संस्करण में 32 खिल सूक्त तथा आउफ्रेक्ट (Aufrecht) के रोमन में प्रकाशित संस्करण में 25 खिल सूक्त मिलते हैं। मैक्समूलर के संस्करण में कुछ ऐसे सूक्त नहीं प्राप्त होते हैं जो आउफ्रेक्ट के संस्करण में विद्यमान हैं। दामोदर सातवलेकर के ऋग्वेद में 36 खिल सूक्त हैं । सन् 1906 में प्रो. रुडल्फ रॉथ की प्रेरणा से ब्रेसलाउ (जर्मनी) से डॉ. शेफ्टेलोवित्झ (Scheftelowitz) ने कश्मीरी पाण्डुलिपि के आधार पर 'अपोक्रायफेन देज ऋग्वेद' (ऋग्वेद के अप्रामाणिक सूक्त) के नाम से खिल-सूक्त-संग्रह प्रकाशित किया था। उसके पश्चात् श्री चिन्तामणि गणेश काशीकर ने सायण भाष्य सहित ऋग्वेद के संस्करण के चतुर्थ भाग के अन्त में 5 अध्यायों में 86 खिल सूक्तों का पाठभेद आदि के साथ संकलन किया जिसका प्रकाशन पूना से किया गया था। इसमें यह संकेत भी दिए गए थे कि ऋग्वेद में ये कहाँ पढ़े जायेंगे (पाण्डेय, 2004)।

अध्याय	सूक्त	मन्त्र-सङ्ख्या	सूक्त
1.	12	86	सौपर्ण सूक्त (11 सूक्त, 84 मन्त्र)
2.	16	66+70 (अन्य)	श्री सूक्त (19+21 = मन्त्र)
3.	22	137+25 (अन्य)	बालखिल्य (8 सूक्त, 66 मन्त्र)
4.	14	104+60 (अन्य)	शिवसंकल्प (28 मन्त्र)
5.	22	370+9 (अन्य)	निविद् 193, प्रैष 64, कुन्ताप 80 मन्त्र
योग	**86**	**929**	

तालिका 1.6: श्री काशीकर द्वारा संकलित खिल-सूक्तों का संक्षिप्त विवरण

3.6. ऋग्वेद में मन्त्र द्रष्टा

प्राचीन विचारों से विदित होता है कि वैदिक मन्त्रों के रचयिता मनुष्य नहीं थे। परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यह ज्ञान ऋषियों को दिया था।

ऋषियों ने मन्त्रों का साक्षात्कार किया था तथा जिस मन्त्र का जिस ऋषि ने साक्षात्कार किया था वह उन मन्त्रों के द्रष्टा ऋषि कहलाए थे (गैरोला, 1960 तथा गुप्ता, 2011)। ऋग्वेद के मन्त्रों में ऋषियों के नामों को देखकर विदित होता है कि सम्पूर्ण मन्त्र किसी एक ऋषि के द्वारा दृष्ट नहीं हैं। इसमें ऋषियों के वंशजों द्वारा दृष्ट मन्त्र भी प्राप्त होते हैं।

मण्डल	सूक्त सङ्ख्या	मन्त्र सङ्ख्या	ऋषियों तथा ऋषिकाओं के नाम
1.	191	2006	मधुच्छन्दस्, मेधातिथि, दीर्घतमा, अगस्त्य, गौतम, पराशर, रोमशा ब्रह्मवादिनी आदि
2.	43	429	गृत्समद, एवं उनके वंशज
3.	62	617	विश्वामित्र एवं उनके वंशज
4.	58	589	वामदेव एवं उनके वंशज
5.	87	727	अत्रि एवं उनके वंशज
6.	75	765	भरद्वाज एवं उनके वंशज
7.	104	841	वशिष्ठ एवं उनके वंशज
8.	103	1716	कण्व, भृगु अंगिरस् एवं उनके वंशज
9.	114	1108	पूर्व ऋषिगण
10.	191	1754	त्रित, विमद, इन्द्र, श्रद्धा कामायनी, इन्द्राणी, शची, उर्वशी आदि
योग	1028	10, 552	

तालिका 1.7: मन्त्र तथा मन्त्रद्रष्टा ऋषि

3.7. ऋग्वेद में छन्द

ऋग्वेद संहिता में कुल 20 छन्दों का उपयोग हुआ है। इन 20 छन्दों में से प्रमुख 7 छन्दों का अत्यधिक प्रयोग हुआ है। ऋग्वेद के 7 प्रमुख छन्द गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् तथा जगती हैं। इन 7 में से भी त्रिष्टुप्, गायत्री, जगती और अनुष्टुप् का ही प्रयोग सर्वाधिक हुआ है (द्विवेदी, 2010)। उक्त 7 छन्दों की मन्त्र सङ्ख्या इस प्रकार है –

क्र.	छन्दनाम	अक्षर	मन्त्रसङ्ख्या
1.	त्रिष्टुप्	44	4248
2.	गायत्री	24	2456
3.	जगती	48	1353
4.	अनुष्टुप्	32	830
5.	पंक्ति	40	498
6.	उष्णिक्	28	398
7.	बृहती	36	371

तालिका 1.8: ऋग्वेद में प्रमुख 7 छन्द

प्रस्तुत तालिका के माध्यम से प्रदर्शित होता है कि ऋग्वेद में प्रधान प्रथम 4 छन्दों में से 80 प्रतिशत मन्त्र हैं। शेष 3 छन्दों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है किन्तु वे प्रधान छन्दों में गण्य नहीं हैं (द्विवेदी, 2010)। ऋग्वेद में प्रयुक्त अन्य 13 छन्द की सूची तालिका संख्या 1.9 में दी गई है। प्रस्तुत तालिका के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि ऋग्वेद में 7 छन्दों का प्रयोग अधिक हुआ है तथा 13 छन्दों का प्रयोग अन्य छन्दों की अपेक्षा कम हुआ है (द्विवेदी, 2010)।

3.8. ऋग्वेद में उपमा

ऋग्वेद में बहुत से स्थानों पर उपमाओं का वर्णन मिलता है। इनका अधिकांश अर्थों में उपयोग किया गया है यथा उपमम्, उपमे, उपमिमीहि, उपमात् आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। ऋग्वेद में हर एक ऋषि, देवता तथा छन्द के लिए उपमाएँ वर्णित हैं। 518 उपमाओं में इन्द्र, 572 उपमाओं में अग्नि, 300 उपमाओं में सोम, 208 उपमाओं में मरुद्गण और अश्विनीकुमार, 62 उपमाओं में उषा, 28 उपमाओं में मित्र और वरुण, 14 उपमाओं में अदिति और आदित्य, 5 उपमाओं में सविता, 16 उपमाओं में सूर्य, 12 उपमाओं में पूषन्, 11 उपमाओं में रात्रि तथा 4-4 उपमाओं में धाता, भग, अद्रि और विष्णु का उपयोग ऋग्वेद संहिता में प्राप्त होता है (शास्त्री, 2005)।

क्र.	छन्दनाम	अक्षर	मन्त्र
1.	अतिजगति	52	17
2.	शक्करी	56	19
3.	अतिशक्करी	60	10
4.	अष्टि	64	7
5.	अत्यष्टि	68	82
6.	धृति	72	2
7.	अतिधृति	76	1
8.	द्विपदा गायत्री	16	3
9.	द्विपदा विराट्	20	139
10.	द्विपदा त्रिष्टुप्	22	14
11.	द्विपदा जगती	24	1
12.	एकपदा विराट्	10	5
13.	एकपदा त्रिष्टुप्	11	1

तालिका 1.9: ऋग्वेद में प्रयुक्त शेष छन्द

3.9. ऋग्वेदीय मौलिक अंश पर विचार

पाश्चात्त्य विद्वानों का मत है कि ऋग्वेद की रचना किसी एक काल में नहीं हुई है। अलग-अलग कालों में इसके अलग-अलग सूक्तों की रचना की गई होगी तथा बाद में जब सभी सूक्तों को एकत्र कर लिया होगा तब यह ग्रन्थ ऋग्वेद संहिता के नाम से प्रसिद्ध हुआ होगा। अतः इसका कुछ अंश मौलिक है तथा कुछ अंश परवर्ती है। विद्वानों के मन्तव्य कुछ इस प्रकार हैं-

1. 2 से 7 तक के मण्डलों को ऋग्वेद का मूल अंश माना जाता है। ऋषियों के वंशजों से सम्बन्धित होने के कारण इनको वंश-मण्डल भी कहा जाता है। इन मण्डलों में किसी एक ही ऋषि के वंशजों द्वारा दृष्ट मन्त्रों को एकत्र किया गया है (सूर्यकान्त, 1972)।
2. सूक्तों की सङ्ख्या के आधार पर मण्डल 2-7 तक का क्रम आश्रित है। मन्त्रों की सङ्ख्या में मण्डल 2-7 तक हर सूक्त में वृद्धि हुई है (द्विवेदी, 2010)।

3. मण्डल 8 में किसी एक ही ऋषि के वंशजों द्वारा दृष्ट मन्त्र नहीं हैं। इसमें बहुत से ऋषियों (कण्व, भृगु, अंगिरस् आदि) के वंशजों द्वारा दृष्ट मन्त्र हैं। कण्व ऋषि के वंशजों ने अधिकांश सङ्ख्या में मण्डल 1 और 8 के मन्त्रों का साक्षात्कार किया है। इनमें लगभग 80 सूक्तों में भाव तथा भाषा का साम्य देखा जा सकता है। (पाण्डेय, 1975)।
4. नवम मण्डल की प्रमुख विशेषताओं में से एक यह है कि इसमें पवमान (पवित्र) सोम से सम्बन्धित सभी मन्त्रों को एकत्र किया गया है। इसे सोम सूक्त भी कहा जाता है। इसमें एकत्रित मन्त्रों को मण्डल 2-7 तक के ऋषियों द्वारा भी साक्षात्कार किया गया है। अनेकों ऋषियों द्वारा दृष्ट सोम विषयक मन्त्र इसमें एकत्रित किए गए हैं। इस मण्डल में छन्द के आधार पर ही सूक्तों का विन्यास तथा सूक्तों के क्रम का निर्धारण किया गया है (सूर्यकान्त, 1972)।
5. मण्डल 1 के विषय में माना गया है कि इसे बाद में मूल ग्रन्थ में संकलित किया गया है। इस मण्डल में अनेकों ऋषियों के द्वारा दृष्ट मन्त्रों को एकत्रित किया गया है। केवल कुछ ही ऋषि वंश इस मण्डल में हैं (सेन, 1983)।
6. मण्डल 10 के विषय में भी माना जाता है कि इसको संकलन बाद में किया गया है। इस मण्डल में भाषा, व्याकरण एवं छन्द का अवलोकन किया गया है। असामान्य शब्दावली, भाषागत विभिन्नता, छन्दों का वैशिष्ट्य, देवगत वैशिष्ट्य, नूतन भाव, दार्शनिक तत्त्व तथा अन्य नूतन सामग्री के एकत्रीकरण के कारण इस मण्डल में नूतनता है। मुख्य बिन्दु यह है कि मण्डल 1 तथा 10 में सूक्तों की एक ही सङ्ख्या है तथा अन्य मण्डलों से दोनों मण्डलों में मन्त्रों की सङ्ख्या एक ज्यादा है (पाण्डेय, 1975 तथा उपाध्याय, 2006)।

3.10. ऋग्वेद का वर्ण्य विषय

ऋग्वेद संहिता के 10 मण्डलों में अति महत्त्वपूर्ण विषयों का संकलन किया गया है। ऋग्वेद के वर्ण्य विषय में जो जानकारियाँ प्राप्त होती हैं वो ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, सामाजिक, भाषावैज्ञानिक, पर्यावरण, संगीत आदि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती हैं। अतः इनको संक्षिप्त

रूप में यहाँ पर देने का प्रयत्न किया गया है। ऋग्वेद के संकलित विषयों को मण्डल क्रम के अनुसार यहाँ पर दिया गया है।

3.10.1. प्रथम मण्डल का वर्ण्य विषय

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में कुल 191 सूक्तों में 2006 मन्त्र हैं। इस मण्डल के प्रमुख ऋषि मधुच्छन्दस्, मेधातिथि, दीर्घतमा, अगस्त्य, गौतम, पराशर तथा ऋषिकाएँ रोमशा ब्रह्मवादिनी आदि हैं (द्विवेदी, 2010)। इस मण्डल में मुख्यतः इन्द्र, अग्नि, आदित्य, पूषा, उषा, त्वष्टा, मरुत्, सोम, मित्र, वरुण, वायु, अश्विनीकुमारों, विश्वेदेवों, मित्रावरुणौ आदि की स्तुति विभिन्न सूक्तों में की गयी है (विद्यालंकार, 1964 तथा उपाध्याय, 1996)। ऋग्वेद संहिता का तथा प्रथम मण्डल का प्रारम्भ अग्नि देवता की स्तुति से किया गया है। इन्द्र देवता की स्तुति सर्वाधिक मन्त्रों में की गयी है किन्तु मुख्य रूप से यह मण्डल अग्नि देवता को समर्पित है। प्रथम मण्डल के प्रतिपाद्य विषय में विभिन्न देवताओं को विभिन्न स्तुतियों में प्रदत्त किया गया है जैसे अग्नि देवता की यज्ञीय पदार्थ के रूप में, सोम पान हेतु, द्रविणोदा, वैश्वानर, जातवेदस् आदि देवताओं के रूप में अन्य देवताओं के साथ तथा यज्ञ सम्बन्धी कार्यों को करने वाले के रूप में अनेक स्थानों पर स्तुति की गयी है। इन्द्र देवता से सोमरस का पान करने के लिए स्तुति की गई है। इन्द्र द्वारा वृत्र का वध करने के पश्चात् सूर्य, उषा और द्यौस् को उत्पन्न करने तथा नदियों को प्रवाहित करने का आलङ्कारिक वर्णन किया गया है। अधिकांश सूक्तों में इन्द्र के पराक्रम तथा वीरता पूर्वक कार्यों के वर्णन हैं (उपाध्याय, 1996)। उषा सूक्त (1.123) में उषा के लिए तथा उषा से निकलते सूर्य के लिए उपमाओं की काव्यात्मक ढंग से व्याख्या की गयी है। इसी प्रकार सूर्य, अग्नि, इन्द्र, उषा, द्यौ, सविता, देव, मित्र, वरुण आदि अनेक देवताओं के लिए उपमाओं का प्रयोग किया गया है (शास्त्री, 2005 तथा सूर्यकान्त, 1982)। हिरण्यगर्भ सूक्त (1.121) में उदात्त दार्शनिक भावों की अभिव्यक्ति करते हुए 'क' अर्थात् प्रजापति का महत्त्व वर्णित है। प्रजापति हिरण्यगर्भ (सुवर्ण का पिण्ड़, ब्रह्माण्ड) के रूप में सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न हुआ था। अस्य वामीय सूक्त (1.164) ऋग्वेद का अति महत्त्वपूर्ण सूक्त है। इसमें कुल 52 मन्त्र हैं जिनमें दर्शन एवं अध्यात्म (1, 20-22, 30, 38, 44, 46), मनोविज्ञान (18), भाषाविज्ञान (10, 41, 42, 45, 49), ज्योतिष (11-15, 48), भौतिकविज्ञान (2, 3, 43,

51), वेदमन्त्रों में दिव्य शक्ति (39), छन्दों का महत्त्व (23) आदि से सम्बन्धित अनेक तथ्यों का वर्णन है। इस सूक्त में एकेश्वरवाद का प्रतिपादक मन्त्र (46) '*एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति*' भी आया है। त्रैतवाद का प्रतिपादक मन्त्र (20) '*द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया*' भी इसी सूक्त में आया है। इसमें एक मन्त्र (35) '*अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः*' में यज्ञ को विश्व का केन्द्र (नाभि) बताया गया है (द्विवेदी, 2010)। 187वें सूक्त में अन्न से प्रार्थना की गयी है। 191वें सूक्त में विविध जीवों का और उनके प्रभाव को दूर करने वाली औषधियों का वर्णन है। इसी प्रकार अन्य देवताओं से भी बल, यश और वृद्धि की कामना इस मण्डल में की गयी है। आख्यान सूक्तों में त्रिविक्रम (1.154) का वर्णन है अर्थात् विष्णु ने किस प्रकार तीन पगों में द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक और भूलोक को नापा था। इसके अतिरिक्त इन्द्र तथा वृत्र (1.80) के युद्ध का वर्णन है जिसमें इन्द्र विजयी होता है। विशिष्ट संवाद सूक्तों में इन्द्र-मरुत् संवाद (1.165) तथा अगस्त्य-लोपामुद्रा का प्रेमपूर्वक संवाद (1.179) प्रतिपादित है (उपाध्याय, 1996 तथा द्विवेदी, 2010)।

3.10.2. द्वितीय मण्डल का वर्ण्य विषय-

ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल में 43 सूक्तों में 429 मन्त्र संकलित हैं। इस मण्डल के प्रमुख द्रष्टा ऋषि गृत्समद एवं उनके वंशज हैं (द्विवेदी, 2010)। द्वितीय मण्डल का प्रारम्भ भी अग्नि की स्तुति से होता है। प्रथम सूक्त में अग्नि के विविध जन्मों का तथा अग्नि का इन्द्र, विष्णु, वरुण, अर्यमा, मित्र, रुद्र, भग आदि अनेक देवताओं के साथ उल्लेख है (विद्यालंकार, 1964 तथा उपाध्याय, 1996)। अग्नि देवता की यज्ञीय अग्नि के रूप में स्तुति की गयी है। मुख्यरूप से इस मण्डल में इन्द्र तथा अग्नि देवता की स्तुति की गयी है। इन्द्र देवता के पराक्रमयुक्त कार्यों[28] (सातवलेकर, 1967) का तथा यज्ञ सम्बन्धी सोमपानादि कार्यों का वर्णन है तथा इन कार्यों को प्रंशसनीय[29] (सातवलेकर, 1967) भी बताया गया है। इन्द्र-वृत्र युद्ध का वर्णन तथा इन्द्र की विजय को आख्यान सूक्त(2.12)

[28] स जनास इन्द्रः। (ऋ. 2.12.1)।

[29] सास्युक्थ्यः। (ऋ. 2.13.2)।

के रूप में वर्णित किया गया है। ब्रह्मणस्पति के वीरतापूर्वक कार्यों का वर्णन तथा सभी प्रकार के कल्याण प्रदान करने के लिए उनसे प्रार्थना की गयी है। इस मण्डल में आदित्य, वरुण, बृहस्पति, विश्वेदेवा, द्यावापृथिवी, त्वष्टा, राका, सिनीवाली, मरुत्, अश्विनीकुमारों, सोम, पूषन्, द्रविणोदा आदि की स्तुति विविध रूपों में की गयी है (उपाध्याय, 1996)। मरुतों के आने तथा जाने का तथा आवाज़ करने का विविध रूपों में आलंकारिक ढंग से वर्णन किया गया है (सूर्यकान्त, 1982)। यहाँ अनेकों सुन्दर उपमाओं तथा उत्प्रेक्षाओं का प्रयोग किया गया है जिनका काव्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है। उदित होती सविता का भी काव्यात्मक ढंग से वर्णन किया गया है। कपिञ्जल पक्षी के रूप में इन्द्र देवता की स्तुति की गयी है। गृत्समद ऋषि विभिन्न देवताओं को सम्बोधित इस मण्डल के अधिकांश सूक्तों के अन्त में '*बृहद्वदेम विदथे सुवीराः*' सम्बोधित करते हैं (उपाध्याय, 1996)।

3.10.3. तृतीय मण्डल का वर्ण्य विषय

तृतीय मण्डल में कुल 62 सूक्त तथा 617 मन्त्र हैं। इस मण्डल के मन्त्र विश्वामित्र ऋषि, उनके वंशजों तथा नदी नामक ऋषिका द्वारा दृष्ट हैं (द्विवेदी, 2010)। तृतीय मण्डल का प्रारम्भ अग्नि देवता की यज्ञीय अग्नि के रूप में स्तुति से है जो कि काव्यात्मक ढंग से अग्नि देवता की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं। अग्नि को देवताओं को लाने वाले अश्व के रूप में चित्रित किया गया है। अरणियों के मन्थन से अग्नि के उत्पन्न होने का भी आलंकारिक वर्णन है। इन्द्र के पराक्रम युक्त कार्यों का तथा सोमपान करने की स्तुति का उल्लेख प्रस्तुत मण्डल में वर्णित है। इन्द्र के रथ तथा रथ के अंगों की स्तुति भी वर्णित है। उषा का एक अत्यन्त सुन्दर युवती और पत्नी के रूप में चित्रण है। उषस् सूक्त में उदय होती उषा एक सुन्दरी के तुल्य अपने वस्त्रों को चारों ओर फैलाती है (शास्त्री, 2005)। मुख्य रूप से अग्नि तथा इन्द्र की स्तुति वर्णित है। तृतीय मण्डल में इन्द्रावरुणौ, अश्विनीकुमारों, पूषा, सविता, सोम, मित्रावरुणौ, जातवेदस् आदि देवताओं की भी विभिन्न रूपों में स्तुतियाँ की गयी हैं। विश्वामित्र और विपाट् तथा शुतुद्रि नदियों का संवाद भी सूक्त (3.33) में संकलित है। विश्वामित्र, सुदास और भरत आदि का ऐतिहासिक वर्णन (3.53) भी प्राप्त होता है।

सविता को सम्बोधित मन्त्रों में प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र[30] (सातवलेकर, 1967) भी इसी मण्डल में है (विद्यालंकार, 1964 तथा उपाध्याय, 1996)।

3.10.4. चतुर्थ मण्डल का वर्ण्य विषय

चतुर्थ मण्डल में कुल 58 सूक्तों में 589 मन्त्र हैं। ये मन्त्र वामदेव ऋषि, उनके वंशज ऋषियों तथा अदिति नामक ऋषिका के द्वारा दृष्ट हैं (द्विवेदी, 2010)। मुख्य रूप से अग्नि तथा इन्द्र की स्तुति वर्णित है। चतुर्थ मण्डल का प्रारम्भ भी अग्नि देवता की काव्यात्मक ढंग से स्तुति करते हुए अग्नि के यज्ञीय स्वरूप तथा अन्य विविध रूपों का आलंकारिक भाषा में वर्णन निरुपित है। कल्पनाओं का सौन्दर्य दर्शाते हुए सूर्य, उषा तथा अश्विनीकुमारों की स्तुति में उन्हें अपने रथ में बैठकर यज्ञ में आने के लिए कहने का भी काव्यात्मक ढंग से वर्णन किया गया है (सूर्यकान्त, 1982)। इन्द्र के महान् कार्यों, पराक्रम तथा इन्द्र की मनोदशा का भी चित्रण इसी मण्डल में हुआ है। इन्द्र के द्वारा स्वयं अपने पराक्रम का उल्लेख भी किया गया है। उषा तथा सविता का काव्यमय वर्णन भी प्राप्त होता है। कृषि के विविध उपकरणों तथा क्षेत्रपति (किसान) की स्तुति भी इस मण्डल का मुख्यत्व है। अग्नि में ड़ाली गयी घृतधारा का आलंकारिक वर्णन भी प्राप्त होता है। प्रसिद्ध रहस्यात्मक मन्त्र[31] (सातवलेकर, 1967) भी इसी मण्डल से सम्बन्धित है। इसका यज्ञपरक, व्याकरणपरक आदि अनेक प्रकार से व्याख्यान परवर्ती आचार्यों द्वारा किया गया है। प्रस्तुत मण्डल में विविध प्रकार की स्तुतियों के द्वारा सोम, इन्द्रावरुणौ, अश्विनीकुमारों, इन्द्राबृहस्पति, बृहस्पति, विश्वेदेवा, द्यावापृथिवी आदि देवताओं के वर्णन चित्रित हैं (विद्यालंकार, 1964 तथा उपाध्याय, 1996)।

---

[30] तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥ (ऋ. 3.62.10)।

[31] चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश॥ (ऋ. 4.58.3)।

3.10.5. पञ्चम मण्डल का वर्ण्य विषय

पञ्चम मण्डल में कुल 87 सूक्तों में 727 मन्त्र हैं। जिनके द्रष्टा ऋषि अत्रि एवं उनके वंशज ऋषि तथा विश्ववारा आत्रेयी नामक ऋषिका हैं (द्विवेदी, 2010)। मण्डल का मंगलाचरण अग्नि की स्तुति से होता है जिसमें यज्ञ रूपी अग्नि की स्तुति वर्णित है। इन्द्र के वीरतापूर्वक कार्यों का तथा सोमपान के लिए निमन्त्रण विविध मन्त्रों में निरुपित है। श्याश्व नामक आख्यान सूक्तों (5.52-61) में श्याश्व द्वारा मरुतों की स्तुति वर्णित है। मरुतों की कृपा से उन्हें ही उन्हें ऋषित्व की प्राप्ति हुई तथा जिसके कारण वे ऋषि कन्या से साथ विवाह करने में समर्थ हो सके थे (उपाध्याय, 1996)। उषा का काव्यमय भाषा में वर्णन है (शास्त्री, 2005)। अश्विनीकुमारों, मित्रावरुणौ, सविता, पर्जन्य, पृथिवी, वरुण, इन्द्राग्नी, मरुतों आदि की स्तुति विविध मन्त्रों के द्वारा की गई है। मुख्य रूप से अग्नि तथा इन्द्र की प्रार्थना ही मण्डल का प्रमुखत्त्व है। पर्जन्य का अति सुन्दर वर्णन सरल काव्यमय भाषा में वर्णित है (विद्यालंकार, 1964 तथा उपाध्याय, 1996)।

3.10.6. षष्ठ मण्डल का वर्ण्य विषय

षष्ठ मण्डल में भारद्वाज ऋषि एवं उनके वंशज ऋषियों के द्वारा दृष्ट कुल 75 सूक्तों में 765 मन्त्र हैं (द्विवेदी, 2010)। मण्डल का प्रारम्भ अग्नि की स्तुति से किया गया है। इन्द्र के पराक्रम की तथा इन्द्र से रक्षा की प्रार्थना अनेकों मन्त्रों में की गयी है। गायों की स्तुति सर्वप्रथम प्रस्तुत मण्डल में की गई है। सोम के गुण तथा उसके प्रभावों का वर्णन भी किया गया है। सरस्वती नदी से सम्बन्धित सूक्त (6.61) भी यहाँ वर्णित हैं। सरस्वती नदी की स्तुति कर उससे अनेक वस्तुओं की प्रार्थना की गई है। सविता के हिरण्यमय रूप का तथा युद्ध के लिए प्रयुक्त होने वाले अस्त्रों जैसे कि कवच, धनुष, ज्या, आर्त्नी, बाण, प्रतोद, हस्तघ्न तथा रथ सारथी, अश्व, रथ आदि की विभिन्न मन्त्रों में स्तुति की गयी है (उपाध्याय, 1996)।

3.10.7. सप्तम मण्डल का वर्ण्य विषय

सप्तम मण्डल में वसिष्ठ ऋषि तथा उनके वंशज ऋषियों द्वारा दृष्ट कुल 104 सूक्तों में 841 मन्त्र हैं (द्विवेदी, 2010) । अग्नि की काव्यमय भाषा में स्तुति के द्वारा मण्डल का प्रारम्भ हुआ है जिसमें अग्नि के विविध रूपों की स्तुति वर्णित की गयी है । इन्द्र के वीरता पूर्वक कार्यों की प्रशंसा का मण्डन दाशराज सूक्तों (7.18.1-25 | 7.83.6-9) में किया गया है । इन्हें ऐतिहासिक सूक्त भी माना जाता है । इन्द्र के द्वारा सुदास के लिए जो वसिष्ठ के यजमान थे अनेक शत्रूओं का वध करने का उल्लेख विभिन्न मन्त्रों में वर्णित है । दश राजाओं के विरुद्ध सुदास की इन्द्रावरुणा द्वारा की गई रक्षा का तथा युद्धभूमि का सुंदर वर्णन किया गया है । वसिष्ठ का अपने पुत्रों के साथ संवाद एवं उनके महत्त्व का प्रतिपादन भी है । वसिष्ठ की वरुण के साथ मित्रता का उल्लेख भी यहाँ प्राप्त होता है । वसिष्ठ-सुदास संवाद सूक्त (7.83) भी प्राप्त होता है । शान्तिपाठ के नाम से प्रसिद्ध सूक्त (7.35) भी है जिसमें सभी वैदिक देवताओं से कल्याणकारी होने की प्रार्थना की गयी है (उपाध्याय, 1996)। अग्नि तथा इन्द्र के अतिरिक्त सविता, भग, उषा और दधिका की भी मुख्य रूप से स्तुति की गयी है । रुद्र, वरुण, जल, ऋभु, मित्रावरुणौ, विश्वेदेवा, नदियों, आदित्य, द्यावापृथिवी, वास्तोष्पति, अश्विनीकुमारों, बृहस्पति आदि देवताओं की स्तुति भी विभिन्न मन्त्रों में वर्णित है (विद्यालंकार, 1964 तथा उपाध्याय, 1996) । मण्डूक सूक्त (7.103) में वर्षा के आगमन पर किस प्रकार मेंढ़क धरती से निकल कर टर-टर की ध्वनि करने लगते हैं इसका बड़ा सुन्दर चित्रण किया गया है । मेंढ़कों की तुलना व्रत धारण करने वाले ब्राह्मण से की गई है । मण्डल के अधिकांश सूक्तों के अन्त में '*यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः*' प्राप्त होता है (उपाध्याय, 1996) ।

3.10.8. अष्टम मण्डल का वर्ण्य विषय

अष्टम मण्डल में कण्व, भृगु तथा अंगिरस् ऋषियों एवं उनके वंशज ऋषियों तथा अपाला आत्रेयी और शश्वती आंगिरसी आदि ऋषिकाओं के द्वारा दृष्ट कुल 103 सूक्त हैं । इन सूक्तों में से 92 सूक्त शाकल शाखा के तथा बाष्कल शाखा के सूक्त सङ्ख्या 49-59 तक के 11 बालखिल्य सूक्त हैं जिनकी मिश्रित मन्त्र सङ्ख्या कुल 1716 है (उपाध्याय, 1996; झा, 2004 तथा द्विवेदी, 2010) ।

अष्टम मण्डल का प्रारम्भ इन्द्र देवता की स्तुति के द्वारा होता है। इन्द्र देवता की प्रार्थना सोमपान करने के लिए की गई है। इन्द्र की शक्ति तथा पराक्रम युक्त कार्यों का उल्लेख भी वर्णित है। प्रत्येक सूक्त के अन्त में राजाओं के दान की प्रशंसा है। आसंग, विभिन्दु, पाकस्थामा, कौरयाण, कुरुंग, कशु, तिरिन्दर, त्रसदस्यु, चित्र, सुषामा, पृथुश्रवस् कानीत, प्रस्कण्व, ऋक्ष, अश्वमेध इत्यादि क्रमशः दान देने वाले राजाओं के नामों की प्रशंसा का उल्लेख प्राप्त होता है। अग्नि, अश्विनीकुमारों, सूर्य, वायु, मित्रावरुणौ, इन्द्राग्नी, वरुण, आदित्य, सोम, विश्वेदेवा, मरुतों, उषा, पवमान और गौ आदि देवताओं के कार्यों की प्रशंसा तथा स्तुति की गयी है (विद्यालंकार, 1964 तथा उपाध्याय, 1996)। अधिकांशतः इन्द्र देवता की ही स्तुति अष्टम मण्डल में प्राप्त होती है। प्रस्तुत मण्डल में गाय को रुद्रों की माता, वसुओं की दुहिता, आदित्यों की बहन तथा अमृत की नाभि कहा गया है। यज्ञ तथा यज्ञ करने वाले यजमान दम्पत्तियों की प्रशंसा की गई है और उनके लिए आशीर्वाद दिया गया है (उपाध्याय, 1996)।

3.10.9. नवम मण्डल का वर्ण्य विषय

नवम मण्डल के अधिकांशतः मन्त्र पूर्व मण्डलों के ऋषिगण एवं उनके वंशजों तथा सिकता निवावरी नामक ऋषिका द्वारा दृष्ट हैं। नवम मण्डल में कुल 114 सूक्तों में 1108 मन्त्र हैं (द्विवेदी, 2010)। नवम मण्डल को पवमान मण्डल के नाम से जाना जाता है क्योंकि सम्पूर्ण मण्डल में पवमान सोम की ही स्तुति प्राप्त होती है (उपाध्याय, 1996)। प्रस्तुत मण्डल में सोमलता के पीसने, छानने, घड़े में रखने, उसमें दूध मिलाने तथा सोमपान करने आदि का आलंकारिक भाषा में वर्णन किया गया है। काव्य की दृष्टि से इस मण्डल का अत्यधिक महत्त्व है (शास्त्री, 2005)। पवमान सोम के अतिरिक्त इस मण्डल में आप्री, अग्नि, पूषा, सविता तथा विश्वेदेवा आदि देवताओं की भी स्तुतियाँ प्राप्त होती हैं। इस मण्डल के अधिकांश मन्त्र सामवेद में उद्धृत हैं। विविध प्रकार के व्यवसायों का उल्लेख भी गौणरूप से नवम मण्डल में प्राप्त होता है (उपाध्याय, 1996)।

3.10.10. दशम मण्डल का वर्ण्य विषय

दशम मण्डल को ऋग्वेद का नवनीत कहा गया है (सूर्यकान्त, 1972)। दशम मण्डल में कुल 191 सूक्त तथा 1754 मन्त्र हैं। इन मन्त्रों के द्रष्टा त्रित, विमद, इन्द्र इत्यादि अनेक वंशों के अनेक ऋषि तथा श्रद्धा कामायनी, इन्द्राणी, शची, उर्वशी, सूर्य सवित्री, यमी वैवस्वती, अदिति, अगस्त्यस्वसा, देवजामयः, गोधा, वसुक्रपत्नी, घोषा काक्षीवती, दक्षिणा प्राजापत्या, वाक् आम्भृणी, जुहू ब्रह्मजाया, सरमा देवशुनी, पौलोमी शची तथा सर्पराज्ञी आदि ऋषिकाएँ हैं (द्विवेदी, 2010)। यह मण्डल अनेकों रहस्यों से भरा हुआ है। मण्डल का प्रारम्भ अग्नि की स्तुति तथा प्रंशसा से होता है। अग्नि के जन्म का विविध प्रकार से उल्लेख किया गया है। इस मण्डल में अग्नि में शव को जलाने आदि का वर्णन प्राप्त होता है। इन मन्त्रों में वैदिक आर्यों के अन्त्येष्टिक्रिया सम्बन्धी रीतिरिवाजों का पता चलता है। इसमें अन्त्येष्टिक्रिया तथा पितृमेध सम्बन्धी मन्त्र प्राप्त होते हैं। राक्षसों का वध करने के लिए भी अग्नि की प्रशंसा है। इन्द्र के द्वारा त्वष्टा पुत्र विश्वरूप के तीन सिरों का काटने का उल्लेख है। इन्द्र के पराक्रम तथा इन्द्र वैकुण्ठ की प्रशंसा की गई है। इन्द्र द्वारा स्वयं अपने पराक्रम का वर्णन किया गया है। इन्द्र ही सबका शासक है इस प्रकार के मन्त्र[32] (सातवलेकर, 1967) प्राप्त होते हैं। औषधि के रूप में जलों की स्तुति प्राप्त होती है। हविर्धान, यमलोक, यम, यमदूतों तथा पितृलोक एवं पितरों का वर्णन भी प्राप्त होता है। दशम मण्डल में इन्द्र, अग्नि, सरण्यू, पूषा, सरस्वती, जलों, गायों, अश्विनीकुमारों, द्यावापृथिवी, विश्वेदेवा, सूर्य, सोम, निर्ऋति, असुनीति, बृहस्पति, मरुतों, विश्वकर्मा, वैश्वानर, हिरण्यगर्भ, मित्रावरुणौ, सविता, विष्णु, धाता, प्रजापति, सिनीवाली आदि देवताओं की स्तुतियाँ विभिन्न प्रकार से की गई हैं (विद्यालंकार, 1964 तथा उपाध्याय, 1996)। कुरुश्रवण त्रासदस्यव के दान की प्रशंसा की गई है। असमाती राजा का वर्णन तथा इसमें मृत्यु से मुक्त होकर जीवित होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है (उपाध्याय, 1996)। विभिन्न स्थानों एवं वस्तुओं से मन को हटाने के लिए भी प्रार्थना[33] है (सातवलेकर, 1967)। ऋग्वेद का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाने वाला ज्ञान सूक्त (10.71) भी इस मण्डल में है।

---

[32] इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्या। (ऋ. 10.89.90)।

[33] मनो जगाम दूरकम्। (ऋ. 10.58.1)।

इसमें बहुविध ज्ञान की प्रशंसा की गई है । इसमें परिनिष्ठित वाणी, शब्दार्थज्ञान, मित्र के लक्षण, मित्र के प्रकार, चारों ऋत्विजों आदि विषयों का वर्णन इस सूक्त में किया गया है । ऐतिहासिक सूक्त (10.75) में नदियों के नामों का उल्लेख भी प्राप्त होता है । इसमें सिन्धु नदी के बहने का आलंकारिक भाषा में सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है (उपाध्याय, 1996) । सोम पीसने वाले पत्थर ग्रावाण का भी काव्यमय भाषा में वर्णन किया गया है । इसी प्रकार विवाह, पुरुष, श्रद्धा, वाक्, संज्ञान, दान, स्तुति, अक्ष, नासदीय, हिरण्यगर्भ, आप्री, धन, अन्न, भाव, यक्ष्मारोगनाशन, गर्भरक्षण, सपत्नघ्न तथा संकल्प सूक्तों के रूप में ऐतिहासिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, आयुर्वेद सम्बन्धित कई प्रमुख सूक्तों को इस मण्डल में एकत्रित किया गया है । ये सूक्त सृष्टि रचना से लेकर मनुष्य के कर्म निर्धारण, जीवन-यापन, रहन-सहन के साथ-साथ कई रहस्यों को उद्घाटित करते हैं (उपाध्याय, 1996 तथा द्विवेदी, 2001) । पुरुरवा-उर्वशी संवाद (10.95), यम-यमी (10.10), सरमा-पणी (10.108), इन्द्र-इन्द्राणी-वृषाकपि (10.86) इत्यादि संवाद सूक्त तथा आख्यान सूक्त के रूप में अक्षसूक्त (10.34) भी दशम मण्डल में अन्तर्निहित हैं (उपाध्याय, 2006) । अन्त में ऋग्वेद सबको एक साथ चलने, बोलने, सोचने आदि का उपदेश संज्ञान सूक्त के माध्यम से प्रदान करता है (उपाध्याय, 1996 तथा झा, 2004) ।

4. ऋग्वेद का समीक्षात्मक संस्करण

पुणे में स्थित भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट में एकत्र करके रखी गयीं 28000 पाण्डुलिपियों में से केवल 30 पाण्डुलिपियाँ ही ऋग्वेद से सम्बन्द्धित थीं जो 19वीं शताब्दी में प्रोफेसर जार्ज बुह्लर, फ्रांज कीलहार्न आदि के द्वारा भारत के विभिन्न प्रांतों जिसमें कश्मीर, गुजरात, तत्कालीन राजपुताना तथा मध्य प्रान्तों आदि से एकत्र की गयीं थीं[34,35] । कुछ समय पश्चात् उन्हें 19वीं शताब्दी में ही उन्हें पूणे में ही स्थित डेक्कन कॉलेज को सौंप दिया गया था[36] । ये

[34] http://www.namami.org/memory%20of%20the%20world.htm

[35]http://www.cs.mcgill.ca/~rwest/link-suggestion/wpcd_2008-09_augmented/wp/r/Rigveda.htm

[36]https://en.wikipedia.org/wiki/Bhandarkar_Oriental_Research_Institute#The_manuscript_collection

पाण्डुलिपियाँ शारदा तथा देवनागरी लिपि में भोजपत्र तथा कागज़ में लिखी की गईं थीं। इनमें से सर्वाधिक प्राचीन पाण्डुलिपि 1464 ई. की है। पुणे स्थित भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टिट्यूट में संरक्षित ऋग्वेद की इन 30 पाण्डुलिपियों को 2007 में यूनैस्को के मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड प्रोग्राम में संकलित कर दिया गया था[37]।

ऋग्वेद की 30 पाण्डुलिपियों में से 9 पाण्डुलिपियों में संहिता पाठ तथा 5 पाण्डुलिपियों में संहिता पाठ के साथ पदपाठ भी प्राप्त होता है। इसके अलावा 13 पाण्डुलिपियों में सायण भाष्य भी प्राप्त होता हैं। ऋग्वेद का सम्पूर्ण पाठ महज 5 पाण्डुलिपियों (MS. No. 1/A1879-80, 1/A1881-82, 331/1883-84 and 5/Viś I) में ही संरक्षित है[38]। प्रो.मैक्समूलर ने ऋग्वेद के समीक्षात्मक संस्करण[39] "द ऋग्वेद विद सायण कमेंट्री" (The Rigveda with Sayana's commentary) के लिए भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टिट्यूट द्वारा संगृहीत पाण्डूलिपियों में से एक पाण्डुलिपि (MS No. 5/1875-76) का प्रयोग किया था[40]। यह पाण्डुलिपि शारदा लिपि में मोटे-मोटे अक्षरों में भोजपत्र पर अंकित थी[41]।

प्रो. मैक्समूलर ने ऋग्वेद के समीक्षात्मक संस्करण के लिए यूरोप में स्थित केवल 24 पाण्डुलिपियों का ही प्रयोग किया था। जबकि पूणे में स्थित वैदिक संशोधन मण्डल द्वारा तैयार ऋग्वेद संहिता के समीक्षात्मक संस्करण के लिए 5 दर्जन से अधिक पाण्डुलिपियों का प्रयोग किया गया था। फिर भी मैक्समूलर, बंबई संस्करण तथा कुछ अन्य स्रोतों द्वारा प्रयोग की गईं बहुत सारी पाण्डुलिपियों को पूणे संस्करण के सम्पादक प्राप्त नहीं कर पाए थे। अतः वर्तमान में मौजूद पाण्डुलिपियों की कुल सङ्ख्या को न्यूनतम 80 से अधिक जाना सकता है[42]।

[37] http://hinduism.about.com/od/scripturesepics/a/rigveda.htm
[38] https://en.wikipedia.org/wiki/Rigveda#cite_note-rigveda-39
[39] http://hinduism.about.com/od/scripturesepics/a/rigveda.htm
[40] http://www.namami.org/memory%20of%20the%20world.htm
[41] https://en.wikipedia.org/wiki/Rigveda#cite_note-rigveda-39
[42] https://en.wikipedia.org/wiki/Rigveda#cite_note-rigveda-39

5. ऋग्वेद का काल

ऋग्वेद के अस्तित्व को भारतीय विद्वान् आदि काल से मानते हैं। उनके अनुसार वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने उत्पन्न किए थे जिनका बाद में ऋषियों को आत्म दर्शन हुआ था (शास्त्री तथा पाण्डेय, 1994)। किन्तु इनके अस्तित्व पर प्रश्न पाश्चात्य विद्वानों ने खड़ा किया। उन्होंने वेदों के रचनाकाल निर्धारण का प्रयास अनेक तथ्यों के आधार पर प्रारम्भ किया तथा उसके पश्चात् भारतीय विद्वानों ने भी इस क्षेत्र में रुचि दिखाई (शर्मा, 2010)। किन्तु सभी विद्वान् इस मत पर एक हैं कि ऋग्वेद सम्पूर्ण विश्व में सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। यह प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वैदिक परिपाटियों, ज्ञान-विज्ञान, प्राचीन इतिहास आदि का पथ प्रदर्शक है। यद्यपि इसके रचनाकाल निर्धारण के लिए इस ग्रन्थ द्वारा ऐसा कोई भी सूत्र या संकेत नहीं दिया गया है इसीलिए ऋग्वेद का रचनाकाल निर्धारण वैदिक साहित्य इतिहास की एक जटिल समस्या है (शास्त्री तथा पाण्डेय, 1994)। विभिन्न विद्वानों ने भाषा, रचनाशैली, धर्म एवं दर्शन, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष, उत्खनन में प्राप्त सामग्री, अभिलेखों आदि के आधार पर ऋग्वेद के रचनाकाल को निर्धारित करने का यथासम्भव प्रयास किया है। किन्तु इन प्रयासों के आधार पर वर्तमान समय तक कोई सर्वमान्य रचनाकाल निर्धारित नहीं हो सका है। विद्वानों द्वारा किए गए प्रयासों को यहाँ एकत्र करके प्रस्तुत किया गया है।

5.1. शिलालेख के आधार पर

शिलालेखों को आधार मानकर किया गया काल निर्धारण प्राचीन फ़ारसी शिलालेखों में प्राप्त राजाओं और भारतीय राजाओं के नामों का मिलान करके किया है। प्रो जी. ह्यूसिंग के द्वारा उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार आर्य आरमेनिया से अफ़गानिस्तान गए थे। वह ऋग्वेद के मन्त्रों की व्याख्या से अफ़गानिस्तान के स्थलों को दर्शाते हैं तथा पूर्वकालीन फ़ारसी अभिलेखों में आए राजाओं के नामों को वह इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि वे भारतीय राजाओं के नामों के तुल्य आभासित होते हैं। उनके अनुसार ऋग्वेद का यह काल 1000 ई. पू. के नज़दीक रहा होगा (गुप्ता, 2011)।

5.2. भाषाविज्ञान के आधार पर

भाषा विज्ञान को आधार मानकर ऋग्वेद का काल निर्धारण ऋग्वेद और अवेस्ता के परस्पर भाषागत तथा धर्मगत सम्बन्ध को आधार मानकर किया गया है।

मैकडॉनल ने वेद और अवेस्ता में दृश्यमान भाषा तथा धर्म के मूल से ऋग्वेद का कालनिर्धारण करने का प्रयास किया था। उनका मानना था कि अवेस्ता की भाषा में स्थापित धर्म का अटूट नाता ऋग्वेद की भाषा में स्थापित धर्म से है। उनके अनुसार ऋग्वेद तथा अवेस्ता भाषा का मिलान करने पर दोनों के मध्य भिन्नता का रूप स्पष्ट हो जाएगा तथा यह रूप अवेस्ता की 500 वर्ष पूर्व जो भाषा रही होगी उसमें दृश्यमान होता होगा। लगभग 800 ई. पू. अवेस्ता का सर्वाधिक प्राचीन अवशेष है। इस स्थिति को देखते हुए ऋग्वेद की अवस्था अवेस्ता से 500 वर्ष पूर्व होगी तथा ऋग्वेद का काल करीब 1300 ई. पू. होगा (शास्त्री एवं पाण्डेय, 1994 तथा उपाध्याय, 1996)।

5.3. ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर

ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर ऋग्वेद का काल निर्धारण बुद्ध और महावीर के कालों को देखकर किया गया है। बुद्ध तथा महावीर ने वेदों के नाम पर जो पाखण्ड हो रहे थे उनका विरोध किया था अतः वेदों की उपस्थिति बुद्ध और महावीर से पूर्व ही थी (उपाध्याय, 1996)। ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर काल निर्धारण मैक्समूलर, ह्विटनी, केगी तथा विन्टरनिट्ज़ ने किया है।

1. मैक्समूलर ने गौतम बुद्ध का अन्तिम काल 477 ई. पू. माना है जो ग्रीक इतिहासकारों के अनुसार है। बौद्ध धर्म की स्थापना से पूर्व सम्पूर्ण वैदिक साहित्य की रचना हो चुकी होगी क्योंकि गौतम बुद्ध ने वैदिक संस्कृति का घोर विरोध किया था (गैरोला, 1960; शास्त्री, 1972; शास्त्री एवं पाण्डेय, 1994; उपाध्याय, 1996; उपाध्याय, 2006 तथा द्विवेदी, 2010)। मैक्समूलर ने वैदिक वाङ्मय के युग को छन्दकाल, मन्त्रकाल, ब्राह्मणकाल तथा सूत्रकाल में विभाजित किया था। सर्वप्रथम विभाजन छन्दकाल की

सत्ता को 1200-1000 ई. पू. तक स्वीकार किया था जिसमें उन्होंने निविद् आदि स्फुट वैदिक मन्त्रों का गठन माना था। द्वितीय विभाजन मन्त्र काल की सत्ता को 1000-800 ई. पू. तक स्वीकार किया था जिसमें उन्होंने वैदिक संहिताओं का गठन तथा उनका एकत्रीकरण माना था। तृतीय विभाजन ब्राह्मण काल की सत्ता को 800-600 ई.पू, तक स्वीकारा था जिसमें उन्होंने ब्राह्मण ग्रन्थों का गठन माना था। अन्तिम विभाजन सूत्रकाल की सत्ता 600-400 ई. पू. मानी थी जिसमें श्रौतसूत्रों, गृह्यसूत्रों आदि का गठन किया गया था (गैरोला, 1960 तथा उपाध्याय, 2006)। मैक्समूलर के अनुसार मन्त्रकाल के 200 वर्षों के समय में ऋषियों की पूर्व युग की रचनाओं को एकत्रित कर लिया गया होगा तथा नए मन्त्रों की रचना भी इस अवधि में हो गई होगी। मैक्समूलर ने दो श्रेणियों में मन्त्रकाल (1000-800 ई. पू.) को रखा जिनमें प्रथम में ऋग्वेद के दृश्य नूतन ऋषियों के वंशों को तथा द्वितीय में मन्त्र एकत्रित करने वालों को माना है। उन्होंने छन्दकाल को मन्त्रकाल से पूर्व रखा है। उनके अनुसार छन्दकाल में रचे गए मन्त्रों को भी ऋग्वेद में एकत्रित किया गया था। मैक्समूलर ने 200 वर्षों का ही समय छन्द काल के लिए मानते हुए इसका काल 1200 ई. पू. के लगभग माना। इन तथ्यों के आधार पर मैक्समूलर ने सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय की रचना 1200 ई. पू. के बाद मानी थी (Chakravorti, 1978 तथा शर्मा, 2010)। कुछ समय पश्चात् मैक्समूलर ने स्वयं अपनी इस त्रुटि को स्वीकारा। उन्होंने 1890 ई. में हुए जिफोर्ड व्याख्यानमाला में अपना मत दिया कि 'हम वेदों के रचनाकाल को निश्चित नहीं कर सकते हैं' (Chakravorti, 1978 तथा उपाध्याय, 1996)।

2. मैक्समूलर द्वारा विभाजित चारों कालों को ह्विटनी (Whitney) भी मानते हैं। परन्तु वे वेदों के समय में थोड़ा परिवर्तन करते हैं। वे वेदों की अन्तिम सीमा 2000 ई. पू. से 1500 ई. पू. मानते हैं जिसे केगी (Kaegi) भी स्वीकार करते हैं (गुप्ता, 2011)।

3. डॉ. विन्टरनिट्ज़ ने वेदों का प्रारम्भिक समय 2500-2000 ई. पू. से अन्तिम समय 750-500 ई. पू. माना है। उनके अनुसार वेद बुद्ध तथा महावीर से पहले स्थापित् हो चुके थे। इसलिए उनका अन्तिम काल बुद्ध तथा महावीर से पहले ही रहा होगा (गैरोला, 1960 तथा Winternitz, 1972)।

5.4. अभिलेखशास्त्र के आधार पर

अभिलेखशास्त्र को आधार बनाकर बोगाज़कोई नामक स्थान में खुदाई करके निकाली गईं वस्तुओं के आधार पर ह्यूगो विंकलर, हर्टल तथा आर. जी. भण्डारकर ने काल निर्धारण किया है।

1. हर्टल (Hertal) का कहना है कि ऋग्वेद का उद्भव काल जरथ्रुष्ट (500 ई. पू.) के आस-पास रहा होगा तथा उसका निर्माण स्थान उत्तर पश्चिम भारत नहीं ईरान है (उपाध्याय, 1996)।
2. रामकृष्ण गोपाल भण्ड़ारकर का मत है कि आर्यों ने अपने मूलस्थान मेसोपोटामिया में ऋग्वेद के 10 मण्डलों तथा अथर्ववेद के 20 काण्डों में एकत्रित सूक्तों को रचा था। भण्डारकर का मानना है कि खुदाई में प्राप्त 1500 ई. पू. के बोगाज़कोई अभिलेख में उल्लिखित सन्धि से पहले आर्य भारत में विभिन्न जातियों में आ चुके थे। लेकिन 1500 ई. पू. के बाद भारत में उन आर्यों ने प्रवेश लिया जिनका निवास स्थान असीरियावासियों के पडोस में था। इन मतों के आधार पर भण्ड़ारकर के अनुसार 1500 ई. पू. में ऋग्वेद की रचना हो चुकी थी (उपाध्याय, 1996)।
3. एशियामाइनर (Asiaminor) में स्थित बोगाज़कोई में ह्यूगो विंकलर ने खुदाई सन् 1907 में करवाई थी जिसमें 14 शताब्दी ई. पू. के शुरु में हित्तियों के राजा सुब्बीलूलिउम तथा मित्तानियों के राजा मत्तीउअज के मध्य हुईं संधियों का उल्लेख कुछ मिट्टी की मुद्राओं में प्राप्त होता है। जो प्राचीन हित्ती साम्राज्य की राजधानी के दबे अवशेषों में एकत्रित की गईं थीं। एक राजकेय अनुशासन के रुप में मित्तानियों के देवता

मित्र, वरुण, इन्द्र, तथा नासत्या के साथ बेबीलोनियन तथा हित्ती देवताओं को बुलाया गया है। इस शिलालेख का समय 1400 ई. पू. है। अतः वैदिक सभ्यता का उदय उससे पूर्व ही हुआ होगा तथा वेदों का समय भी उससे पूर्व ही रहा होगा (शास्त्री, 1972 तथा झा, 2004)।

5.5. महाकाव्यग्रन्थों के आधार पर

ग्रन्थों के साक्ष्यों को आधार मान कर किए गए काल निर्धारण का आधार रामायण, महाभारत तथा पुराण हैं।

ड़ी. आर. मंकड़ ने ऋग्वेद के काल निर्धारण के लिए वैदिक काल के ऋषियों से रामायण, महाभारत तथा पुराणों में आए ऋषिनामों जोड़ने की कोशिश की है। उन्होंने पूर्वरामकाल, रामकाल, उत्तर रामकाल तथा महाभारतकाल के विभाजन से ऋग्वेद के सूक्तों की रचना को चार कालों में माना है। ऋग्वेद के 1028 सूक्तों में से उनके अनुसार 774 सूक्तों की रामकाल में, 48 सूक्तों की पूर्व रामकाल में, 101 सूक्तों की उत्तर रामकाल में तथा 23 सूक्तों की महाभारत काल में रचना हुई थी तथा शेष 82 सूक्त सन्देहास्पद हैं। उन्होंने पौराणिक पद्धति की सहायता लेते हुए माना है कि युधिष्ठिर से लगभग 30 पीढी पहले राम का काल था। युधिष्ठिर का राज्य 3201 ई. पू. में समाप्त हुआ था। एक पीढी में उन्होंने 25 वर्ष का समय माना है। इस प्रकार 30 पीढीयों में 750 वर्ष हुए। युधिष्ठिर से 750 वर्ष पूर्व राम हुए थे। राम का काल 3750 ई. पू. है। उनके अनुसार ऋषियों ने ऋग्वेद की रचना इसी काल में करी होगी (उपाध्याय, 1996)।

5.6. ज्योतिष के आधार पर

ज्योतिष के आधार पर ऋग्वेद का कालनिर्धारण याकोबी, शंकर बालकृष्ण दीक्षित तथा लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने किया था तथा ऋग्वेद के साक्ष्यों के आधार पर भी कुछ बिन्दुओं को प्रस्तुत किया है।

1. याकोबी ने वेदों के काल गणना के लिए ब्राह्मण ग्रन्थों को आधार माना है। ब्राह्मण ग्रन्थ के अनुसार उस काल में कृतिका नक्षत्र का उदय था। अयन गति की गणना से इस नक्षत्र का काल 2500 ई. पू. है। विवाह के समय प्रयुक्त 'ध्रुव के समान स्थिर हो'[43] (ध्रुवं इव स्थिरीभव) वाक्य में आए ध्रुव शब्द का अर्थ याकोबी ने ज्योतिर्विज्ञान के सिद्धान्त पर किया था। उन्होंने लगभग 2780 ई. पू. के आस-पास उस नक्षत्र की ध्रुव स्थिति को माना है। इस आधार पर उन्होंने ऋग्वेद का रचनाकाल 4500-2500 ई. पू. माना है (अवस्थी, 1983 तथा झा, 2004)।

2. वेद काल निर्धारण के लिए तिलक तथा दीक्षित का एक ही सिद्धान्त था। इन्होंने नक्षत्रों की सङ्ख्या 27 कही है। सूर्य का 360 डिग्री का संक्रमण चक्र या राशिचक्र (Zodiac) कहा है। सभी नक्षत्रों की स्थिति में एक जैसा अन्तर नहीं है। फिर भी उसको एक जैसा मानकर 360 डिग्री को 27 से भाग करने पर 13 + 1/3 डिग्री प्रत्येक नक्षत्र का स्थिति में अन्तर निर्धारित होता है। हर एक नक्षत्र अपने स्थिति से नियमानुसार पीछे की ओर बढ़ता है। 72 वर्ष में एक नक्षत्र एक डिग्री पीछे हटता है। एक नक्षत्र को दूसरे नक्षत्र की स्थिति प्राप्त करने में 72 x 13+1/3 = 960 वर्ष लगते हैं (द्विवेदी, 2010)। श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित के अनुसार शतपथ ब्राह्मण[44] (स्वामि, 1987) के रचनाकाल में कृत्तिकाएँ ठीक पूर्वी बिन्दु पर उदित होती थीं। वर्तमान में वसन्त-सम्पात का पूर्वा भाद्रपद के चतुर्थ चरण में उदय होता है। इससे यह पता चलता है कि कृतिका नक्षत्र अपने स्थान से $4^{3/4}$ नक्षत्र से भरणी, अश्विनी, रेवती और उत्तरा भाद्रपद से गुजरते हुए पीछे की ओर हट गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि 960 x $4^{3/4}$ = 4560 वर्ष पूर्व कृत्तिका में वसन्त-सम्पात हुआ होगा। यही काल शतपथ ब्राह्मण का भी रहा होगा। इस

---

[43] अस्तमिते सूर्ये ध्रुवमुदीक्षस्वेति प्रैषानन्तरं ध्रुवं पश्यति वधुः। तत्र मन्त्रः- ऊँ ध्रुवमसि ध्रुव पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि मह्यं त्वाऽदात् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम्। (अवस्थी, 1983)।

[44] एकं द्वे त्रीणि चत्वारीति वा अन्यानि नक्षत्राणि, अथैता एव भूयिष्ठा यत् कृत्तिकास्तद् भूमानमेवै तदुपैति तस्मात् कृत्तिकास्वादधीत। एता ह वै प्राच्यै दिशो न च्यवन्ते। सर्वाणि ह वा अन्यानि नक्षत्राणि प्राच्यै दिशश्च्यवन्ते। (शत. ब्रा. 2.1.2.3)।

प्रकार शतपथ ब्राह्मण का रचना काल 2500 ई. पू. सिद्ध होता है तथा वेद उससे भी प्राचीन हैं । अतः उनके अनुसार वेदों के रचनाकाल के लिए 250 x 4= 1000 वर्ष अधिक मानने पर ऋग्वेद का रचनाकाल 3500 ई. पू. के करीब रहा होगा (Chakravorti, 1978 तथा उपाध्याय, 1996) ।

3. ज्योतिष गणना के सिद्धान्त से लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद के निर्माण का समय 6000 ई. पू. से 4000 ई. पू. के समीप माना है (गैरोला, 1960 तथा शर्मा, 2010) । उन्होंने इस तिथि का निर्धारण अलग-अलग नक्षत्रों में वसन्त-सम्पात की स्थिति के आधार पर किया है । उन्होंने वैदिक साहित्य के काल को चार भागों में विभाजित किया है । तिलक ने प्रथम अदिति काल (6000-4000 ई. पू.) में मन्त्रों की रचना मानी है । द्वितीय मृगशिरा काल (4000-2500 ई. पू.) में ऋग्वेद के अधिकांश सूक्तों की रचना मानी है । तृतीय कृत्तिका काल (2500-1400 ई. पू.) में चारों वेदों का संकलन, तैत्तिरीय संहिता तथा कुछ ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना मानी है । अन्तिम सूत्र काल (1400-400 ई. पू.) में सूत्र और दर्शन ग्रन्थों की रचना मानी है । इस प्रकार तिलक जी ने चार काल माने हैं । तिलक ने पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों के सिद्धान्तों में समरसता बिठाने के लिए वेदों का काल 4000 ई. पू. मानने पर जोर दिया है । उन्होंने वेदों का अन्तिम काल 4000 ई. पू. माना है (शास्त्री एवं पाण्डेय, 1994 तथा द्विवेदी, 2010) । लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने सन् 1893 ई. में ओरायन नामक ग्रन्थ प्रकाशित करवाया था (उपाध्याय, 1997) । श्री बाल गंगाधर तिलक ने दीक्षित के सिद्धान्त को मानकर वसन्त-सम्पात को मृगशिरा नक्षत्र में ऋग्वेद[45] (सातवलेकर, 1967) के प्रमाणों के आधार पर माना तथा उसके बाद वह उसकी स्थिति पुनर्वसु नक्षत्र में ले जाते हैं ।

---

[45] (1) न्याविध्यदिलीविशस्य दृलहा ।
विश्शृंगिणमभिनच्छुष्णमिन्द्र ॥ (ऋ. 1/33/12) ।
(2) यद्ध त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ (ऋ. 1/80/7) ।
(3) शिरोन्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः । (ऋ. 10/86/5) ।

कृत्तिका मृगशिरा से दो नक्षत्र पूर्व में है। 960 वर्षों में एक नक्षत्र अपनी स्थिति से अलग हटता है। वसन्त-सम्पात को मृगशिरा नक्षत्र में मानने पर ऋग्वेद का समय 4560 + 1920 = 6480 वर्ष (लगभग 6500 वर्ष) पूर्व या लगभग 4500 वर्ष ई. पू. माना जा सकता है। तथा वसन्त-सम्पात को पुनर्वसु नक्षत्र में मान लिया गया तो करीब 2000 वर्षों का समय और बढ़ जाएगा। तब ऋग्वेद का रचना काल 6500 ई. पू. हो जाएगा (उपाध्याय, 2006 तथा द्विवेदी, 2010)।

4. ज्योतिष के प्रमाण ऋग्वेद[46] (सातवलेकर, 1967) में भी प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद के 10/85/13 मन्त्र में वर्णन है कि दक्षिणायन के ओर आते समय सूर्य का वेग धीमा हो जाता था तथा मघा में जाकर थम जाता था। उसके बाद उत्तरायण वेग का प्रारम्भ होता था तथा फाल्गुनी में सूर्य की गति में तेजी आती थी। उस समय में सूर्य उत्तरायण वेग में सिंह राशि में निकलता था। वर्तमान समय में मकर राशि में उत्तरायण चार महीने बाद निकलता है। वर्तमान से 18000 वर्ष पूर्व का यह प्रमाण ऋग्वेद के मन्त्र (ऋ. 10/85/13) में मिलता है। इस प्रमाण के आधार पर यह सिद्ध करने की कोशिश की गई है कि ऋग्वेद के कुछ मन्त्रों की रचना वर्तमान से लगभग 18000 वर्ष पूर्व हुई है, तथा कुछ मन्त्रों का रचनाकाल 75000 वर्ष पूर्व रहा होगा (अवस्थी, 1983)।

5.7. ऋग्वेद के आधार पर

ऋग्वेद संहिता का अध्ययन कर प्राप्त किए गए साक्ष्यों के आधार पर ऋग्वेद का रचना काल निर्धारित करने का प्रयास नारायण राव भवनराव पारंगी, सम्पूर्णानन्द तथा अविनाशचन्द्र दास द्वारा किया गया है।

---

[46] सूर्याया वहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत।
अघासु हन्यन्ते गावोऽर्जुन्योः पर्युह्यते॥ (ऋ. 10/85/13)।

1. नारायण राव भवनराव पारंगी ने भूगर्भ शास्त्र के सिद्धान्त के आधार पर ऋग्वेद की भौगोलिक स्थितियों का अध्ययन करके ऋग्वेद का रचनाकाल निर्धारित किया है । ऋग्वेद के मन्त्र[47] (सातवलेकर, 1967) में यह वर्णित है कि 'सप्तसैंधव प्रदेश दोनों तरफ से समुद्र से घिरा हुआ था' । इन्होंने ऋग्वेद में उल्लिखित दक्षिणी समुद्र को राजपूताने में माना है । ऋग्वेद में वर्णित है कि सरस्वती नदी दक्षिणी समुद्र में गिरती थी । इसके अनुसार दक्षिणी समुद्र राजपूताना में ही रहा होगा । इन प्रमाणों से इन्होंने यह प्रमाणित किया है कि करीब 9000 वर्ष पूर्व इस प्रकार की भौगोलिक स्थिति रही होगी तथा वही ऋग्वेद रचना का युग रहा होगा (शास्त्री एवं पाण्डेय, 1994) ।
2. डॉ. सम्पूर्णानन्द ने ऋग्वेद[48] (सातवलेकर, 1967) के प्रमाण से माना है कि समुद्र सप्तसैन्धव प्रदेश के उत्तर, दक्षिण तथा पूर्व दिशा में विद्यमान था । आज के समय में यहाँ पर कश्मीर की उपत्यका, राजपूताना तथा उत्तर प्रदेश स्थित हैं । भूगर्भशास्त्र विदों के अनुसार यह स्थिति आज से लगभग 25000 से 50000 वर्ष पूर्व रही होगी । उस काल में पर्वत अस्थिर थे, पृथ्वी में समय-समय पर भूकम्प आते थे तथा हिमालय समुद्र से उपर की ओर उठ रहा था । इस स्थिति को आर्यों ने देखा होगा । इन्द्र से प्रार्थना करते हुए ऋग्वेद[49] (सातवलेकर, 1967) में कई बार यह वर्णन आता है कि इन्द्र ने अस्थिर पर्वतों को स्थिर किया तथा पृथ्वी के कंपन को सुदृढ़ किया (अवस्थी, 1983 तथा सिंह, 1990)।
3. श्री अविनाशचन्द्र दास के अनुसार ऋग्वेद के कुछ सूक्त उस युग के हैं जब राजपूताना तथा संयुक्त प्रान्त समुद्र के मध्य में था (अवस्थी, 1983) । ऋग्वेद[50] (सातवलेकर, 1967) के अनुसार सरस्वती हिमालय से बहकर समुद्र में गिरती थी (अवस्थी, 1983; उपाध्याय,

---

[47] वातस्याश्वो वायोः सखाथो देवेषितो मुनि ।
उभौ समुद्रावा क्षेति यश्च पूर्वं उतापरः ॥ (ऋ. 10/136/05) ।

[48] ऋग्वेद के निम्नांकित मन्त्रों में चार समुद्रों का वर्णन हुआ है ।
1. समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं । (ऋ. 9/33/6) ।
2. चतुः समुद्रं धरुणं । (ऋ. 10/47/2) ।

[49] यः पृथिवी व्यथमानाम्दृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात् । (ऋ. 2/12/2) ।

[50] एकाचेतत् सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात् । (ऋ. 7.95.2) ।

1996 तथा उपाध्याय, 2006)। आज से लगभग 25000 वर्ष पूर्व उस काल को टशेरी युग कहा जाता था। अविनाशचन्द्र दास के अनुसार ऋग्वेद की रचना का प्रारम्भ आज से लगभग 25000 वर्ष पूर्व हो गया था (अवस्थी, 1983 तथा द्विवेदी, 2010)।

5.8. भूगर्भीय तथ्य के आधार पर

भूगर्भीय तथ्यों का अध्ययन कर कैलाशनाथ द्विवेदी जी ने ऋग्वेद का काल निर्धारण करने का प्रयास किया है।

कैलाशनाथ द्विवेदी के अनुसार ऋग्वेद में राजस्थान में मौज़ूद सरस्वती नदी के साथ में ही दक्षिणी सारस्वत समुद्र का सूखना, दक्षिण में स्थित सप्तसिन्धु का समुद्र तल से बाहर आना, पृथ्वी में आए भूकम्पों के कारण हिमालय का जन्म होना एवं नदियों के रास्ते में परिवर्तन जैसे प्रमुख प्रकरणों का उल्लेख न होने का मतलब है कि ये सारे प्रकरण ऋग्वेद के निर्माणकाल से बाद के हैं (अवस्थी, 1983)।

5.9. अन्य मत के आधार पर

ऋग्वेद के काल निर्धारण के लिए अनेक तथ्यों पर आधारित कुछ अन्य मत भी प्राप्त होते हैं।

1. श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों आदि[51] (सातवलेकर, 1965 तथा स्वामि, 1987) में आए मन्त्रों के आधार पर यह स्थापित किया है कि सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा ने वेदों को उत्पन्न किया था। परमात्मा ने ऋग्वेद को अग्नि से, यजुर्वेद को वायु से तथा सामवेद और अथर्ववेद को सूर्य से उत्पन्न किया है (अवस्थी, 1983 तथा द्विवेदी, 2010)।

---

[51] (1) तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ (यजु. 31.7)।
(2) यस्माद् ऋचो.. यजुः.. सामानि.. अथर्वाङ्गिरसः०॥ (अथर्व. 10.7.20)।
(3) अग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् सामवेदः। (शत. ब्रा. 11.5.8.3)।
(4) अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थम् ऋग्यजुः सामलक्षणम्। (मनु. 1.23)।

2. रघुनन्दन शर्मा ने भी स्वामी दयानन्द सरस्वती के मत को माना है। भारतीय पञ्चांग में 2000 ई. में 1,95,58,85,101 सृष्टिसंवत तथा 5101 कलिसंवत् था। मनुस्मृति[52] (शास्त्री, 1983) के अनुसार इसमें सत्ययुग में 17,28,000 वर्ष, त्रेतायुग में 12,96,000 वर्ष, द्वापरयुग में 8,64,000 वर्ष तथा कलियुग में 4,32,00 वर्ष सङ्ख्या वाले 6 मन्वन्तर पूर्ववर्ती हैं। स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत तथा चाक्षुष को बीते हुए 6 मन्वन्तर माना गया है (द्विवेदी, 2010)।

5.10. निष्कर्ष

इन विभिन्न मतों को देखकर ज्ञात होता है कि ऋग्वेद किसी एक काल का नहीं रहा होगा क्योंकि विभिन्न तथ्य उसे अलग-अलग काल में सिद्ध करते हैं। ज्योतिष से सम्बन्धित तथ्यों से की गई काल गणना को अब तक सबसे ज्यादा ठोस साक्ष्य माना जाता है तथा इसे भूगर्भीय तथ्य तथा अभिलेखशास्त्र के तथ्य भी ज्योतिष की गणना के आस-पास ही सिद्ध करते हैं। अन्य तथ्यों के आधार अस्पष्ट तथा काल्पनिक सिद्ध होते हैं। ज्योतिष के साक्ष्यों के आधार पर अलग-अलग क्षेत्र के विद्वानों ने एक प्रकार का समय निर्धारित किया है। तिलक और दीक्षित ने नक्षत्रों के आधार पर तथा याकोबी ने ध्रुव तारे के आधार पर 4000 ई. पू. के आसपास वेदों का तथा 6000 ई.पू के आसपास ऋग्वेद का समय निश्चित किया है। अतः हम ऋग्वेद का काल निर्धारण 6000 ई. पू. से लेकर 4000 ई. पू. के आस-पास के मान सकते हैं क्योंकि इससे भारतीय और पाश्चात्त्य विद्वानों के परस्पर विरोधी मतों में साम्य बनाया जा सकता है। किन्तु वर्तमान तथा भविष्य में इस पर अधिक कार्य की आवश्यकता है तथा कार्य हो भी रहे हैं। नई खुदाईयों तथा नए अवशेषों एवं नए अभिलेखों के मिलने से तथा भूगर्भीय तथ्यों की नई खोजों से ऋग्वेद के रचनाकाल में अभी नए तथ्य भी सामने आयेंगें जिन्हें साथ लेकर ऋग्वेद का कालनिर्धारण करने की कोशिश की जाएगी।

---

[52] 1. इतरेषु संसध्येषु संसध्यांशेषु च त्रिषु। एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च॥ (मनु. 1.70)।

2. स्वारोचिषश्चोत्तमश्च तामसो रैवतस्तथा। चाक्षुषश्च महातेजा विवस्वत्सुत॥ (मनु. 1.62)।

3. स्वायंभुवाद्याः सप्तैते मनवो भूरितेजसः। स्वे स्वेऽन्तरे सर्वमिदमुत्पाद्यापुशराचरम्॥ (मनु. 1.63)।

किन्तु वर्तमान में उपलब्ध मतों के आधार पर हम ऋग्वेद का काल निर्धारण 6000 ई. पू. से लेकर 4000 ई. पू. के मध्य के मान सकते हैं।

क्रं.	लेखक	अनुवाद भाषा	वर्ष
1.	मैक्समूलर	संस्कृत, अंग्रेजी	1849-1875
2.	अल्फ्रेड लुड़विग	अंग्रेजी	1876-88
2.	शिवनाथ अहिताग्नि	संस्कृत, हिन्दी	1904
3.	Ralph T. H. Griffith	English	1920
4.	Karl F. Geldner	German	1926
5.	गजाराम शास्त्री तथा शिवराम शास्त्री	हिन्दी	1929
6.	जयदेव शर्मा	हिन्दी	1935
7.	सायण	संस्कृत	1936
8.	डॉ. लक्ष्मण स्वरूप	संस्कृत	1939-55
9.	विश्वबन्धु	संस्कृत	1965
10.	युधिष्ठिर मीमांसक	संस्कृत	1973
11.	आचार्य धर्मदेव सरस्वति	अंग्रेजी	1978
12.	H.H. Wilson	English	1978
13.	श्रीपाद दामोदर सातवलेकर	हिन्दी	1980
14.	पं. रामगोविन्द त्रिवेदी	संस्कृत, हिन्दी	1991
15.	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य तथा भगवती देवी शर्मा	हिन्दी	1995
16.	रवि प्रकाश आर्य तथा के. एल. जोशी	अंग्रेजी	2005
17.	पं. ईश्वर चन्द्र तथा कन्हैयालाल जोशी	हिन्दी	2011
18.	भीष्मदत्त शर्मा	हिन्दी	2013
19.	रूपकिशोर शास्त्री तथा अमलधारी सिंह गौतम	हिन्दी	2013

तालिका 1.10: ऋग्वेद पर उपलब्ध भाष्य

6. ऋग्वैदिक भाष्यों, निरुक्त तथा वैदिक व्याकरण का संक्षिप्त परिचय

वेद के सरलार्थ हेतु विद्वानों ने मन्त्रों पर भाष्य रचे तथा वेदों को समझने के लिए नवीन दृष्टि प्रदान की। इसी क्रम में निरुक्त तथा वैदिक व्याकरण की भी महत्ता वर्णित है।

6.1. ऋग्वैदिक भाष्यों का संक्षिप्त परिचय

ऋग्वेद पर प्राचीन तथा अर्वाचीन लेखकों के भाष्य प्राप्त होते हैं। इन भाष्यों में प्रमुख सायण, दयानन्द, सातवलेकर आदि विद्वानों के हैं। ऋग्वेद संहिता पर सायण द्वारा रचित भाष्य का समीक्षात्मक संस्करण पाँच भागों में वैदिक संशोधन मण्डल, पूना से सन् 1936 में प्रकाशित किया गया था। ऋग्वेद संहिता के सायण भाष्य पर मैक्समूलर ने समीक्षात्मक संस्करण बनाया था। इसका प्रथम प्रकाशन उन्होंने लन्दन से किया था। इसको तैयार करने में उन्होंने 1849-1875 ई. तक का समय लगाया था। इसका द्वितीय प्रकाशन सन् 1966 में चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी से 4 भागों में किया गया था। श्रीपाद दामोदर सातवलेकर द्वारा रचित ऋग्वेद का सुबोध भाष्य का प्रकाशन सन् 1980 में स्वाध्याय मण्डल, पारड़ी से हुआ था। यह ग्रन्थ पाँच भागों में प्रकाशित है। ऋग्वेद पर एक अन्य भाष्य को 9 भागों में शिवनाथ अहिताग्नि ने प्रकाशित किया है। यह ग्रन्थ नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, दिल्ली से 1904 में प्रकाशित हुआ था। विश्वबन्धु ने भी ऋग्वेद पर एक महत्त्वपूर्ण भाष्य प्रकाशित किया था। इसमें उन्होंने स्कन्दस्वामी, वेंकटमाधव तथा मुद्गल द्वारा रचित भाष्यों को समाहित किया है। इसका प्रथम संस्करण सन् 1965 में विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थानम्, होशियारपुर से 7 भागों में प्रकाशित किया गया था। ऋग्वेद पर एक अन्य भाष्य में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य तथा भगवती देवी शर्मा ने हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की है। इसका प्रकाशन शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार से सन् 1995 में किया गया था।

पण्डित रामगोविन्द त्रिवेदी ने सन् 1991 में 6 भागों में ऋग्वेद पर भाष्य चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी से प्रकाशित किया था। इसमें उन्होंने सायण भाष्य को तथा उसका हिन्दी में अर्थ करके सम्पादित किया है। ऋग्वेद पर एक अन्य भाष्य युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सन् 1973 में

सम्पादित किया गया था । इसमें उन्होंने दयानन्द भाष्य के साथ ही उसका हिन्दी अर्थ भी दिया था। इसका प्रकाशन रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ ने किया था । एक अन्य भाष्य में जियालाल कम्बोज़ ने प्राचीन आचार्यों के भाष्यों तथा आधुनिक अनुवादकों तथा व्याख्याकारों की कृतियों से प्राप्त टिप्पणियों को दिया है । इसका प्रकाशन सन् 2004 में विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली से 7 भागों में किया गया है । ऋग्वेद पर गोविन्द चन्द्र पाण्डे ने भी 10 भागों में भाष्य सम्पादित किया था । इसका प्रकाशन लोकभारती, इलाहाबाद द्वारा सन् 2010 में किया गया था । इसमें उन्होंने मन्त्रों का हिन्दी अर्थ तथा कविता के माध्यम से व्याख्या की है । इन भाष्यों के अतिरिक्त भी कुछ अन्य भाष्य प्राप्त होते हैं जिन्हें सूची के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है । ऋग्वेद पर अन्य भाषाओं में भी अनेकों भाष्य किए गए हैं । जो इसकी महत्ता को प्रदर्शित करते हैं । इसकी सूची तालिका संख्या 1.10 में दी गई है ।

क्रं.	लेखक	पुस्तक	वर्ष
1.	V. S. Ghate	Lectures on the Rigveda	1915
2.	A. A. Macdonell	A Vedic reader for Students	1917
3.	हरिदत्त शास्त्री	ऋक्सूक्त संग्रह	1960
4.	पं. बुद्धदेव विद्यालंकार	ऋग्वेद मण्डल-मणि-सूत्र	1964
5.	स्वामी दयानन्द सरस्वति	ऋग्वेद भाष्य भूमिका	1968
6.	ह. रा. दिवेकर	ऋक् सूक्त विकास	2004
7.	Peter Peterson	Hymns from the Rigveda	1974
8.	अरविन्द	अग्निमन्त्रमाला	1976
9.	डॉ. हरिदत्त शास्त्री	ऋक् सूक्त संग्रह	1985
10.	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वति	ऋग्वेद सूक्ति सुधा	1989
11.	रङ्गनाथ कट्टि तथा शंकरपाराय	ऋगर्थोद्धारः	2006
12.	व्रज बिहारी चोबे	ऋक् सूक्त मणि माला	2010

तालिका 1.11: ऋग्वेद के महत्त्वपूर्ण अंशों के भाष्य

6.2. ऋग्वेद के महत्त्वपूर्ण अंशों पर भाष्य

कुछ विद्वानों ने सम्पूर्ण संहिता पर भाष्य न प्रस्तुत करके किसी भी वेद की संहिता के प्रमुख अंश पर भाष्य लिखा है । यह अंश उन लेखकों के द्वारा महत्त्वपूर्ण भी हो सकता है अथवा समयाभाव में या केवल अपने प्रिय अंश पर उन्होंने भाष्य प्रस्तुत किया होगा । इन भाष्यों के नाम की सूची तालिका संख्या 1.11 में दी गई है ।

6.3. निरुक्त

निरुक्त के रचयिता यास्क हैं । उनका काल 800 ई. पू. से 700 ई. पू. के मध्य माना गया है (Varadachari, 1960; शास्त्री, 1972; शर्मा, 2010 तथा द्विवेदी, 2010) । निरुक्त में वैदिक शब्दों के अर्थ का निश्चय किया गया है । यह शब्दों की व्युत्पत्ति या निर्वचन के द्वारा अर्थ को स्पष्ट करता है। आधुनिक काल में यह भाषाविज्ञान की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमें शब्दों के मूल अर्थ का ज्ञान किया जाता है । निरुक्त में निघण्टु के शब्दों की विस्तार पूर्वक व्याख्या की गई है (Varadachari, 1960; शास्त्री, 1972; शास्त्री एवं पाण्डेय, 1994; झा, 2004; उपाध्याय, 2006; शर्मा, 2010; द्विवेदी, 2010 तथा तिवारी, 2014) । निघण्टु एक कोष है जिसमें वैदिक शब्दों का संग्रह किया गया है । इसमें 5 अध्याय हैं जिसमें 1768 शब्दों का संकलन किया गया है । इसके प्रथम अध्याय में पृथिवी, हिरण्य, मेघ आदि 17 समानार्थक शब्द हैं जिनकी सङ्ख्या 414 है, द्वितीय अध्याय में मनुष्य, अन्न, धन, गो आदि 22 समानार्थक शब्द हैं जिनकी सङ्ख्या 514 है, तृतीय अध्याय में बहु, ह्रस्व, प्रज्ञा, यज्ञ आदि 30 समानार्थक शब्द हैं जिनकी सङ्ख्या 410 है, चतुर्थ अध्याय में कठिन या व्याख्या के योग्य 279 शब्दों का संकलन है तथा पञ्चम अध्याय में देवता वाचक 151 शब्दों का संकलन किया गया है । निरुक्त के 14 अध्यायों में से प्रथम अध्याय में भूमिका है, द्वितीय से तृतीय अध्याय वाले भाग को नैघण्टुक काण्ड कहते हैं जिसमें निघण्टु के 1, 2 तथा 3 अध्यायों के शब्दों की व्याख्या है । चतुर्थ से षष्ठ तक के अध्यायों को नैगम काण्ड कहते हैं जिसमें निघण्टु के 4 अध्याय के शब्दों का विवेचन है । सप्त से द्वादश तक के अध्यायों को दैवत

काण्ड कहा जाता है जिसमें निघण्टु के 5 अध्याय में आए शब्दों का उदाहरण सहित विवेचन है। अन्त में शेष 2 अध्यायों को निरुक्त का परिशिष्ट भाग कहा जाता है (Varadachari, 1960; शास्त्री, 1972; झा, 2004; द्विवेदी, 2010 तथा शर्मा, 2010)।

6.4. वैदिक व्याकरण

वेदों को समझने के लिए निरुक्त की तरह ही वैदिक व्याकरण की भी आवश्यकता है। वैदिक व्याकरण के द्वारा हम शब्दों के संधि, शब्दरूप, उपसर्ग एवं अव्यय, धातुरूप, समास, तद्धित प्रत्यय, कृत् प्रत्यय आदि पर विचार करते हैं। वैदिक तथा लौकिक व्याकरणों के लिए पाणिनिय शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। इसमें वर्णों की संख्या, उच्चारण प्रक्रिया का ध्वनि शास्त्रीय महत्त्व, स्थान तथा प्रयत्नों का वर्णन, संवृत्त-विवृत, घोष-अघोष, स्पृष्ट-ईषत् स्पृष्ट आदि का विवरण तथा पाठक के गुण-दोष आदि का विवरण दिया गया है। वेदों को समझने के लिए प्रातिशाख्य-ग्रन्थों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसमें वर्णोचारणशिक्षा, संधिनियम, शब्दरूप, धातुरूप, उदात्तादि स्वर तथा छन्दों के द्वारा वेदों का यथार्थज्ञान होता है। चारों वेदों की अनेक शाखाओं के अनुसार ही प्रातिशाख्य ग्रन्थों की शाखाएँ भी अनेक हैं। हर शाखा का एक प्रातिशाख्य ग्रन्थ माना जाता है जो उस शाखा के शिक्षा, व्याकरण तथा छन्द का बोध कराता है।

द्वितीय अध्याय

अनुक्रमणिका एवं वैदिक अनुक्रमणिकाओं का संक्षिप्त परिचय

1. अनुक्रमणिका का संक्षिप्त परिचय

प्रकृति तथा मनुष्य के इतिहास, धर्म, दर्शन, संस्कृति, विज्ञान एवं जीवन परिचय को वेदों में संकलित किया गया है। जिसका सम्यक् परिज्ञान वेदाध्ययन के द्वारा ही सम्भव है। प्राचीन काल से वेदों का अध्ययन-अध्यापन श्रुति परम्परा से होता रहा है जिस कारण वेदों को श्रुति भी कहा जाता है। वेद मानव कल्याण के लिए उपयोगी हैं तथा इतिहास की दृष्टि से भी मानव की धर्म, दर्शन तथा संस्कृति की पहचान भी हैं उनका अर्थ तथा भाव समझने के लिए वेदाङ्गों की रचना की गई थी। वेदाङ्ग एक प्रकार के सहायक ग्रन्थ हैं जिनके द्वारा वैदिक मन्त्रों का अर्थ समझा जाता है किन्तु वेदाङ्गों की सहायता से भी वैदिक मन्त्रों, देवताओं, ऋषियों और विनियोगों आदि के अर्थ में विषमता आने की सम्भावना थी (रावत, 2015)। अतः ऋषियों द्वारा इस ज्ञान को संरक्षित करने के अनेक सम्भव प्रयास किए गए। वेदमन्त्रों को सुरक्षित रखने तथा कालान्तर में उनमें संभावित च्युति, परिवर्तन तथा प्रक्षेप रूपी दोषों के निवारणार्थ और मन्त्रों के पाठ भेद, क्रम तथा सङ्ख्यादि के विश्वस्नीय ज्ञान हेतु ऋषियों ने षड् वेदाङ्गों के अतिरिक्त अनुक्रमणी साहित्य की रचना की थी। अनुक्रमणियों को वेदों के उपलब्ध पाठ की प्रामाणिकता का वाचक भी माना जाता है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)।

वैदिक मूल पाठ तथा मन्त्रों के यथार्थ ज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए अनुक्रमणियों की रचना की गई थी। 'अनु' पूर्वक 'क्रम' धातु का अर्थ 'अनुसरण करना' होता है। अनुक्रमणी का शाब्दिक अर्थ सुव्यवस्थित क्रमबद्ध विषय ग्रन्थ तालिका या सूची है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)। अनुक्रमणियों में संहिताओं के प्रत्येक मन्त्र, अक्षर, छन्द, देवता, ऋषि, पद तथा वर्ण आदि सभी की एक मौलिक सूची रखी गयी थी तथा यह सभी मन्त्र उसी क्रम से रखे गए हैं जिस क्रम से

यह वैदिक संहिताओं में प्रयुक्त हुए हैं (सहाय, 1978 तथा तिवारी, 2014)। प्रत्येक सूक्त का प्रतीक (आद्याक्षर), उसके मन्त्रों की सङ्ख्या, छन्द पाठ, ऋषि का नाम, गोत्र तथा प्रसंगानुसार प्राप्त आख्यानों का वर्णन भी अनुक्रमणी साहित्य में प्राप्त होता है। यही कारण रहा होगा कि सहस्त्रों वर्षों के बीत जाने पर गुरु-शिष्य परम्परा से आगे बढ़ने पर भी वेदों की एक भी पंक्ति में च्युति, परिवर्तन तथा प्रक्षेप रूपी दोष प्रकट नहीं हुए हैं (उपाध्याय, 1997; द्विवेदी, 2010 तथा रावत, 2015)।

प्रत्येक संहिता की सूत्र शैली में अपनी एक अनुक्रमणी है जिसमें उस संहिता से सम्बन्धित ऋषि, देवता, छन्द आदि का क्रमानुसार पूर्ण विवरण दिया गया है (अवस्थी, 1983 तथा गोयल, 1999)। अनुक्रमणियों की सुरक्षात्मक चक्रव्यूह प्रणाली से वैदिक मूल पाठ सुरक्षित रहा तथा मन्त्रों का यथार्थ ज्ञान अभी भी विद्यमान है। इस प्रक्रिया से पता चलता है कि प्राचीन काल में वैदिकस्वर तथा क्रिया आदि पर बहुत गहन चिन्तन किया गया था। अनुक्रमणी साहित्य का अनुकरण करते हुए वर्तमान युग के पाश्चात्त्य तथा भारतीय विद्वानों ने भी अब इस प्रकार के कार्यों का महत्त्व समझा और इस दिशा में जागरुक हुए हैं (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक कॉन्कोर्डेन्स (Vedic Concordance), वैदिक पदानुक्रमकोश इत्यादि ग्रन्थ इसके प्रमाण जिनके विषय में अगले अध्याय में विस्तृत रूप से चर्चा की गई है।

अनुक्रमणियों में शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष के विषयों को सम्मिलित करते हुए अतिरिक्त विषयों का विस्तृत विवरण है। अनुक्रमणियों की सहस्त्रों वर्ष पूर्व की प्राचीन परम्परा का ज्ञान इस बात से चलता है कि वर्तमान में प्राप्त अनुक्रमणियों में अन्य अनुपलब्ध प्राचीन अनुक्रमणियों का भी उल्लेख है (उपाध्याय, 1997)।

2. अनुक्रमणी का महत्त्व

वेद के मन्त्रों से श्रौत, स्मार्त, कर्म-सिद्धि के सही ज्ञान के लिए सूक्त के प्रतीक, ऋषि, ऋक्-सङ्ख्या, छन्द और देवता का वर्णन अनुक्रमणियों में किया गया है। इनके विशिष्ट ज्ञान के द्वारा ही

मन्त्रों का सिद्धि रूप परिणाम प्राप्त होता है । सर्वानुक्रमणी[53] (मैक्डॉनल, 1886) में कात्यायन कहते हैं कि 'इनको न जानने वाला स्थाणुत्व तथा गर्त का भागी और पापी होता है' (शर्मा, 1977 तथा उपाध्याय, 1997) । इस मन्तव्य को एक उद्धरण के द्वारा सर्वानुक्रमणी के टीकाकार षड्गुरुशिष्य वेदार्थदीपिका[54] में प्रमाणित करते हैं (उपाध्याय, 1997) ।

अनुक्रमणियों में वैदिक ऋषियों, देवताओं और छन्दों की सूचियों के साथ ही साथ मन्त्र, मन्त्रगत पदों और वर्णों की सङ्ख्या भी अनुक्रमणीकारों ने वर्णित की है । अनुक्रमणियाँ वास्तव में वेदमन्त्रों की क्रमबद्ध सूचियाँ हैं जिनमें विविध मन्त्रों से सम्बन्धित देवताओं, विविध शाखाओं से सम्बन्धित अनुवाकों, वर्गों, सूक्तों और मन्त्रों तथा विभिन्न मन्त्रों के मन्द्र, मध्यम तथा तार स्वरों आदि की सम्यक् व्यवस्था के लिए विधान हैं। अनुक्रमणियों के विशेष महत्त्व के कारण ही मन्त्र पाठ का क्रम तथा मन्त्रों का विशुद्ध अर्थ सम्भव है । इन विशेषताओं से संलग्न होने के कारण ही वेदमन्त्रों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन सम्भव नही हो सका था । वेदपाठ परम्परा के विशुद्ध एवं निरन्तर रूप से विद्यमान रहने के कारण ऋषियों द्वारा वेद पाठ व्यवस्था को पद, क्रम, जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और घन नामक अष्ट विकृतियों से जोड़ना था (रावत, 2015) । वेद विषयक सम्पूर्ण गूढ़ रहस्य इनमें निरूपित हैं । वेदों के पाठ-सम्पादन एवं उन्हें समझने के लिए आज भी इनकी वही उपयोगिता है जो इनकी रचना के समय में थी (तिवारी, 2014) । वेदों के अर्थों को समझने के लिए इनका महत्त्व सदैव विद्यमान रहेगा ।

3. अनुक्रमणिका का इतिहास

अनुक्रमणिकाओं का प्रारम्भ शौनक की ऋग्वेद पर उपलब्ध अनुक्रमणिका से होता है । प्राचीन अनुक्रमणीकारों में शौनक, कात्यायन तथा माधवभट्ट मुख्य हैं तथा इन तीनों

---

[53] अथ ऋग्वेदाम्नाये शाकलके सूक्तप्रतीकऋक्संख्याऋषिदैवतच्छंदास्यनुक्रमिष्यामो यथोपदेशम् । न ह्येतज्ज्ञानमृते श्रौतस्मार्त्तकर्मसिद्धिः । मंत्राणां ब्राह्मणार्षेयच्छंदोदैवतविद्यार्जनाध्यापनाभ्यां श्रेयोऽधिगच्छतीति । एतायामेवानेवंविदो यातयामानि च्छंदांसि भवन्ति । स्थाणुं वच्छ्रति गर्ते वा पात्यते प्रमीयते वा पापीयान्भवतीति विज्ञायते । (सर्वा. परि. 1) ।

[54] ऋषिच्छंदोदैतानि ब्राह्मणार्थं स्वराद्यपि । अविदित्वा प्रयुञ्जानो मन्त्रकन्टक उच्यते ॥ स्वरो वर्णोऽक्षरं मात्रा विनियोगोऽर्थ एव च । मन्त्रं जिज्ञासमानेन वेदितव्यं पदे पदे ॥' (उद्धृत) - उपाध्याय, बलदेव. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (वेद भाग). 1997. खण्ड 2. पृष्ठ 484) ।

अनुक्रमणीकारों में शौनक सबसे प्राचीन हैं। शौनक द्वारा रचित दस अनुक्रमणियाँ हैं। वायुपुराण (शास्त्री, 2005) के वर्णनानुसार शौनक भृगुवंशी राजा शुनक के पुत्र थे। इन्हें क्षत्रोपेत द्विज, मन्त्रकृत्, मध्यमाध्वर्यु तथा कुलपति कहा गया है। वायुपुराण (शास्त्री, 2005) में इन्हें नहुषवंशी बताते हुए स्वर्भानु-नहुष-पुत्रधर्मा-धर्मवृद्ध-सुतहोत्र-गृत्समद-शुनक-शौनक-उग्रश्रवस् क्रमशः इनका वंशक्रम दिया गया है[55]। महाभारत (सातवलेकर एवं शर्मा, 1968) के श्लोक[56] के अनुसार इन्हें कुलपति की उपाधि मिली थी। कुलपति उसे कहा जाता था जो गुरुकुलप्रमुख दश सहस्र विद्यार्थियों के भोजन तथा निवास स्थान की व्यवस्था करते हुए उन्हें विद्याप्रदान करता था (उपाध्याय, 1997)। कात्यायन प्रसिद्ध अनुक्रमणिका सर्वानुक्रमणी के रचयिता हैं। बलदेव उपाध्याय (2006) के मतानुसार पाणिनि ने कात्यायन रचित वाजसनेयि प्रातिशाख्य से पारिभाषिक शब्दों को लिया था। इन्होंने वाजसनेयि प्रातिशाख्य के कर्त्ता कात्यायन को वार्तिककार कात्यायन से भिन्न मानते हुए पाणिनि से प्राचीन माना है तथा वाजसनेयि प्रातिशाख्य का काल वि.पू. अष्टम शताब्दी मानते हैं (उपाध्याय, 2006)। माधवभट्ट ऋगर्थदीपिका (स्वरूप, 1939) के रचनाकार हैं। सायण द्वारा रचित ऋग्वेद भाष्य[57] (10.86) में माधवभट्ट के नाम का उल्लेख प्राप्त होता है। बलदेव उपाध्याय (1997) के अनुसार यह उद्धरण ऋगर्थदीपिका में भी प्राप्त होता है तथा यह सिद्ध होता है कि माधव सायण से पूर्व विद्यमान थे। माधवभट्ट रचित ऋगर्थदीपिका (स्वरूप, 1939) के प्राप्त होने से पूर्व यास्क के पश्चात सायण का ही नाम उपलब्ध होता था किन्तु इस ग्रन्थ के प्राप्त होने के पश्चात माधवभट्ट को यास्क (700वीं शताब्दी) तथा सायण (1400वीं शताब्दी) के मध्य का स्थान प्राप्त हुआ। माधवभट्ट ने अपने पितामह माधव, मातामह भवगोल, पिता वेंकटार्य, माता सुन्दरी, भाई

---

[55] एते पुत्रा महात्मानः पञ्चैवाऽसन्महाबलाः। स्वर्भानुतनया विप्राः प्रभायां जज्ञिरे नृपाः ॥1॥
नहुषःप्रथमस्तेषां पुत्रधर्मा ततः स्मृतः। धर्मवृद्धात्मजश्चैव सुतहोत्रो महायशाः ॥2॥
सुतहोत्रस्य दायादास्त्रयः परमधार्मिकाः। काशः शलश्च द्वावेतौ तथा गृत्समदः प्रभुः ॥3॥
पुत्रौ गृत्समदस्यापि शुनको यस्य शौनकः। ब्राह्मणाः क्षत्रियाश्चैव वैश्याः शूद्रास्तथैव च ॥4॥ (वायु. पु. अध्याय 92, श्लोक 1-4)।

[56] लोमहर्षण उगश्रवाः सूतः पौराणिको।
नैमिषारण्ये शौनकस्य कुलपतेर्द्वादशवार्षिके सत्रे ॥ (महा. 1.1.1)

[57] माधवभट्टास्तु वि हि सोतो रित्येषर्गिन्द्राण्या वाक्यमिति मन्यते। तथा च तद्वचनम्-इन्द्राण्यै कल्पितं हविः कश्चिन्मृगोऽदूदुषत् ॥ (ऋ. म. 10.86 भा.)।

संकर्षण, पुत्रों वेङ्कट और गोविन्द तथा अपने गोत्र कौशिक और मातृगोत्र वसिष्ठ का नाम अपने ऋग्वेद भाष्य के प्रत्येक अध्याय के अन्त में कारिकाओं के द्वारा दिया है। कून्हन राज (1932) तथा डॉ. लक्ष्मण स्वरूप (1939-55) ने प्रमाणों के आधार पर माधवभट्ट का काल 907-952 ई. माना है किन्तु कून्हन राज के अनुसार अभी माधवभट्ट का काल निर्धारण कर पाना सम्भव नहीं है। नीतिमञ्जरी की रचना द्याद्विवेद ने की थी जो गुजरात के निवासी थे। ग्रन्थ में ही इसकी समाप्ति का काल 1550 वि.सं. बताया गया है (उपाध्याय, 1997)। प्राचीन काल में अनुक्रमणियों की काफी विस्तृत परम्परा रही थी। वर्तमान में भी अनुक्रमणिकाओं का महत्त्व उसी प्रकार बना हुआ है जिस प्रकार प्राचीन काल में था। वर्तमान में सन् 1906 में लिखित मौरिस ब्लूम्फील्ड के वैदिक कॉन्कोर्डैन्स (Vedic Concordance) से लेकर प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री तथा डॉ. विजय कुमार शास्त्री द्वारा सन् 2014 में लिखित प्रस्थान त्रयी पदानुक्रम कोष अनुक्रमणिकाओं के महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं। विभिन्न नामों से इन अनुक्रमणिकाओं को प्रकाशित किया गया है किन्तु कार्य की दृष्टि से सभी समान हैं तथा सभी ने किसी न किसी नवीन विषय का इसमें प्रतिपादन किया है। 1906 से लेकर 2014 के मध्य अधिकांश अनुक्रमणिका एवं कोष ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ जिनमें से ए. बी. कीथ (A. B. keith) तथा ए. ए. मैक्डॉनल (A. A. Macdonell) (1912) का वैदिक इन्डैक्स ऑफ नेम्स एण्ड सब्जैक्ट्स (Vedic index of names and subjects), भगवदत्त एवं हंसराज (1926) का वैदिक कोषः, परशुराम शास्त्री (1930) की तैत्तिरीय संहितायाः पदानुक्रमणी, विश्वबन्धु (1955) का ग्रन्थ वैदिक पदानुक्रम कोषः, सूर्यकान्त (1981) का ग्रन्थ ए प्रैक्टिकल वैदिक डिक्शनरी (A practical vedic dictionary), पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय तथा अनिल कुमार उपाध्याय (1995) का वैदिक कोश, ओमनाथ बिमली तथा सुनील कुमार उपाध्याय (2005) का वैदिक पादानुक्रम कोश, मारको फ्रान्केस्चिनि (Marco Franceschini) (2007) का रोमन लिपि में लिखित ग्रन्थ An Update Vedic concordance, डॉ. प्रभात कुमार (2011) का बृहद् वैदिक संहिता धातुकोषः, सूर्यकान्त (2012) का वैदिक कोश, प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री तथा निशान्त कुमार (2013) का ऋग्भाष्य-पदार्थ-कोष, प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री तथा डॉ. विजय कुमार शास्त्री (2014) का प्रस्थान

त्रयी पदानुक्रम कोष, राम कुमार राय (2014) का ए. बी. कीथ (A. B. keith) तथा ए. ए. मैक्डॉनल (A. A. Macdonell) का ग्रन्थ वैदिक इन्डैक्स ऑफ नेम्स एण्ड सब्जैक्ट्स (Vedic index of names and subjects) का हिन्दी अनुवाद वैदिक इन्डैक्स ऑफ नेम्स एण्ड सब्जैक्ट्स बाई ए. बी. कीथ तथा ए. ए. मैक्डॉनल (Vedic index of names and subjects by A. A. Macdonell and A. B. Keith) आदि ग्रन्थ प्रमुख हैं। इस प्रकार अनुक्रमणियों की परम्परा आज भी जीवित है। सूचना प्रौद्योगिकी का उदय होने के पश्चात पारम्परिक अनुक्रमणिका का स्थान ऑनलाइन अनुक्रमणिका तथा खोज इंजन (search Engine) आदि ले रहे हैं। ऑनलाइन अनुक्रमणिका का आरम्भ 1957-58 से ही हो गया था और 21वीं शताब्दी के आरम्भ से इसका चरम रूप देखा जा सकता है।

4. अनुक्रमणियों की व्याख्या पद्धति

सर्वानुक्रमणी के उद्धरण[58] (मैक्डॉनल, 1886) से यह स्पष्ट है कि अनुक्रमणियों की रचना भी सूत्र शैली में की गयी थी (शर्मा, 1977)। सर्वानुक्रमणी के इस सूत्र की व्याख्या में षड्गुरुशिष्य[59] ने मन्त्र के सूक्त, मन्त्र सङ्ख्या, छन्द, पाद, अक्षर, देवता, ऋषि और उसके गोत्र आदि का व्याख्यान किया है। इस व्याख्या के द्वारा हमें उस काल की शोध तथा व्याख्या शैली का पता चलता है। इन ग्रन्थों को हम प्राचीन समय के अनुसंधान के प्रकारों का प्रदर्शक मान सकते हैं। व्याख्या पद्धति के प्रामाणिक एवं सूक्ष्म होने के कारण ही इनका विशेष महत्त्व है (उपाध्याय, 1997)।

58 अग्निं नव मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । (सर्वा. 1.1)।

[59] अत्र शास्त्रे सर्वत्र नवार्थाऽज्ञातव्याः। सूक्तादिः। ऋक्संख्या। छन्दः। पादः। अक्षराणि दैवतम्। ऋषेर्नाम गोत्रं च। क्वचित्कथेति च।
अग्निमिति सूक्तादिः। ईळे पुरोहितं। नवेति सूक्तस्य ऋक्संख्या। मधुच्छन्दा इत्यृषेर्नाम। वैश्वामित्र इति तस्य गोत्रम्। (सर्वा. व्या.)।

5. ऋग्वेदीय अनुक्रमणियों का संक्षिप्त परिचय

शौनक, कात्यायन एवं माधव ऋग्वेदीय अनुक्रमणियों के प्रमुख रचनाकार माने जाते हैं (अवस्थी, 1983; मिश्रा, 1998 तथा उपाध्याय, 2006)। षड्गुरुशिष्य द्वारा रचित वेदार्थदीपिका (अरविन्द) के प्रारम्भ में कात्यायन को शौनक का शिष्य बताया है। षड्गुरुशिष्य ने वेदार्थदीपिका नामक टीका कात्यायन के ग्रन्थ ऋक्सर्वानुक्रमणी पर लिखी थी। षड्गुरुशिष्य[60] ने वेदार्थदीपिका (अरविन्द) में शौनक द्वारा रचित दस अनुक्रमणियों का वर्णन किया है। इन अनुक्रमणियों का ऋक्सर्वानुक्रमणी वृत्ति[61] (मैक्डॉनल, 1886) में नाम सहित वर्णन है (शास्त्री, 2007; शर्मा, 2010 तथा रावत, 2015)। शौनक प्रणीत इन दस ग्रन्थों के नाम हैं- आर्षानुक्रमणी (1982), छन्दोऽनुक्रमणी (1981), देवतानुक्रमणी, अनुवाकानुक्रमणी (1977), सूक्तानुक्रमणी, ऋग्विधान (1987), पादविधान (1966), बृहद्देवता (1904), प्रातिशाख्य (1931) और शौनकस्मृति (सूर्यकान्त, 1972 तथा गोयल, 1999)। इन अनुक्रमणियों में विभिन्न विषयों का संकलन किया गया है। इन सभी विषयों को कात्यायन ने अपने ग्रन्थ सर्वानुक्रमणी में संकलित किया था। इसी कारण से कात्यायन ने अपने ग्रन्थ का नाम सर्वानुक्रमणी रखा होगा जिसका अर्थ हुआ ऋग्वेद से सम्बद्धित सभी विषयों की अनुक्रमणी। शौनक द्वारा रचित अनुक्रमणियाँ कात्यायन तथा षड्गुरुशिष्य के समय तक विद्यमान थीं। जिसका अध्ययन कर उन्होंने अपने ग्रन्थों का आधार रखा तथा शौनकीय अनुक्रमणियों को षड्गुरुशिष्य ने कई बार उद्धृत किया है। कात्यायनकृत सर्वानुक्रमणी तथा कात्यायनकृत प्रातिशाख्य में शैलीगत समानता है। कात्यायन ने शौनक का परवर्ती होने के कारण अनेक विषयों को उनके ग्रन्थों से लिया था। शौनक द्वारा रचित प्रातिशाख्य में श्लोक मिश्रित हैं किन्तु कात्यायन द्वारा रचित प्रातिशाख्य में गद्य या सूत्र शैली विद्यमान है (उपाध्याय, 1997)।

---

[60] शौनकोपदेशानुक्रमणीदशकः। (वे.दी.)।

[61] शौनकीया दश ग्रन्थास्तदा ऋग्वेदगुप्तये । आर्ष्यनुक्रमणीत्याद्या छान्दसी दैवती तथा । अनुवाकानुक्रमणी सूक्तानुक्रमणी तथा
ऋक्पादयोर्विधाने च बार्हदैवतमेव च प्रातिशाख्यं शौनकीयं स्मार्तं दशमुच्यते। (उद्धृत - उपाध्याय, बलदेव. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (वेद भाग). खण्ड 2. पृष्ठ 485. 1997)।

शौनक को भृगुवंशी शुनक का पुत्र माना जाता है । वायुपुराण (शास्त्री, 2005) में उनके वंशवृक्ष विषयक वृत्तांत को दिया गया है जिसमें सुतहोत्र-गृत्समद-शुनक-शौनक-उग्रश्रवस् क्रमशः नाम आते हैं तथा अध्याय 60 में वंशवृक्ष का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है । महाभारत (सातवलेकर एवं शर्मा, 1968) के श्लोक में शौनक का वर्णन एक कुलपति के रूप में आता है । उनके प्रमुख शिष्यों में आश्वलायन, व्याडि और कात्यायन थे (उपाध्याय, 1997) । आचार्य शौनक द्वारा रचित दस अनुक्रमणियों का परिचय निम्नलिखित है-

5.1. आर्षानुक्रमणी

शौनक द्वारा रचित आर्षानुक्रमणी में ऋग्वेद के ऋषियों की सूची वर्णित है । यह ऋग्वेद के मण्डल क्रम के अनुसार ही 10 अध्यायों में विभक्त है । मैक्ड़ॉनल के अनुसार यह 300 श्लोकों का ग्रन्थ है (सेन, 1983; शास्त्री, 2007 तथा शर्मा, 2010) । इसे षड्गुरुशिष्य ने वेदार्थदीपिका में पंद्रह बार उद्धृत किया है। सायण ने ऋग्वेद संहिता (1.100.1) के भाष्य में तथा स्कन्द स्वामी ने भी इसे अपने भाष्य में उद्धृत किया है (सेन, 1983 तथा रावत, 2015) ।

5.2. छन्दोऽनुक्रमणी

यह अनुक्रमणी शौनक द्वारा रचित है । ऋग्वेद के छन्दों की सङ्ख्या, प्रत्येक छन्द में श्लोकों की सङ्ख्या तथा समस्त श्लोकों और सूक्तों की सङ्ख्या इस अनुक्रमणी में है (सेन, 1983; उपाध्याय, 1997; शास्त्री, 2007; शर्मा, 2010 तथा रावत, 2015) । षड्गुरुशिष्य ने छन्दोनुक्रमण्यापि के नाम से इसका वेदार्थदीपिका में वर्णन किया है । इस अनुक्रमणिका के अंश ऋग्वेद प्रातिशाख्य, सर्वानुक्रमणी की टीकाओं और निदानसूत्र में मिलते हैं । राजेन्द्र लाल मित्र द्वारा सम्पादित संस्करण में लगभग 300 श्लोक हैं जिनका 10 मण्डलों में विभाजन है । इसकी एक प्रति को राजेन्द्र लाल मित्र ने मैक्ड़ॉनेल को प्रदान किया था । मैक्ड़ॉनेल के अनुसार उसमें 238 श्लोक थे तथा प्रथम मण्डल के छन्दों की सूची नहीं थी (उपाध्याय, 1997)।

5.3. देवतानुक्रमणी

शौनक प्रणीत देवतानुक्रमणी ऋग्वेद से सम्बन्धित है तथा यह ऋग्वेद के देवताओं के विषय में है (शास्त्री, 2007; द्विवेदी, 2010 तथा शर्मा, 2010)। यह ग्रन्थ मातृकाओं में विभक्त है। कुछ मातृकाओं में इसका वर्णन शौनक की सर्वानुक्रमणी के रूप में भी प्राप्त होता है। वर्तमान में इस ग्रन्थ की एक भी मातृका उपलब्ध नहीं है। लेकिन इसके 10 श्लोकों का षड्गुरुशिष्य ने वर्णन किया था। षड्गुरुशिष्य ने इसका 10 बार वेदार्थदीपिका में उद्धरण दिया है (सेन, 1983; उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)। षड्गुरुशिष्य ने देवतानुक्रमणी का उद्धरण बृहद्देवता के साथ दिया है किन्तु सायण ने बृहद्देवता का ही अपने भाष्य में उद्धरण दिया है। देवतानुक्रमणी का स्कन्दस्वामी ने भी अपने भाष्य में उद्धरण दिया है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)।

5.4. अनुवाकानुक्रमणी

ऋग्वेद के अनुवाकों पर आधारित इस अनुक्रमणी की रचना शौनक ने की है (शर्मा, 2010)। अनुवाकानुक्रमणी पर षड्गुरुशिष्य ने टीका लिखी है तथा इसको अपने ग्रन्थ में 3 बार उद्धृत भी किया है। विभिन्न मातृकाओं में अनुवाकानुक्रमणी के अंश मिलते हैं। इन पाण्डुलिपियों के द्वारा ही मूल ग्रन्थ के स्वरूप का निश्चय होता है। अनुवाकानुक्रमणी के 45 श्लोकों में 85 अनुवाकों के प्रतीक एवं प्रत्येक अनुवाक के सूक्तों की सङ्ख्या है (सेन, 1983 तथा शास्त्री, 2007)। इस अनुक्रमणी के अन्तिम श्लोकों में ऋग्वेद के 10 मण्डलों में संयोजित 85 अनुवाकों, 64 अध्यायों, 2006 वर्गों, 1017 सूक्तों (खिल सूक्तों को छोड़कर), 10580 मन्त्रों[62] के साथ एकपाद मन्त्रों, 21232 अर्धर्चों, 153826 शब्दों[63], 110704 चर्चापदों तथा 432000 अक्षरों का वर्णन किया गया है। आपस्तम्ब धर्मसूत्र में अनुवाकानुक्रमणी का वर्णन है तथा ब्यूहलर ने इसे लगभग तीसरी से पाँचवी शती ईसा

---

[62] ऋचां दशसहस्राणि ऋचां पञ्चशतानि च।
ऋचामशीतिः पादश्च पारणं सम्प्रकीर्त्तितम्॥ (अनु.अ. श्लो.स. 43)।

[63] शाकल्यदृष्टेः पदलक्षमेकं सार्धं च वेदे त्रिसहस्रयुक्तम्।
शतानि चाष्टौ दशकद्वयं च पदानि षट् चेति हि चर्चितानि॥ (अनु.अ., श्लो.स. 45)।

पूर्व माना है। अनुवाकानुक्रमणी का काल निश्चय ही इससे पूर्व ही माना जाना चाहिए (सेन, 1983 तथा मिश्रा, 1998)।

5.5. सूक्तानुक्रमणी

ऋग्वेद से सम्बन्धित ग्रन्थ सूक्तानुक्रमणी के रचयिता शौनक हैं (शर्मा, 2010) । इस अनुक्रमणी में प्रतीकों का वर्णन था । साहित्यिक दृष्टिकोण से यह ऋग्वेद की एक महत्त्वपूर्ण अनुक्रमणिका थी । इस अनुक्रमणिका का महत्त्व सर्वानुक्रमणी के आने पर नहीं रहा होगा जिस कारण से वर्तमान में यह प्राप्य नहीं है (सेन, 1983 तथा रावत, 2015)। षड्गुरुशिष्य के द्वारा भी इस ग्रन्थ का उद्धरण प्राप्त नहीं होता है किन्तु षड्गुरुशिष्य द्वारा वर्णित शौनक के दस ग्रन्थों में इसका वर्णन प्राप्त होने पर हम उनका वचन प्रमाण मान सकते हैं क्योंकि दस में से आठ ग्रन्थ वर्तमान में प्राप्य हैं (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)।

5.6. पादानुक्रमणी/पादविधान

शौनक प्रणीत इस अनुक्रमणी में मिश्रित छन्दों का प्रयोग किया गया है (सेन, 1983) । इसका विभाजन 2 भागों में है जिसमें से हर भाग में 7 श्लोक भाष्य के साथ हैं (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015) । इस अनुक्रमणी को मैसूर संस्कृत संग्रहण नं. (ड़ी.नं.12) (846/14) में पादानुक्रमणिका नाम दिया गया है । शौनक रचित इस ग्रन्थ का वर्णन षड्गुरुशिष्य ने वेदार्थदीपिका में भी किया है[64]। इसकी केवल एक पाण्डुलिपि जो ग्रन्थलिपि में ताड़पत्र पर अंकित है इण्ड़िया ऑफिस लायब्रेरी (India office Library) में विद्यमान है । मैक्ड़ॉनल इस प्रति को 17वीं शती का मानते हैं। पादानुक्रमणी के नाम से ही पाण्डुलिपि यह बर्नेल के संस्कृत कैटालॉग में भी है। राजेन्द्र लाल मित्र के पास इसकी दूसरी पाण्डुलिपि थी जिसमें इसे पादविधान कहा गया है। यह पाण्डुलिपि मात्र 20 पंक्तियों तथा 4 पृष्ठों में अंकित है (उपाध्याय, 1997)।

64 पादाश्चानुक्रमण्यंतरसिद्धा उच्यन्ते । (उद्धृत - उपाध्याय, बलदेव. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (वेद भाग). खण्ड़ 2.पृष्ठ 492. 1997)।

5.7. ऋग्विधान

शौनक प्रणीत ऋग्विधान 4 अध्यायों में विभक्त है जिसमें प्रथम अध्याय में 170, द्वितीय में 188, तृतीय में 231 तथा चतुर्थ में 142 श्लोक हैं। 13 पद्यों से युक्त फलश्रुति ग्रन्थ के अन्त में है। विभिन्न हस्तलिखित पत्रों में इसके वर्गों का एक अवान्तर विभाजन प्राप्त होता है । प्रस्तुत अनुक्रमणिका ग्रन्थ में ऋग्वेद के मन्त्रों के द्वारा अनेकों व्रतों का विधान, जप तथा होम की प्रशंसा, पाशमोचन, रोगनाशन, सुख-प्रसव, पुत्रादि की कामना विषयक विविधजपयज्ञों, होमों और अन्य नियमों का विधान प्राप्त होता है । ऋग्विधान पर मातृसूनु की पादश्चिका नाम की अप्रकाशित व्याख्या प्राप्त होती है । ऋग्विधान का विशेष सम्बन्ध विष्णुधर्मोत्तरपुराण और अग्निपुराण के तद्विषयक अंशों से माना जाता है । अपाणिनिय प्रयोग प्राप्त होने के कारण इस ग्रन्थ की भाषा सामान्य लौकिक संस्कृत की सिद्ध होती है। जिस कारण से मनीषियों ने 5$^{वीं}$ शताब्दी ई. से अष्टम शताब्दी ई. के मध्य इसका रचनाकाल प्रस्थापित करने का प्रयास किया है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015) । ऋग्विधान एक शताब्दी से भी ज्यादा काल से तांत्रिक, स्मार्त्त, यौगिक और पौराणिक विचारों के कारण बुद्धिजीवियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। सर्वप्रथम लैटिन भाषा में लिखित भूमिका सहित ऋग्विधान को सन् 1878 ई. में डॉ. रड़ल्फ मेयर ने प्रकाशित करवाया था। नीदरलैण्ड़ से प्रो. जे. खोन्दा ने सन् 1951 में इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कराया था । डॉ. एम. एस. भट्ट ने सन् 1987 ई. में इसे संपादित तथा बृहद् भूमिका से स्थापित कर मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली से प्रकाशित करवाया था (उपाध्याय, 1997) । शौनक के ऋग्विधान तथा कात्यायन के यजुर्विधान जैसे विधानपरक ग्रन्थों का विशेष महत्त्व वैदिक अनुष्ठानों और मन्त्रों को लोकाग्राह्यस्वरूप में प्रस्तुत करने वाले साहित्य में है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)।

5.8. बृहद्देवता

ऋग्वेद की शाकल शाखा (शैशिरीय शाखा) से सम्बन्धित बृहद्देवता के रचयिता शौनक हैं। अपने नाम के ही अनुसार यह सबसे बृहद् अनुक्रमणिका है जो ऋग्वेद के मण्डल, अनुवाक और सूक्तों के क्रम पर आधारित है। इस ग्रन्थ में कुल आठ अध्यायों में लगभग 1200 श्लोक हैं। इसमें

मुख्य रूप से अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग है लेकिन किसी-किसी स्थान पर त्रिष्टुप् पादों का भी मिश्रण किया गया है। इसके हर अध्याय में लगभग पाँच श्लोकों के 30 वर्ग हैं। इस ग्रन्थ में देवतानुक्रमणी की तरह मात्र देवताओं की सूची नहीं है अपितु इसमें उन देवताओं से सम्बन्धित कथाओं का वर्णन भी है (सहाय, 1978; द्विवेदी, 2010 तथा रावत, 2015)। इसमें लगभग 300 श्लोक में या एक चौथाई भाग में केवल कथाएँ प्राप्त होती हैं। इसमें अत्यधिक प्राचीन एवं सुव्यवस्थित कथाओं का संग्रह मिलता है। बृहद्देवता के अनुसार यदि मनुष्य ऋषि, छन्द तथा देवता ज्ञान से युक्त जप करता है तो वह मनुष्य अमर, अनन्त, सदसत् स्रोत तथा परम ज्योति स्वरूप है। यही इस ग्रन्थ का सार है (उपाध्याय, 2006; शास्त्री, 2007 तथा शर्मा, 2010)। बृहद्देवता का षड्गुरुशिष्य ने 26, सायण ने 20 और द्याद्विवेद ने 38 स्थलों पर अपने ग्रन्थों में उद्धरण दिया है। बृहद्देवता के कथनों की निघण्टु, निरुक्त, ऋग्विधान, सर्वानुक्रमणी, आर्षानुक्रमणी तथा अनुवाकानुक्रमणी ग्रन्थों से अनेकों स्थानों पर समानता प्राप्त होती है। इसकी गौण कथाओं का महाभारत से भी सम्बन्ध है। यह ऋग्वेद से सम्बन्धित सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सहायक ग्रन्थों में से एक है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)। निरुक्त (800 ई. पू.) तथा सर्वानुक्रमणी (350 ई. पू.) की रचना के मध्यकाल में बृहद्देवता की रचना मानी जाती है। बृहद्देवता में निरुक्त के कथनों की समानता तथा आलोचना दोनों प्राप्त होती हैं। कात्यायन ने स्वीकार किया है कि सर्वानुक्रमणी में देवताओं का वर्णन बृहद्देवता के विषय पर आधारित है। मैक्डॉनल इस ग्रन्थ के आलोचनात्मक संस्करण में बृहद्देवता का रचनाकाल 500 ई. पू. के पश्चात मानते हैं (उपाध्याय, 1997; शास्त्री, 2007 तथा शर्मा, 2010)।

5.9. ऋक्सर्वानुक्रमणिका

ऋक्सर्वानुक्रमणी के रचयिता कात्यायन हैं। शौनक द्वारा रचित विभिन्न अनुक्रमणियों की अपेक्षा यह उन सभी विभिन्न अनुक्रमणियों की द्योतक है। ऋक्संहिता के सम्पूर्ण विषयों को इस अनुक्रमणी में प्रतिपादित किया गया है[65] (शर्मा, 1977 तथा उपाध्याय, 2006)। 12 काण्डों में

65 अथ ऋग्वेदाम्नाये शाकलके सूक्तप्रतीक ऋक्संख्यऋषि दैवतच्छंदास्यनुक्रमिष्यामो यथोपदेशम्॥ (ऋ. परि. 1)।

विभक्त इस ग्रन्थ में ऋग्वेद के प्रत्येक सूक्त का प्रतीक, ऋचाओं की सङ्ख्या, सूक्त के ऋषि का नाम और उनका गोत्र, सूक्तों तथा सूक्तों के अन्तर्गत आने वाले मन्त्रों के देवता तथा छन्दों का क्रमानुसार सूत्र शैली में विस्तृत विवरण दिया गया है। इसके 12 खण्डों में से 9 में वैदिक छन्दों की विस्तृत व्याख्या मिलती है (सेन, 1983 तथा मिश्रा, 1998)। मैक्डॉनल ने ऋक्सर्वानुक्रमणी का सम्पादन 9 पाण्डुलिपियों के आधार पर किया था (उपाध्याय, 1997)।

5.10. माधवीयानुक्रमणी (ऋगर्थदीपिका)

माधव नाम से अनेक वैदिक भाष्यकार हुए हैं, जिनमें से प्रख्यात ऋगर्थदीपिका के रचयिता माधवभट्ट हैं। वेंकटमाधवीय भाष्य में आठ अष्टकों के प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में व्याकरण और ऋग्भाष्य से सम्बन्धित मुख्य कारिकाओं में मन्त्रार्थ ज्ञान के लिए आवश्यक स्वर, आख्यात, निपात, शब्द, ऋषि, छन्द, देवता, तथा मन्त्रार्थादि विषयों पर प्रकाश डाला गया है (शास्त्री, 2007 तथा द्विवेदी, 2010)। यह कारिकाएँ माधवभट्ट की स्वतन्त्र रचना न होकर वेंकटमाधव के ऋग्वेद भाष्य के 64 अध्यायों के प्रारम्भिक अंश हैं। डॉ. कून्हन राज ने मैसूर पुस्तकालय में माधवभट्टकृत ऋगर्थदीपिका की सभी कारिकाओं को एकत्र करके ऋग्वेदानुक्रमणी ऑफ माधवभट्ट नाम से स्वतन्त्र ग्रन्थ के रूप में इसे सन् 1932 ई. में मद्रास से प्रकाशित किया था। उन्होंने स्वयं ही इस ग्रन्थ को ऋग्वेदानुक्रमणी नाम दिया था। इस ग्रन्थ को कून्हन राज ने आठ अध्यायों में संकलित किया है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)।

5.11. ऋक्पदवर्णानुक्रमणी/अष्टाक्षरी बैठ परिभाषा/पदवर्णलक्षणपरिभाषा

बैठ सम्प्रदाय की मान्यता है कि ऋक्पदवर्णानुक्रमणिका में साङ्केतिक आठ अक्षरों के द्वारा ऋग्वेद में प्रतिवर्णपठित पदों, छन्दों, पादाक्षरों और सर्वानुदात्त पदों को छह पदों (विसर्ग, नकारान्त, अवगृह्य, प्रगृह्य, मकारान्त और तकारान्त) में सूचीबद्ध किया गया है। यह ग्रन्थ अभी अप्रकाशित है (उपाध्याय, 1997)।

5.12. ऋग्वेदीय खिलानुक्रमणी

ऋग्वेद की शाकल शाखा से भिन्न शाखाओं के जो मन्त्र हैं वे खिल मन्त्र कहलाते हैं। खिल सूक्तों में बालखिल्य सूक्त, सुपर्णाध्याय, श्रीसूक्त, निविदध्याय, प्रैषाध्याय, कुन्तापसूक्त आदि मुख्य हैं। ऋग्वेद की इस अनुक्रमणिका की सर्वाधिक बृहद् पाण्डुलिपि शारदा लिपि में रचित है जिसकी प्राप्ति कश्मीर में हुई थी। 5 अध्यायों में विभक्त इस अनुक्रमणी के कर्ता के विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है। इसमें प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में अनुक्रमणी में सूक्त प्रतीक देते हुए खिलसूक्तों के ऋषि, देवता एवं छन्दों की विस्तृत व्याख्या प्राप्त होती है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)।

5.13. नीतिमञ्जरी

नीतिमञ्जरी में ऋग्वेद के अष्टक क्रम के स्वरूप में व्याप्त समस्त आख्यानों एवं उनसे सम्बन्धित नीति और उपदेशों के वर्णन क्रम में आए मन्त्रों की आलोचनात्मक व्याख्या को तथा आख्यानों से प्राप्त व्यवहारिक शिक्षा को भी आख्यानों के साथ ही श्लोक में द्याद्विवेद ने निबद्ध किया था तथा इसकी पाण्डुलिपि से पता चलता है कि इसकी समाप्ति 1550 वि. अर्थात् 1494 ई. में हुई थी (अवस्थी, 1983; गोयल, 1999 तथा शर्मा, 2010)। इस ग्रन्थ का भाष्य करने के लिए षड्गुरुशिष्य रचित ऋग्वेदभाषा का उपयोग किया था (उपाध्याय, 1997 तथा उपाध्याय, 2006)।

5.14. चरणव्यूहसूत्र

चरणव्यूहसूत्र को भी शौनक रचित ही माना जाता है। षड्गुरुशिष्य ने शौनक के द्वारा रचित दस ग्रन्थों का वर्णन किया है किन्तु यह ग्रन्थ उनसे अलग है। शौनक के ही नाम से शौनक गृह्यसूत्र, शौनक गृह्य परिशिष्ट, ऐतरेयारण्यक का पाँचवा आरण्यक, शौनकीय शिक्षा तथा यजुर्वेदीय माध्यन्दिन संहिता का पुरुष सूक्त (अध्याय 39) का भाष्य आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं। इसमें चारों वेदों की शाखाओं का विस्तार से वर्णन करते हुए शौनक की वन्दना भी की गई है (शास्त्री, 2007 तथा

द्विवेदी, 2010) । इसके 5 खण्डों में से प्रथम ऋग्वेद नामक खण्ड में ऋग्वेद की शाखाओं (आश्वलायनी, शांखायनी, शाकल्य, बाष्कल, माण्डूकायन), वर्गों तथा ऋचाओं की सङ्ख्या का विवरण है । इसके द्वितीय खण्ड का नाम यजुर्वेद खण्ड है जिसमें यजुर्वेद की शाखाओं का अन्तर, मन्त्रों की सङ्ख्या तथा सभी वेदाङ्गों की विशेषताओं को प्रतिपादित किया गया है । सामवेद खण्ड जो तृतीय खण्ड है उसमें सामवेद की शाखाओं में भिन्नता को निरूपित किया गया है । चतुर्थ खण्ड जो अथर्ववेद खण्ड है उसमें अथर्ववेद की नौ शाखाओं में भिन्नता, चारों वेदों के उपवेदों तथा उन वेदों के रूप, वर्ण, गोत्रादि का विवरण दिया गया है । पाँचवें तथा अन्तिम खण्ड जिसे फलश्रुति खण्ड कहते हैं उसमें चरणव्यूह के अध्ययन-अध्यापन से मिलने वाले परिणाम, आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक व्याख्या के लाभों का वर्णन करते हुए शौनक की प्रशंसा भी वर्णित है (गोयल, 1999 तथा शर्मा, 2010) ।

6. यजुर्वेदीय अनुक्रमणियों का संक्षिप्त परिचय

यजुर्वेद की दो शाखाएँ हैं शुक्ल तथा कृष्ण यजुर्वेद (द्विवेदी, 2010) । शुक्ल वाजसनेयी शाखा की सर्वानुक्रम और अनुवाकानुक्रमणी, काण्व शाखा का काण्वानुक्रमसूत्र, कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा की आत्रेयी शाखा का काण्डानुक्रम तथा चारायणीय शाखा की चारायणीयार्षानुक्रमणिका नामक अनुक्रमणिकाएँ प्राप्त होती हैं (अवस्थी, 1983 तथा सेन, 1983)।

6.1. शुक्ल वाजसनेयि सर्वानुक्रम (सर्वानुक्रमसूत्र या सर्वानुक्रमणी)

महर्षि कात्यायन प्रणीत यह सर्वानुक्रमसूत्र शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा से सम्बन्धित है । इस ग्रन्थ में खिल सहित समस्त यजुर्वेद संहिता के ऋषियों, देवताओं और छन्दों की सूची तथा राजसूय आदि यागों का विवेचन कात्यायन ने पाँच भागों में वर्णित किया है (सहाय, 1978 तथा शास्त्री, 2007) । महायाज्ञिक प्रजापति के पुत्र महायाज्ञिक श्रीदेव का सर्वानुक्रमसूत्र पर वाराणसी से भाष्य प्रकाशित है (उपाध्याय, 1997 तथा उपाध्याय, 2006) ।

6.2. शुक्ल वाजसनेयि अनुवाक सङ्ख्या (अनुवाकानुक्रमणी या अनुवाकाध्याय)

कात्यायन रचित इस अनुक्रमणिका में माध्यन्दिनी वाजसनेयि संहिता में प्रतिपादित मन्त्रों के ऋषियों, देवताओं और छन्दों की सूची है। इसमें खिल सूक्त भी सम्मिलित हैं। इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य शिष्यों का मार्गदर्शन करते हुए यज्ञों का संस्कार देना भी था। इस ग्रन्थ को अनुवाक परिशिष्ट भी कहते हैं। कात्यायन के अठ्ठारह परिशिष्ट ग्रन्थों में इसका चौथा स्थान है (उपाध्याय, 1997)।

6.3. शुक्ल काण्व काण्वानुक्रमसूत्र

यजुर्वेद की काण्व शाखा का काण्वानुक्रम सूत्र प्राप्त होता है। काण्वीयानुक्रमणिका की गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद में 41 पृष्ठों की पाण्डुलिपि विद्यमान है। जिसका काल 1868 वि.सं. माना जाता है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)।

6.4. कृष्ण तैत्तिरीय काण्डानुक्रम

काण्डानुक्रमणिका कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखा की आत्रेयी शाखा की अनुक्रमणिका है। इस अनुक्रमणिका में आत्रेयी शाखा की संहिता, ब्राह्मण तथा आरण्यक के काण्ड, प्रश्न, अनुवाक और कण्ड़िकाओं का विवरण तथा उनमें संकलित मुख्य विषयों और उनके प्रभृति यागों के परिशिष्ट के रूप में भिन्न-भिन्न उल्लेखों में विद्यमान प्रसंगों का विवरण है। इस अनुक्रमणिका में तैत्तिरीय संहिता के याज्ञीय विवरणों की अनुक्रमणी भी वर्णित है। अड्यार, होशियारपुर में इसकी पाण्डुलिपि मौजूद है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)।

6.5. चारायणीयार्षानुक्रमणिका/मन्त्रार्षाध्याय

यजुर्वेद की चारायणीय शाखा की चारायणीयार्षानुक्रमणिका या मन्त्रार्षाध्याय अनुक्रमणिका प्राप्त होती है। इस अनुक्रमणिका के अन्तर्गत चारायणीय शाखा के ऋषियों का विवरण दिया गया

है । कैटालॉग ऑफ बर्लिन मैन्युस्क्रिप्ट्स नं. 142 में विद्यमान पाण्डुलिपि में इसे यजुर्वेद काठक के नाम से वर्णित किया गया है (उपाध्याय, 1997) ।

7. सामवेदीय अनुक्रमणियों का संक्षिप्त परिचय

सामवेदीय अनुक्रमणी ग्रन्थों की विशेषता यह है कि इनमें अनुक्रमणिका प्रकृति कम है तथा सामगान के विवेचन से अधिक सम्बन्ध है । कुछ ग्रन्थों की प्रकृति श्रौतसूत्रों की तरह भी है । सामवेदीय अनुक्रमणिका ग्रन्थ सामसर्वानुक्रमणी, नैगेयशाखानुक्रमणी तथा सामवेदार्षेय दीप हैं तथा श्रौतसूत्रात्मक ग्रन्थों में कल्पानुपदसूत्रम्, उपग्रन्थ सूत्र, अनुपदसूत्र, निदानसूत्र, उपनिदानसूत्र, ताण्ड्यलक्षणम्, धातुलक्षणम्, पञ्चविध सूत्रम्, मात्रालक्षणम्, स्तोभानुसंहर तथा गायत्रविधानसूत्रम् हैं (सहाय, 1978 तथा शास्त्री, 2007) ।

7.1. सामसर्वानुक्रमणी

डॉ. सूर्यकान्त द्वारा सम्पादित ऋक्तन्त्र की समाप्ति में इस ग्रन्थ का वर्णन प्राप्त होता है । इसकी एक हस्तलिखित पाण्डुलिपि अड्यार पुस्तकालय में स्थित है । इसके रचयिता किन्हीं आण्डपिल्लै हैं जिनका निवास स्थान तालवृन्त है । सामसर्वानुक्रमणी में सामवेद के उपलब्ध साहित्य जिसमें 8 ब्राह्मण ग्रन्थों, लक्षण ग्रन्थों, प्रातिशाख्यों और शिक्षा ग्रन्थों का आकलन किया है तथा उसके साथ में सप्तविधप्रकृति गानों गायत्र, आग्नेय, ऐन्द्र, पावमान, अर्कद्वन्द्व (छान्दसगान), शुक्रिय तथा महानाम्नी का विस्तृत विवेचन है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015) ।

7.2. नैगेय शाखानुक्रमणी

कौथुम शाखा की सात उपशाखाओं में नैगेय का नाम भी वर्णित है । दो खण्डों में विभाजित इस अनुक्रमणी के प्रथम खण्ड में आर्चिक संहिता में आए ऋषियों तथा द्वितीय खण्ड में संहिता में प्राप्त मन्त्रों के देवताओं विवरण है (उपाध्याय, 1997) ।

7.3. सामवेदार्षेय दीप

इस अनुक्रमणिका में सामवेद की आर्चिक संहिता के मन्त्रों, देवताओं, ऋषियों और छन्दों का क्रमानुसार वर्णन मिलता है। इस अनुक्रमणिका के अनुसार आर्चिक भाग और गानभाग के छन्द और देवताओं में भिन्नता नहीं होती है केवल ऋषि ही भिन्न होते हैं । इसके प्रणयन कर्ता भट्टभास्कराध्वरीन्द्र हैं जो कश्यपगोत्रीय ब्राह्मण थे (उपाध्याय, 1997)।

7.4. कल्पानुपदसूत्रम्

इस ग्रन्थ में 2 प्रपाठकों में 24 पटल हैं जिसमें से प्रत्येक प्रपाठक में 12 पटल हैं। आर्षेयकल्प तथा क्षुद्रसूत्र में इस ग्रन्थ का नाम लिए बिना उल्लेख किया गया है अतः कालन्द इसे दोनों ग्रन्थों का परिशिष्ट मानते हैं । यह ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है (सहाय, 1978; उपाध्याय, 1997; उपाध्याय, 2006 तथा शास्त्री, 2007)।

7.5. उपग्रन्थसूत्र

यह ग्रन्थ 4 प्रपाठकों में विभाजित है जिनमें से प्रथम तीन प्रपाठक क्षुदसूत्र के परिशिष्ट हैं तथा अन्तिम प्रपाठक में साम के प्रतिहार भाग का वर्णन किया गया है। कल्पसूत्र प्रभृति इस ग्रन्थ में भिन्न-भिन्न श्रौतयागों से सम्बन्धित सामवेद के मन्त्रों की सम्पत् सिद्धि, प्रायश्चित, पृष्ठानुकल्प आदि का समावेश है। इसका रचनाकार कात्यायन को माना जाता है (सहाय, 1978; उपाध्याय, 1997; उपाध्याय, 2006 तथा शास्त्री, 2007)।

7.6. अनुपदसूत्र

इस ग्रन्थ को ताण्ड्य ब्राह्मण की एक वृत्ति माना जाता है जिसमें 10 प्रपाठक हैं (सहाय, 1978 तथा शास्त्री, 2007)।

7.7. निदानसूत्र

10 प्रपाठकों में विभाजित इस ग्रन्थ के प्रथम प्रपाठक का नाम छन्दोविचिति है। पतञ्जलि को छन्दोविचिति के अनेकों अभिलेखों में इस ग्रन्थ का रचयिता माना गया है। इस ग्रन्थ में छन्दोविचय, स्तोम और उनके अलग-अलग विभागों, सामगान के अत्यन्त सूक्ष्म चिन्तन तथा सोमयाग के होने पर इसमें ऊहगान के आर्ध कृतित्व एवं प्रगाथ प्रकिया जैसे मुख्य विषयों पर सूक्ष्म चिन्तन प्रस्तुत किया गया है (उपाध्याय, 1997; उपाध्याय, 2006 तथा शास्त्री, 2007)।

7.8. उपनिदानसूत्र

यह लक्षण ग्रन्थ 2 पटलों एवं 8 अध्यायों में विभाजित है। इसमें निदानसूत्रों पर आधारित छन्द विषयक सामग्री का समावेश है। अभिलेखों में इस ग्रन्थ के छन्दोविचयः, सामगानां छन्दः, छन्दः परिशिष्ट, छन्दोगपरिशिष्ट नाम प्राप्त होते हैं। इसके 8$^{वें}$ अध्याय में छन्द विषयक वर्णन मिलता है। इसके पश्चात सामवेद संहिता की छन्दोऽनुक्रमणी दी गई है (सहाय, 1978; उपाध्याय, 1997; उपाध्याय, 2006 तथा शास्त्री, 2007)।

7.9. ताण्ड्यलक्षणम्

वर्तमान में अप्रकाशित इस ग्रन्थ में सामवेद के 10 प्रकार के सूत्रों का वर्णन किया गया है। डॉ. बे. रा. शर्मा मानते हैं कि इसका अभिलेख सौराष्ट्र के सामवेदी पण्ड़ित ऋषिशंकर दीक्षित के पास है। ताण्डालक्षणम् नाम से कारिकाओं में विभाजित इसकी एक पाण्डुलिपि एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता में विद्यमान है (उपाध्याय, 1997)।

7.10. धातुलक्षणम्

इस ग्रन्थ का वर्णन व्याकरण ग्रन्थ के रूप में गोभिलगृह्यकर्मप्रकाशिका में प्राप्त होता है (उपाध्याय, 1997)।

7.11. पञ्चविधसूत्रम्

प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव तथा निधन नामक पाँच सामगान की भक्तियों वा विभक्तियों का विवरण इसमें प्राप्त होता है। इन गानों को तीन ऋत्विक यागों में गाते हैं। प्रस्ताव का गान प्रस्तोता, उद्गीथ का उद्गाता, प्रतिहार का प्रतिहर्ता, पुनः उपद्रव का प्रस्तोता तथा अन्तिम में निधन का तीनों साथ में गान करते हैं। इस ग्रन्थ में 2 प्रपाठकों में 14 खण्डिकाएँ हैं। इसके रचनाकार के नाम का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है (सहाय, 1978; उपाध्याय, 1997 तथा उपाध्याय, 2006)।

7.12. मात्रालक्षणम्

इस ग्रन्थ के मूल रचयिता के विषय में जानकारी प्राप्त नही है। यह ग्रन्थ 3 खण्डिकाओं में विभाजित है। यह ग्रन्थ अत्यन्त लघु है जिसमें सामगान में प्रयुक्त ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत और वृद्ध मात्राओं की व्याख्याएँ हैं। द्रुता, मध्यमा और विलम्बिता नामक मात्राओं के सूक्ष्मतम विभाग का भी इसमें वर्णन किया गया है। 8 तरह के प्रत्युत्क्रमों, 4 तरह के अतिक्रमों, 5 तरह के कर्षणों, 3 तरह के स्वरों, 7 तरह की अर्धमात्राओं तथा दो प्रकार की गतिविधियों का इसमें निरूपण किया गया है। इनके अलावा इसमें दीर्घकर्षण, ह्रस्वकर्षण और धार्य तथा स्वरित, विनत, प्रणत, उत्स्वरित, अभिगीत तथा अन्तिम में स्वरभक्ति का विवरण दिया गया है। स्वरूप में स्वल्प इस ग्रन्थ में सामगाताओं तथा संगीतशास्त्रियों के लिए महत्त्वपूर्ण तथ्यों का भण्डार है (उपाध्याय, 1997)।

7.13. स्तोभानुसंहर

इस ग्रन्थ में सामगान के स्तोत्रों का विवेचन है। यह ग्रन्थ 3 पटलों में विभाजित है। ग्रन्थ की रचना श्लोक रूप में की गई है (उपाध्याय, 1997)।

7.14. गायत्रविधानसूत्रम्

यह ग्रन्थ स्वरवृत्त, वर्णवृत्त और मात्रवृत्त नामक क्रमशः तीन खण्डिकाओं में विभाजित हैं जिसके रचयिता शुङ्ग माने जाते हैं। गायत्री छन्द पर आधारित गायत्रसाम की विधियों का इसमें वर्णन किया गया है। गायत्र साम में आए हर एक भक्ति के स्वरों, स्तोभों, मात्राओं और उच्चारण से उत्पन्न इतर प्रकारों का इसमें संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। ब्राह्मण तथा लक्षणग्रन्थों का परिशिष्ट ग्रन्थ इसे माना जाता है। (उपाध्याय, 1997)।

8. अथर्ववेदीय अनुक्रमणियों का संक्षिप्त परिचय

अथर्ववेद से सम्बन्धित अनुक्रमणियों में बृहत्सर्वानुक्रमणिका तथा पञ्चपटलिका नामक ग्रन्थों का वर्णन प्राप्त होता है। दन्त्योष्ठ्यविधि नामक एक लक्षणग्रन्थ भी प्राप्त होता है (सहाय, 1978 तथा उपाध्याय, 2006)।

8.1. बृहत्सर्वानुक्रमणिका

अथर्ववेद की शौनकीय शाखा की अनुक्रमणिका का नाम बृहत्सर्वानुक्रमणिका है। शौनकीय शाखा के मन्त्रों के प्रतीक इससे मिलते हैं। अथर्ववेद में प्रतिपादित 20 काण्डों में निरुपित मन्त्रों, ऋषि, देवता और छन्दों का इस ग्रन्थ में 11 पटलों में वर्णन किया गया है। 1-10 पटलों में अथर्वसंहिता के 1-19 काण्डों तक का वर्णन प्राप्त होता है। 11$^{वें}$ पटल में अथर्वसंहिता के 20$^{वें}$ काण्ड का उल्लेख है। इसके कर्ता का उल्लेख किसी भी ग्रन्थ में प्राप्त नहीं होता है (गोयल, 1999 तथा शास्त्री, 2007)।

8.2. पञ्चपटलिका

यह अनुक्रमणिका ग्रन्थ पद्यात्मक है तथा 5 पटलों में विभाजित है (शर्मा, 2010)। इसमें अथर्ववेद के काण्डों तथा उनमें आए मन्त्रों का वर्णन दिया गया है। अथर्ववेद के 18 काण्डों को ही

आधुनिक पाश्चात्त्य विद्वानों ने अथर्ववेद का मूल भाग माना है। किन्तु अथर्ववेद के 20 काण्डों की सूक्त सङ्ख्या, ऋषि, देवता आदि का विवरण इस अनुक्रमणिका में वर्णित है (सहाय, 1978 तथा शास्त्री, 2007)।

8.3. दन्त्योष्ठ्यविधि

इस अथर्ववेदीय लक्षण ग्रन्थ में व एवं ब के दन्त्य और ओष्ठ्य उच्चारण की व्याख्या है (सहाय, 1978 तथा शर्मा, 2010)। इसमें अथर्ववेद के कुल 116 शब्दों की प्रकृति तथा अर्थ का निश्चय करने का प्रयास किया है। भाषाशास्त्र की दृष्टि से इस ग्रन्थ का विशेष महत्त्व है। 2 अध्यायों में विभाजित इस ग्रन्थ में प्रथम अध्याय में 12 श्लोक तथा द्वितीय अध्याय में 11 श्लोक हैं। भाषाविज्ञान का अवलोकन करने के लिए यह ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है (उपाध्याय, 2006 तथा शास्त्री, 2007)।

तृतीय अध्याय

ऑनलाइन अनुक्रमणिका का संक्षिप्त परिचय एवं अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण

1. अनुक्रमणिका (Indexing)

ऑनलाइन अनुक्रमणिका के लिए आँग्ल भाषा में इन्डेक्स (Index) शब्द का प्रयोग होता है। इन्डेक्स शब्द लैटिन भाषा के इण्ड़ीकेट (Indicate) शब्द से बना है जिसका तात्पर्य सङ्केत देना या सङ्केत दिखाना माना जाता है। सामान्य तौर पर विषयों तथा तकनीकी शब्दों को सूचीबद्ध करके किसी विशेष समूह या संग्रह में उसकी सूचना के साथ रखना ही इन्डेक्सिंग (Indexing) कहलाता है। अनुक्रमणिका के द्वारा हम आसानी से सूचीबद्ध किए गए विषयों को उसके मूल में जाकर उससे सम्बन्धित जानकारी के साथ देख सकते हैं। 1957 से ऑनलाइन अनुक्रमणिका का प्रारम्भ हो चुका था। सर्च इंजन एवं डेटाबेस में इसकी अहम् भूमिका होती है।

2. ऑनलाइन अनुक्रमणिका (Online Indexing)

जे. रॉथमैन (1974) ने अनुक्रमणिका को परिभाषित करते हुए कहा है कि "A device that serves as a pointer or indicator, more often an Alphabetic list that includes subjects and names of people and places that are considers to be of significance in a graphic record." अनुक्रमणिका की सर्च इंजन (Search Engine) में अहम् भूमिका होती है अतः विकीपीडिया (Wikipedia: The Free Encylopedia) में इसकी परिभाषा सर्च (Search) के सन्दर्भ में इस प्रकार दी गई है "Search engine indexing collects, parses, and stores data to facilitate fast and accurate information retrieval. Index design incorporates interdisciplinary concepts from linguistics, cognitive psychology,

mathematics, informatics, and computer science. An alternate name for the process in the context of search engines designed to find web pages on the Internet is web indexing (Wikipedia, 2016a).[66]" जितने भी लोकप्रिय सर्च इंजन हैं वे सारे के सारे अनुक्रमणिका के माध्यम से ही सटीक परिणाम प्रदान करते हैं (Clarke & Cormack, 1995) । इसमें अनुक्रमणिका का प्रयोग करके ऑडियो, वीडियो या छवि (Jacobs, Adam & Salesin, 2006) आदि को भी खोजयुक्त बनाया जा सकता है । डेटाबेस (Database) भी अनुक्रमणिका के आधार पर कार्य करता है अतः इस संदर्भ में इसकी परिभाषा इस प्रकार दी गई है "A database index is a data structure that improves the speed of data retrieval operations on a database table at the cost of additional writes and storage space to maintain the index data structure. Indexes can be created using one or more columns of a database table, providing the basis for both rapid random lookups and efficient access of ordered records (Wikipedia, 2016b).[67]" इसी प्रकार विषय अनुक्रमणिका (Subject Indexing) को भी परिभाषित किया गया है "Subject indexing is the act of describing or classifying a document by index terms or other symbols in order to indicate what the document is about, to summarize its content or to increase its findability. In other words, it is about identifying and describing the subject of documents. Indexes are constructed, separately, on three distinct levels: terms in a document such as a book; objects in a collection such as a library; and documents (such as books and articles) within a field of knowledge (Wikipedia, 2016c).[68]"

इस प्रकार विभिन्न परिभाषाओं से स्पष्ट है कि किसी लेख या दस्तावेज़ में नामों, स्थानों, विषयों, अवधारणाओं आदि की गाइड़ को अनुक्रमणिका कहा जाता है । जिसके मध्य विषयों तथा अवधाराणाओं को व्यवस्थित क्रम से रखा गया होता है । सामान्यतया इनको वर्णानुक्रम के द्वारा अथवा संदर्भों के द्वारा दिखाया जाता है । इससे यह पता चलता है कि लेख में प्रत्येक विषय को कहाँ पर स्थित किया गया है । जिससे सर्च करने में बहुत ही कम समय लगता है । अनुक्रमणिका संदर्भग्रन्थ सूची तथा कैटालॉग से भिन्न है क्योंकि संदर्भग्रन्थ सूची तथा कैटालॉग के द्वारा हम लेख

[66] https://en.wikipedia.org/wiki/Search_engine_indexing#Index_design_factors
[67] https://en.wikipedia.org/wiki/Database_index
[68] https://en.wikipedia.org/wiki/Subject_indexing

आदि को क्रमबद्ध करते हैं जबकि अनुक्रमणिका के द्वारा विषयों, विचारों तथा अन्य सामग्री की जानकारी को लेख आदि में सूचीबद्ध किया जाता है (Parashar, 1989)।

3. ऑनलाइन अनुक्रमणिका की आवश्यकता (Needs of Online Indexing)

अनुक्रमणिका का मूलभूत उद्देश्य कम समय में एक अथवा विभिन्न दस्तावेजों से प्रासंगिक जानकारी खोजनें में सहायता करना है। ऑनलाइन अनुक्रमणिका का प्रयोग वर्तमान में सभी सर्च इंजन करते हैं जिनके माध्यम से सर्च करने में बहुत ही कम समय लगता है (Tiwari, 2011)। अनुक्रमणिका से होने वाले लाभों को निम्नलिखित बिन्दुओं में वर्णित किया गया है-

1. अनुक्रमणिका लेख तथा अन्य दस्तावेज़ों के लिए उपयोगकर्ता को मार्गदर्शन प्रदान करती है।
2. अनुक्रमणिका सटीक सामग्री बहुत ही कम समय प्रदान करती है जिसको उपयोगकर्ता प्राप्त करना चाहता है। यहां तक कि जो सूचनाएँ उपयोगकर्ता को पता भी नहीं होती हैं उनको भी इसके माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।
3. अनुक्रमणिका के बिना विभिन्न दस्तावेजों में किसी विशिष्ट अवधारणा को खोजने के लिए उपयोगकर्ता के समय की बर्बादी होती है क्योंकि इसके बिना उपयोगकर्ता एक पृष्ठ से दूसरे पृष्ठ का अध्ययन करने के पश्चात ही खोज सकता है। अतः अनुक्रमणिका के द्वारा खोजकर्ता का समय बचता है तथा वास्तविक खोज में भी सहायता मिलती है।
4. अनुक्रमणिका के द्वारा किसी व्यक्ति, क्षेत्र, विषय, शब्द आदि की उपयोगी जानकारियाँ ठोस प्रमाणों के साथ प्राप्त होती हैं।
5. ऑनलाइन अनुक्रमणिका के माध्यम से किसी भी क्षेत्र के तथ्य क्रौस रैफ्रैन्स (Cross Reference) में खोजे जा सकते हैं। जिन शब्दों को खोजा गया है उनके पर्यायवाची शब्दों के माध्यम से भी खोज की जा सकती है।
6. अनुक्रमणिका उपयोगकर्ता को किसी भी विषय में नवीन जानकारी प्राप्त करने हेतु सहायता प्रदान करती है।
7. विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित सामग्रियों में उत्पन्न समस्याओं का समाधान करना भी अनुक्रमणिका का मुख्य कार्य है।

8. अनुक्रमणिका के द्वारा उपयोगकर्ता किसी सामग्री के वास्तविक लेख को निर्धारित कर सकता है।
9. वर्तमान में वेबसाइट पर करोड़ों की संख्या में दस्तावेज उपलब्ध हैं इन सभी दस्तावेजों में किसी एक शब्द या अवधारणा को ऑनलाइन अनुक्रमणिका के माध्यम से बहुत ही आसानी से एवं कम समय में खोजा जा सकता है।
10. शोधकर्त्ताओं के लिए अनुक्रमणिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। जैसे कोई शोधकर्त्ता अगर वेद पर अपना शोधकार्य कर रहा है तो वह किसी भी लोकप्रिय सर्च इंजन के माध्यम से वेद के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकता है जबकि बिना अनुक्रमणिका के यह सम्भव नही होता है।
11. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका के प्रयोग से परिणाम बहुत ही तीव्र गति से प्राप्त होता है (Seth, 2004)।

4. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका (Automatic Indexing)

ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका प्राकृतिक भाषा के लिए मानवीय हस्तक्षेप के बिना अनुक्रमणिका टर्म (सूची) निर्धारित तथा व्यवस्थित करने की प्रक्रिया है (Tiwari, 2011)। यह एक संगणकीय भाषाविज्ञान की विधि (Algorithms) के प्रयोग से तैयार की जाती है। यह विधि डेटाबेस के आधार पर कार्य करती है। जिसमें दस्तावेज के पूर्ण पाठ, सन्दर्भ सूची, छवि, ऑडियो एवं वीडियो आदि शामिल होते हैं। ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका कम्प्यूटर का एक कौशल है जिसके माध्यम से विशाल संख्या में दस्तावेजों में से शब्दावली, वर्गीकरण, कोश या ऑन्टोलॉजी को खोजा जाता है। यह सारी खोज बहुत जल्दी एवं प्रभावशाली तरीके से होती है। आजकल इंटरनेट पर दस्तावेज बहुत ही भारी संख्या में तेजी से बढ़ते जा रहे हैं इसलिए ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका सर्च इंजन के लिए अनिवार्य हो गई है। इसके बिना किसी भी शब्द को एवं सम्बद्ध सूचना को तत्काल सभी दस्तावेजों में खोजना संभव नही हो सकता है। ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका दो मान्यताओं पर आधारित होती है-

1. यह एक दस्तावेजों का संग्रह है जिसमें से प्रत्येक दस्तावेज में एक या एक से अधिक विषयों की जानकारी शामिल होती है।

2. इस संग्रह में अनुक्रमणिका की एक सूची भी होती है जिसमें एक या विभिन्न टर्म वर्णित होते हैं।

5. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका का संक्षिप्त इतिहास (History of Automatic Indexing)

कम्प्यूटर के आविष्कार के बाद सन् 1957-58 तक यह माना जाता था कि इसका उपयोग केवल सूचनाओं को खोजने के लिए ही किया जा सकता है। इसके बाद अन्य तकनीकें विकसित हुई जिससे कम्प्यूटर का उपयोग बढ़ा। ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका की यह अवधारणा सन् 1950 में Key Word In Context (KWIC) के रूप में विकसित हुई। केड़ब्ल्यूआईसी में मशीन द्वारा शीर्षक, सारांश और सम्पूर्ण विषय को तोड़ मरोड़कर तथा क्रमपरिवर्तन आदि करके प्रदान किया जाता था। इस प्रणाली के अनुप्रयोग पर पहली मुख्य रिपोर्ट नवम्बर, 1958 में वॉशिंग्टॉन, ड़ी. सी. (Washington, D. C.) में हुए 'विज्ञान सूचना पर अन्ताराष्ट्रीय सम्मेलन (International Conference on Science Information) में प्रस्तुत की गई थी। इसी सम्मेलन में एच. पी. लूह्न (Luhn, 1959 and 1961) का 'अन्ताराष्ट्रीय व्यापार मशीन' (International Business Machines) तथा हर्बर्ट ओह्ल्मैन (Herbert Ohlman) (Taube & Wooster, 1958) का 'सिस्टम डेवलपमैन्ट कॉर्पोरेशन' (System Development Corporation) सिस्टम प्रस्तुत किए गए थे। ये दोनों सिस्टम इण्डेक्स से सम्बन्धित थे तथा अलग-अलग सिद्धान्तों पर कार्य करते थें। इस प्रकार इसका विकास होता रहा 1965 में Libraries of the future (Licklider, 1965) नामक पुस्तक में पुस्तकालय से सम्बन्धित अनुक्रमणिका, 1968 में स्वतः भाषा संसाधन (Automated language processing) (Salton, 1968), 1970 में स्वतः अनुक्रमणिका (Automatic indexing: A state-of-the-art report) (Stevens, 1970), 1973 में स्वतः अनुक्रमणिका की एक प्रगति रिपोर्ट (Keenan, 1973), 1975 में सूचना पुनर्प्राप्ति के लिए एक पद्धति (Doyle, 1975), 1980 में सूचना पुनर्प्राप्ति (Balnaves, Gerrie, & Oxley, 1980), 1992 में सूचना विज्ञान एवं तकनीक पर एक शब्दकोश (Watters, 1992) आदि प्रकाशित किए गए जो कही न कही ऑनलाइन अनुक्रमणिका से सम्बन्धित थे।

1994 के प्रारम्भ में वाशिंग्टॉन विश्वविद्यालय के ब्रेन पिंकर्टन (Brian Pinkerton) द्वारा ऑटोमैटिक इन्ड़ैसिंग सिस्टम के बहुत ही अनूठे सिस्टम का विकास किया जिसका नाम वेब क्रॉलर (Web Crawler)[69] है। जिसका प्रयोग आजकल लगभग सभी प्रसिद्ध सर्च इंजन करते हैं जिनमें से गूगल, याहू आदि मुख्य हैं। यह उपयोगकर्त्ता को छवि, ऑडियो, वीडियो, समाचार आदि के लिए सर्च विकल्प प्रदान करता है। यही पहला सर्च इंजन है जो सम्पूर्ण पाठ प्रदान करता है। यह पहली बार अमेरिका ऑनलाइन (America Online)[70] द्वारा पहली बार जून 1995 में लाया गया तथा अप्रैल 1997 में एक्साइट (Excite)[71] को बेच दिया गया। 2001 में वेब क्रॉलर को इन्फोइस्पेस (Infospace)[72] द्वारा अधिग्रहीत किया गया। आजकल इसका प्रयोग मेटसर्च इंजन (Metasearch Engine) के रूप में किया जाता है जिसका प्रयोग सभी सर्च इंजन करते हैं। जुलाई 2010 में वेब क्रॉलर को अमेरिका में 753वीं लोकप्रिय वेबसाइट के रूप में तथा विश्व में 2994वां स्थान प्राप्त हुआ। वेब क्रॉलर सामान्यतः बिंग (Bing)[73], आस्क डॉट कॉम (Ask.com)[74], मीवा (MIVA)[75] एवं लुकस्मार्ट (LookSmart)[76] से संग्रहीत परिणाम प्रदान करता है।

6. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका की पद्धतियाँ (Methods of Automatic Indexings)

ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका एक नियम (algorithmic) प्रक्रिया के द्वारा बनाई जाती है। नियम (algorithmic) डेटाबेस के आधार पर कार्य करती है जिसमें दस्तावेज पूर्ण पाठ, सन्दर्भ या आंशिक पाठ एवं अन्य सूचनाओं के साथ रखे जाते हैं (Anderson & Pérez-Carballo, 2001; Ellis, 1996 and Hodges, 2000)

ऑटोमैटिक अनुक्रमणी पाठभिन्न जैसे ऑडियो, वीडियो या छवि पर भी कार्य कर सकती है। पाठ के डेटाबेस में नियम (algorithmic) वर्ण, अक्षर या अक्षर समूह खोज, शब्द खोज के माध्यम

[69] https://en.wikipedia.org/wiki/WebCrawler
[70] https://en.wikipedia.org/wiki/AOL
[71] https://en.wikipedia.org/wiki/Excite
[72] https://en.wikipedia.org/wiki/Blucora
[73] https://en.wikipedia.org/wiki/Bing
[74] https://en.wikipedia.org/wiki/Ask.com
[75] https://en.wikipedia.org/w/index.php?title=Miva_ (company)&action=edit&redlink=1
[76] https://en.wikipedia.org/wiki/LookSmart

हो सकती है तथा डेटाबेस के किसी एक अथवा सभी दस्तावेजों में भी खोजी जा सकती है (Faraj, Godin & Missaoui, 1996 and Golub, 2005)।

शब्द सूची स्वतः किसी नियम के द्वारा मशीन द्वारा बनाई जाती हैं। इसमें पाठ से मशीनी विश्लेषण (कम्प्यूटर) के द्वारा विषय को प्राप्त किया जा सकता है। ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका के तीन मूलभूत सिद्धान्त हैं:-

1. पाठ का सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical analysis of text)
2. वाक्य विन्यास सम्बन्धी सिद्धान्त (Syntactic Method)
3. अर्थ सम्बन्धी सिद्धान्त (Semantic Method)

7. मुद्रित तथा ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका (Printed and Automatic Indexing)

मुद्रित तथा ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका के मध्य की भिन्नता को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से दर्शाया गया है।

1. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका कम्प्यूटर एल्गोरिद्म (Algorithm) द्वारा तैयार की जाती है। यद्यपि कम्प्यूटर प्रोग्राम बनाने में मानव ही सम्मिलित होता है तथा अनुक्रमणिका नियम एवं डेटा को व्यवस्थित करता है परन्तु अन्य प्रक्रिया मशीन द्वारा ही की जाती है। यह गतिशील (dynamic), सहायक (helping) और लचीली (flexible) प्रकृति का होने के कारण उपयोगकर्ता केन्द्रित (User-Centered) होती है जबकि दूसरी तरफ मुद्रित अनुक्रमणिका केवल संग्रहित पाठ पर आधारित होती है और यह उपयोगकर्ताओं के समूह तथा उनके प्रश्नों से पूर्णतया मुक्त रहती है (Fiedel, 1994)।
2. मानव द्वारा विकसित अनुक्रमणिका मुद्रित अनुक्रमणिका होती है। जिसमें पुनः मुद्रण असानी से सम्भव नही होता है। जबकि ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका में कभी भी किसी भी समय बहुत ही आसानी से मुद्रण सम्भव होता है।
3. मानव या मुद्रित अनुक्रमणिका किसी एक दस्तावेज के लिए बनाई जाती है अतः खोज भी एक ही दस्तावेज में होती है जबकि ऑटोमैटिक अनुमक्रमणिका से इंटरनेट पर किसी भी दस्तावेज में की जा सकती है।

4. मुद्रित अनुक्रमणिका विकसित करने में बहुत अधिक समय एवं परिश्रम लगती है जबकि ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका आसानी से बहुत ही कम समय में तैयार की जा सकती है।
5. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका इंटरनेट के माध्यम से किसी के लिए भी उपयोगी हो सकती है।
6. मानव अनुक्रमणिका बनाने में समय अधिक लगता है तथा इसमें सामग्री सीमित होती है। इसमें पाठ का सारांश सीमित भी हो सकता है। इसमें सामान्य शब्दावली का प्रयोग ज्यादा होता है और इसकी शब्दावली भी सीमित होती है। खोजने योग्य प्रदर्शित अनुक्रमणिका में मानव अनुक्रमणिका में एकाधिक तथ्य (Multi-term) और शीर्षक देने वाले सन्दर्भों (Context-providing headings) का प्रयोग किया जाता है। मानव अनुक्रमणिका बनाने वालों के पूर्वानुमान और अनुभव उनके कार्यों को प्रभावित कर सकते हैं (Fiedel, 1994)। जबकि दूसरी तरफ ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका सामग्री की बड़ी सङ्ख्या को बहुत ही कम समय में अनुक्रमणिका तैयार कर परिणाम दे सकती है। एक पाठ में प्रयुक्त सभी शब्दों को डेटाबेस में संग्रहित करके उन पर सांख्यिकीय तथा अन्य विधियों के माध्यम से निर्माण कर सकती है। ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका के लिए एक विशिष्ट प्रकार की शब्दावली का प्रयोग करते हैं और साथ ही साथ विभिन्न प्रकार के शब्दकोशों का प्रयोग भी करते हैं। इसकी बहुत विशाल शब्दावली होने के कारण इसकी विशिष्टता मानव अनुक्रमणिका से अधिक होती है। यह निश्चित विवरण प्रदान करती है और यह यान्त्रिकी प्रक्रिया पर आधारित है। इसमें अधिकाधिक स्थिरता होती है। यह गलत निर्णयों की क्षतिपूर्ति भी करती है जो मानव अनुक्रमणिका नही कर सकती है। यह अनुक्रमणिका के तथ्यों और वह तथ्य जो खोजे जाने में प्रयुक्त होते हैं उनके मध्य के अंतरों की क्षतिपूर्ति भी करती है। मानव अनुक्रमणिका के अपने कुछ फायदे हैं जो ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका में नही हैं। यह क्रॉस रैफ्रैन्स (Cross Reference) से भी सूचना संग्रहीत करके परिणाम दिखा सकती है साथ ही साथ पर्यायवाची शब्दों तथा उसके जैसे तथ्यों के माध्यम से भी सूचना प्राप्त करने में समर्थ होती है जबकि मुद्रित में ऐसा करना असम्भव होता है।

8. ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका की महत्त्वता

ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका ने भौतिक स्वरूप, जनसङ्ख्या, तकनीकी विकास एवं पर्यावरण में वैश्विक परिवर्तन सूचना वृद्धि में योगदान दिया है। सूचना प्रबन्धकों के लिए यह एक बहुत ही बड़ी चुनौती है। यह न केवल सूचना चुनाव, प्राप्त एवं भण्ड़ारण के लिए बल्कि संभावित उपयोगकर्ताओं को सूचना जल्दी एवं आसानी से उपलब्ध कराने के लिए चिरस्थायी समस्या है। विश्व मानवीय से स्वतः की ओर जा रहा है। अतः स्वचालित सूचना अधिग्रहण तथा सूचना प्रसंस्करण की जानकारी के प्रसार के लिए रास्ता साफ हो गया है। प्रौद्योगिकीय उन्नति के परिणामस्वरूप सूचनाओं का एक विस्फोट हुआ है। वेब पर असङ्ख्य सङ्ख्या में दस्तावेज उपलब्ध होने के कारण अत्याधुनिक तकनीकों की खोज होती है जिससे सूचना की प्रक्रिया और प्रचार-प्रसार में लगने वाले समय में कमी आती है। विभिन्न सामग्रियों से कम समय में तथा सटीक सूचना प्राप्त करने में अनुक्रमणिका की आवश्यकता पड़ती है। इसमें और भी तेजी लाने के लिए ऑटोमैटिक अनुक्रमणिका सहायक होती है।

9. मुद्रित अनुक्रमणिका का सामान्य परिचय

'अनु' पूर्वक 'क्रम' धातु का अर्थ 'अनुसरण करना' होता है। इस प्रकार अनुक्रमणिका का शाब्दिक अर्थ सुव्यवस्थित क्रमबद्ध विषय ग्रन्थ तालिका या सूची है (उपाध्याय, 1997 तथा रावत, 2015)। लेखक ने पाठ में जिन शब्दों, विषयों या उद्धरणों का विशेष रूप से विवेचन किया है तथा जिनका पाठ के अनुसन्धान से विशिष्ट सम्बन्ध है उन सभी को अनुक्रमणिका के अन्तर्गत स्थापित किया जाता है। सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में इन अनुक्रमणियों के द्वारा शोधप्रबन्ध की उपयोगिता बहुत बढ़ जाती है (लाल, 1978)। अनुक्रमणिकाएँ दो प्रकार की होती हैं– विषयानुक्रमणिका तथा नामानुक्रमणिका (सहगल, 1979)। अनुक्रमणिका पुस्तकों की उस व्यवस्था को कहते हैं जिसके अन्तिम में पुस्तक में दिए शब्द या नाम को पृष्ठ संख्या के साथ ढूँढा जा सकता है। अनुक्रमणिका का शाब्दिक अर्थ क्रमानुसार प्रयोग होता है। शोध के क्षेत्र में अनुक्रमणिका का वाच्यार्थ "पाठ के अन्त में प्रयुक्त विषयों का वर्णानुक्रम से प्रयोग अनुक्रमणिका कहलाता है।" पाठ में परिशिष्ट के पश्चात

अनुक्रमणिका बनाई जाती है। कुछ विद्वान् इन्हें परिशिष्ट का ही अंग मानते हैं। अन्य विद्वानों का मत है कि ए अनुक्रमणिकाएँ पाठ का पृथक अंग है किन्तु पाठ में इनका विशेष महत्त्व होता है (सहगल, 1979)।

9.1. विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका में सम्पूर्ण पाठ में आए विषयों तथा प्रकरणों से सम्बन्धित पृष्ठों का सङ्ख्या के साथ अनुक्रम होता है। विषयानुक्रमणिका को सामान्यतया भूमिका तथा प्राक्कथन से पूर्व स्थापित किया जाता है। प्राक्कथन का पाठ से विशिष्ट सम्बन्ध होता है क्योंकि इसमें विषय का स्पष्टीकरण, क्षेत्र और पूर्वकृत् कार्यों की सूचना होती है। इसलिए यह विषयानुक्रमणिका के बाद आता है। विषयानुक्रमणिका का कार्य व्याख्यात्मक रूपरेखा को प्रस्तुत करना नही होता है। विषयानुक्रमणिका का महत्त्व विस्तृत विषय का सम्यक् तथा संक्षिप्त परिचय देने पर ही रहता है (शर्मा, 2011)।

9.2. नामानुक्रमणिका

मुद्रित पाठ में इस अनुक्रमणिका की कोई मुख्य आवश्यकता नही होती है यह केवल पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए दी जाती है (शर्मा, 2011)। नामानुक्रमणिका में सम्पूर्ण पाठ में प्रयुक्त हुई संज्ञाओं की अकारादिक्रम से सूची तैयार कर जिस पर वह शब्द प्रयुक्त हुआ है उन सभी की पृष्ठ सङ्ख्या दी जाती है (सहगल, 1979)। पाठ में इसके दो वर्ग व्यक्तियों तथा रचनाओं के नामों के रूप में माने गए हैं (शर्मा, 2011)।

लेखक द्वारा विषयानुक्रमणिका तथा नामानुक्रमणिका पर की गई मेहनत व्यर्थ नहीं होती है। लेखक के परिश्रम का लाभ पाठक उठाते हुए इसकी सहायता से पाठ में किसी भी सन्दर्भ या उद्धरण आसानी से खोज लेता है। अनुक्रमणिका में दिए शब्द या नाम के कारण उपयोगकर्ता पाठ में आसानी से उसे पृष्ठसंख्या पर जाकर खोज लेता है। इसके कारण हमें पूरे ग्रन्थ को खोजने की आवश्यकता नहीं होती है। इस प्रक्रिया को मुद्रित अनुक्रमणिका कहा जाता है (सहगल, 1979)।

ऑनलाइन अनुक्रमणिका अर्थात् वेब आधारित अनुक्रमणिका में हम शब्द को खोजना चाहते है वह शब्द इंटरनेट पर उपलब्ध किसी भी दस्तावेज से आ सकता है या किसी एक विशिष्ट दस्तावेज से आ सकता है । इस प्रकार की अनुक्रमणिका में खोजने में बहुत ही कम समय लगता है तथा बहुत ही आसानी से सटीक सूचना प्राप्त हो जाती है । अतः इसकी उपयोगिता बहुत ही अधिक है । इससे अनुसंधान में आसानी हो जाती है ।

10. संस्कृत ग्रन्थों से सम्बन्धित अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण

अब यहां पर अनुक्रमणिका से सम्बन्धित विभिन्न कार्यों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है । इसको दो भागों में विभाजित किया गया है- मुद्रित अनुक्रमणिकाएँ तथा वेब आधारित अनुक्रमणिकाएँ । संस्कृत ग्रन्थों की पुस्तिका के परिशिष्ट में प्राप्त सन्दर्भ को अनुक्रमणिका कहा जाता है । मुद्रित स्वरूप में होने के कारण इसे मुद्रित अनुक्रमणिका कहा जाता है । पाठों के डिजिटलाइजेशन के साथ ही साथ आजकल पारम्परिक अनुक्रमणिका का स्थान ऑनलाइन अनुक्रमणिका ले रही हैं । जिससे इंटरनेट पर हजारों की संख्या में उपलब्ध सामग्री से सूचना बहुत ही आसानी एवं कम समय में सटीक सूचना निकाली जा सकती है। यह सूचना बहुत ही सटीक तथा पूर्ण सन्दर्भ के साथ प्राप्त होती हैं जिससे शोध या अन्य कार्य में बहुत ही सहायक होती है । अतः इसकी उपादेयता और अधिक बढ़ जाती है ।

10.1. संस्कृत ग्रन्थों से सम्बन्धित मुद्रित अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण परिचय

संस्कृत ग्रन्थों से सम्बन्धित मुद्रित अनुक्रमणिकाओं पर बहुत अधिक कार्य हुआ है जिनका विभाजन दो प्रकार से किया गया है- वेद सम्बन्धी अनुक्रमणिकाएँ तथा कोष ग्रन्थ । प्रथम विभाजन में वैदिक संहिताओं के परिशिष्ट भाग में प्राप्त अनुक्रमणिका का प्रयोग मन्त्रों के तात्कालिक सन्दर्भ के लिए प्रयोग किया जाता है । वेद सम्बन्धी अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण तीन भागों में विभाजित किया गया है-

10.1.1. मन्त्रानुक्रमणिका- यह नामानुक्रमणिका के अन्तर्गत आती है । इसमें मन्त्रों के आरम्भिक अक्षर को वर्णानुक्रम से पुस्तक के अन्त में दिया गया होता है ।

10.1.2. पद सूची- यह भी नामानुक्रमणिका के अन्तर्गत ही आता है। इसमें पदों के नाम को पृष्ठ संख्या के साथ दिया गया होता है।

10.1.3. मण्डल/अनुवाक/सूक्त सूची क्रम- इसमें मण्डल/अनुवाक/सूक्त को आप पृष्ठ संख्या के साथ देख सकते हैं।

द्वितीय विभाजन में संस्कृत ग्रन्थों पर प्राप्त कोषों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इन कोषों में वेद, ब्राह्मण, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में प्रयुक्त शब्दों को अकारादिक्रम से व्यवस्थित कर उनकी संक्षिप्त व्याख्या इन ग्रन्थों में प्राप्त होती है। यहाँ पर इन ग्रन्थों के कार्यों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। संस्कृत ग्रन्थों में प्राप्त इन अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण प्रस्तुत किया जा रहा है।

10.2. मुद्रित अनुक्रमणिका के क्षेत्र में ऋग्वेद में कार्य

ऋग्वेद संहिताओं में प्राप्त अनुक्रमणिकाओं का विभाजन तीन प्रकार से किया गया है।

10.2.1. मन्त्र वर्णानुक्रमण के अनुसार प्राप्त अनुक्रमणिका -

मन्त्र वर्णानुक्रम के अनुसार अधिकांश संहिताएँ प्रकाशित की गई हैं। इसमें सातवलेकर दामोदर, युधिष्ठिर मीमांसक, श्रीराम शर्मा, गोविन्द चन्द्र पाण्डे तथा रूप किशोर शास्त्री हैं।

10.2.1.1. ऋक् संहिता

इस ऋक् संहिता को डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने सन् 1939 में स्वाध्याय मण्डल औंध पारड़ी से प्रकाशित करवाया था। इस संहिता में सातवलेकर ने मन्त्रों के प्रथम शब्दों को वर्णानुक्रम के अनुसार संहिता के परिशिष्ट भाग में अनुक्रमणिका रूप में प्रस्तुत किया है (सातवलेकर, 1939)।

10.2.1.2. ऋग्वेद

ऋग्वेद को विश्वबन्धु ने विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर से सन् 1966 में संपादित किया था। सम्पूर्ण ऋग्वेद में प्रयुक्त मन्त्र, पद, ऋषि, देवता व छन्द की अनुक्रमणिका को अकारादिक्रम के अनुसार है तथा ऋग्वेद में मन्त्र, पद, देवता, ऋषि व छन्द किस मण्डल, सूक्त तथा मन्त्र में प्रयुक्त है इसका वर्णन भी दिया गया है (विश्वबन्धु, 1966)।

10.2.1.3. ऋग्वेद भाष्यम्

इस संहिता के भाष्यकार महर्षि दयानन्द हैं। इसका सम्पादन युधिष्ठिर मीमांसक तथा प्रताप सिंह चौधरी ने सन् 1973 में मॉड़ल टाऊन, करनाल से किया था। इस भाष्य ग्रन्थ में सम्पादकों ने मन्त्रों के प्रथम शब्दों को वर्णानुक्रम से रखा है। यह ग्रन्थ तीन भागों में प्रकाशित है (मीमांसक, 1973)।

10.2.1.4. ऋग्वेद का सुबोध भाष्य

यह ऋग्वेद का भाष्य ग्रन्थ है जिसके भाष्यकार डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर हैं। इसका प्रकाशन उन्होंने स्वाध्याय मण्डल, औंध (पारड़ी) से सन् 1980 में चार भागों में किया था। इस ग्रन्थ में भी अपने संहिता ग्रन्थ की भांति शब्दों को वर्णानुक्रम के अनुसार प्रत्येक भाग के अन्तिम में वर्णित किया है (सातवलेकर, 1980)।

10.2.1.5. ऋग्वेद संहिता

इस ऋग्वेद के भाष्य के रचयिता श्रीराम शर्मा आचार्य एवं भगवती देवी शर्मा हैं। इसका प्रकाशन उन्होंने ब्रह्मवर्चस, (शान्तिकुञ्ज) हरिद्वार से सन् 1995 में किया था। इसमें भी शब्दों को वर्णानुक्रम के अनुसार रखा गया है (शर्मा, 1995)।

10.2.1.6. ऋग्वेद

इस भाष्य ग्रन्थ के रचयिता गोविन्द चन्द्र पाण्डे हैं । इसका प्रकाशन लोकभारती, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहबाद से सन् 2008 में किया था । इस ग्रन्थ में उन्होंने मन्त्रों का हिन्दी अर्थ देते हुए कविता के माध्यम से भी अर्थों को दर्शाया है (पाण्डे, 2008) ।

10.2.1.7. ऋक् संहिता (शांखायन)

इस शांखायन ऋग्वेदीय संहिता के प्रधान सम्पादक रूप किशोर शास्त्री हैं तथा सम्पादक अमलधारी सिंह गौतम हैं । इसका प्रकाशन महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी से सन् 2013 में किया गया था । यह शांखायन शाखा की प्रथम संहिता है । इसमें भी मन्त्रों को वर्णानुक्रम से दिया गया है (शास्त्री एवं गौतम, 2013) ।

10.2.2. पद वर्णानुक्रमण के अनुसार अनुक्रमणिका सर्वेक्षण

पद वर्णानुक्रम के अनुसार ऋग्वेद की एकमात्र संहिता है जिसका सम्पादन डॉ. सिद्धनाथ शुक्ल एवं डॉ. श्रीमती उषा शुक्ल ने श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ से सन् 2011 में किया है । यह ग्रन्थ पाँच भागों में प्रकाशित है (शुक्ल एवं शुक्ल, 2011) ।

10.2.3. मण्डल/अनुवाक/सूक्त के अनुसार अनुक्रमणिका सर्वेक्षण

मण्डल/अनुवाक/सूक्त के अनुसार ऋक् संहिता में अनुक्रमणिका को एच. एच. विल्सन (H. H. Wilson) ने नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली से सन् 1978 में प्रकाशित किया था । यह ग्रन्थ एक भाग में ही प्रकाशित है तथा मण्डल/अनुवाक/सूक्त के अनुसार अनुक्रमणिका के रूप में एकमात्र प्राप्त है (Wilson, 1978) ।

10.3. मुद्रित अनुक्रमणिका के क्षेत्र में यजुर्वेद में कार्य

यजुर्वेद की संहिताओं में प्राप्त अनुक्रमणिकाओं का विभाजन केवल एक प्रकार से ही किया गया है।

10.3.1. मन्त्र वर्णानुक्रमण के अनुसार अनुक्रमणिका सर्वेक्षण

यजुर्वेद में मन्त्रों के आधार पर ही अनुक्रमणिकाओं का निर्माण किया गया है। मन्त्रों में प्राप्त प्रथम अक्षर को इसका आधार बना के अनुक्रमणिका की रचना की गई है।

10.3.1.1. वाजसनेयि माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेद संहिता

इस शुक्ल यजुर्वेद संहिता का सम्पादन डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने किया है। यह ग्रन्थ स्वाध्याय मण्डल, औंध (पारड़ी) से सन् 1970 में प्रकाशित किया गया था (सातवलेकर, 1970)।

10.3.1.2. यजुर्वेद संहिता

इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. सिधेश्वर भट्टाचार्य ने काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी से सन् 1973 में किया था (भट्टाचार्य, 1973)।

10.3.1.3. तैत्तिरीय संहिता

इस संहिता का सम्पादन डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने स्वाध्याय मण्डल, औंध (पारड़ी) से सन् 1983 किया था (सातवलेकर, 1983)।

10.3.1.4. मैत्रायणी संहिता

इस संहिता का प्रकाशन डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने स्वाध्याय मण्डल, औंध (पारड़ी) से सन् 1983 में किया था (सातवलेकर, 1983)।

10.3.1.5. काठक संहिता

इस ग्रन्थ का प्रकाशन डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने स्वाध्याय मण्डल, औंध (पारड़ी) से सन् 1983 में किया था (सातवलेकर, 1983)।

10.3.1.6. काण्व संहिता

इस ग्रन्थ का प्रकाशन डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने स्वाध्याय मण्डल, औंध (पारड़ी) से सन् 1983 में किया था (सातवलेकर, 1983)।

10.3.1.7. वाजसनेयि माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेद संहिता

इस संहिता का प्रकाशन रॉल्फ टी. एच. ग्रिफिथ (Ralph T.H. Griffith) ने नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली से सन् 1990 में किया था (Griffith, 1990)।

10.3.1.8. शुक्ल यजुर्वेद संहिता

इस ग्रन्थ का प्रकाशन गोविन्द वेदान्ताचार्य एवं प्रेमाचार्य शास्त्री ने सद्गुरू गंगेश्वर इंटरनैशनल वेद मिशन, तुलसी निवास, मुम्बई से सन् 2000 में किया था (वेदान्ताचार्य एवं शास्त्री, 2000)।

10.4. मुद्रित अनुक्रमणिका के क्षेत्र में सामवेद में कार्य

सामवेद की संहिताओं में प्राप्त अनुक्रमणिकाओं का विभाजन दो प्रकार से प्राप्त होता है।

10.4.1. मन्त्र वर्णानुक्रमण के अनुसार अनुक्रमणिका सर्वेक्षण

सामवेदीय संहिताओं में प्राप्त अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण यहाँ मन्त्रों के आधार पर किया गया है। मन्त्रों के प्रथम अक्षर को यहाँ आधार बनाया गया है। संहिताओं के क्रम को वर्ष के आधार पर रखा गया है।

10.4.1.1. सामवेद संहिता

इस संहिता का प्रकाशन विश्वनाथ शर्मा एवं रामचन्द्र शर्मा ने नाथन प्रिटिंग प्रेस, मद्रास से सन् 1983 में किया था (शर्मा एवं शर्मा, 1983)।

10.4.1.2. सामवेद संहिता

इस ग्रन्थ का प्रकाशन डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने स्वाध्याय मण्डल, औंध (पारड़ी) से सन् 1983 में किया था (सातवलेकर, 1983)।

10.4.1.3. सामवेद संहिता

इस ग्रन्थ का प्रकाशन Ralph T.H. Griffith ने नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली से सन् 1893 में किया था (Griffith, 1893)।

10.4.1.4. सामवेद संहिता

इस ग्रन्थ का प्रकाशन रवि प्रकाश आर्य ने परिमल पब्लिशर्स, दिल्ली से सन् 2001 में किया था (आर्य, 2001)।

10.4.2. पद वर्णानुक्रमण के अनुसार अनुक्रमणिका सर्वेक्षण

पदों के आधार पर हमें केवल एक सामवेद की एक ही संहिता में अनुक्रमणिका प्राप्त होती है। इस सामवेद संहिता का प्रकाशन देवी चन्द ने मुन्शी राम मनोहर लाल पब्लिशर्स, नई दिल्ली से सन् 2000 में किया था (Chand, 2000)।

10.5. मुद्रित अनुक्रमणिका के क्षेत्र में अथर्ववेद में कार्य

अथर्ववेद की संहिताओं में प्राप्त अनुक्रमणिकाओं का विभाजन एक प्रकार से प्राप्त होता है।

10.5.1. मन्त्र वर्णानुक्रमण के अनुसार अनुक्रमणिका सर्वेक्षण

अथर्ववेद की अनुक्रमणिकाओं के सर्वेक्षण का आधार मन्त्र हैं। मन्त्रों के प्रथम शब्द के आधार पर यहाँ वर्षों के क्रमानुसार सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है।

10.5.1.1. अथर्ववेदः (शौनकीयः)

इस ग्रन्थ का प्रकाशन विश्वबन्धु ने विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर से सन् 1964 में किया था (विश्वबन्धु, 1964)।

10.5.1.2. अथर्ववेद संहिता

इस संहिता का प्रकाशन डॉ. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने स्वाध्याय मण्डल, औंध, पारडी से 1965 में किया था (सातवलेकर, 1965)।

10.5.1.3. अथर्ववेद संहिता

इस संहिता का प्रकाशन डॉ. रामकृष्ण शास्त्री एवं विश्वनाथ शास्त्री ने चौखम्बा ओरियन्टल, वाराणसी से सन् 1977 में किया था (शास्त्री एवं शास्त्री, 1977)।

10.5.1.4. पैप्पलाद संहिता

इस ग्रन्थ का प्रकाशन रघुवीर ने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, कमला नगर, दिल्ली से सन् 1979 में किया था (रघुवीर, 1979)।

10.5.1.5. अथर्ववेद संहिता

इस भाष्य का प्रकाशन श्रीराम शर्मा आचार्य एवं भगवती देवी शर्मा ने ब्रह्मवर्चस, (शान्तिकुञ्ज) हरिद्वार से सन् 1996 में किया था (शर्मा एवं शर्मा, 1996)।

10.5.1.6. अथर्ववेद संहिता

इस संहिता का प्रकाशन श्री कान्त शास्त्री ने माधव पुस्तकालय, कमला नगर, दिल्ली से सन् 2000 में किया था (शास्त्री, 2000)।

10.6. वैदिक कोषों का सर्वेक्षण

अधिकांश वैदिक कोषों में वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों तथा आरण्यक में प्रयुक्त शब्दों को वर्णानुक्रम से रखा गया है। इन कोषों में इन ग्रन्थों के मुख्य, कठिन तथा अधिकांश प्राप्य शब्दों को व्याख्या के अनुसार शब्द वर्णानुक्रम, पद वर्णानुक्रम तथा ग्रन्थों के विभाग के अनुसार वर्णित कर रखा है।

10.6.1. ऋग्वेद संहिता

यह ग्रन्थ नारायण शर्मा द्वारा संपादित है। इसका प्रकाशन तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ से सन् 1873 में किया गया था। इस ग्रन्थ में लेखक ने वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, सूत्र ग्रन्थों इत्यादि के शब्दों का कोष अकारादि क्रमानुसार बना रखा है तथा उस ग्रन्थ का स्थान भी दिया गया है (शर्मा, 1873)।

10.6.2. Vedic Concordance

यह मौरिस ब्लूम्फील्ड (Maurice Bloomfield) द्वारा रचित ग्रन्थ है। इसका प्रकाशन मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली से दो खण्डों में सन् 1906 में किया गया था। ग्रन्थों की सूची में दस वर्गों संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, श्रौतसूत्र (गृह्यसूत्र, मन्त्रपाठ और तत्सम्बन्धी ग्रन्थ), धर्मसूत्र (धर्मशास्त्र एवं स्मृतियाँ), विधान ग्रन्थ, वेदों के सहायक ग्रन्थ एवं चार विविध ग्रन्थ को लिया गया है (Bloomfield, 1906)।

10.6.3. वैदिक इण्डेक्स ऑफ नेम्स एण्ड सब्जैक्ट्स (Vedic index of names and subjects)

वैदिक इण्डेक्स ऑफ नेम्स एण्ड सब्जैक्ट्स (Vedic index of names and subjects) नामक ग्रन्थ ए. ए. मैक्डॉनल तथा ए. बी. कीथ के द्वारा रचित है। इस ग्रन्थ का प्रथम प्रकाशन लन्दन से सन् 1912 में दो खण्डों में किया गया था। तथा भारत में इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 1958 में मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर दिल्ली से किया गया था। सम्पूर्ण ग्रन्थ में अकारादिक्रम से

व्यवस्थित वैदिक शब्दों पर लेख लिखे गए हैं। लेखक ने इन शब्दों का अपने विचार से विच्छेद करते हुए शब्दखण्डों को हाइफ़न (-) से पृथक् किया है। अनुवाद में भी इन शब्दों को मूल ग्रन्थ के अनुसार ही रखा गया है। जिन शब्दों पर लेख लिखे गए हैं उन्हें बड़े इटालिक शब्दों में छापा गया है जिससे उन पर सरलता से दृष्टि पड़ सके। इसके दो भागों में वर्ण, जाति, कृषि एवं ज्योतिष आदि विषयों तथा जनक वसिष्ठ, विश्वामित्र आदि नामों की सूची दी गयी है (Macdonell & keith, 1958)।

10.6.4. वैदिक कोष

वैदिक कोषः के रचयिता भगवदत्त एवं हंसराज हैं। यह कोष विश्वभारती अनुसंधान परिषद से सन् 1926 में दो खण्डों में प्रकाशित किया गया था। इस कोष में ब्राह्मणानन्तर्गत वैदिक पदों का निर्वचन तथा अर्थ को मुख्यतया एकत्र किया गया है, इसके अतिरिक्त वैदिक देवताओं के गुण, कर्म, स्वरूपादि के सम्बन्धी वाक्य, अनेक उपयोगी वैदिक वाक्य वा अन्वेषणोपयोगी अनेक प्रकार के वाक्य भी संग्रह किए हैं (भगवदत्त एवं हंसराज, 1926)।

10.6.5. तैत्तिरीय संहितायाः पदानुक्रमणी

तैत्तिरीय संहितायाः पदानुक्रमणी के रचयिता परशुराम शास्त्री हैं। यह ग्रन्थ भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना से सन् 1930 में प्रकाशित किया गया था। इस ग्रन्थ में तैत्तिरीय संहिता के पदों को अकारादिक्रम से प्रस्तुत किया गया है तथा उनके मन्त्रों की संख्या भी दी गयी है (शास्त्री, 1930)।

10.6.6. वैदिक पदानुक्रम कोषः

वैदिक पदानुक्रम कोषः नामक ग्रन्थ के रचयिता विश्वबन्धु हैं। यह ग्रन्थ विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर से सन् 1955 में 4 खण्डों में प्रकाशित किया गया था तथा प्रत्येक खण्ड के कई भाग हैं। प्रथम दो खण्डों में वेद के शब्दों तथा उनके अर्थों का संकलन है, तृतीय खण्ड में

उपनिषदों के शब्दों एवं उनके अर्थों का संकलन है तथा चतुर्थ खण्ड में वेदाग्डों के शब्दों एवं उनके अर्थों का संकलन है। प्रत्येक खण्ड में अकारादिक्रम से शब्द दिए गए हैं (विश्वबन्धु, 1955)।

10.6.7. अथर्ववेद (शौनकीय)

अथर्ववेदः (शौनकीयः) को विश्वबन्धु ने विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थान से सन् 1964 सम्पादित किया है। सम्पूर्ण अथर्ववेद में मन्त्र, पद, ऋषि, देवता व छन्द अनुक्रमणिका को अकारादिक्रम के अनुसार है तथा वह अथर्ववेद में किस मण्डल, सूक्त तथा मन्त्र में प्रयुक्त है इसका वर्णन भी दिया गया है (विश्वबन्धु, 1964)।

10.6.8. ऋग्वेद

ऋग्वेद को विश्वबन्धु ने विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर से सन् 1966 में संपादित किया था। सम्पूर्ण ऋग्वेद में प्रयुक्त मन्त्र, पद, ऋषि, देवता व छन्द की अनुक्रमणिका अकारादिक्रम के अनुसार है तथा ऋग्वेद में मन्त्र, पद, देवता, ऋषि व छन्द किस मण्डल, सूक्त तथा मन्त्र में प्रयुक्त है इसका वर्णन भी दिया गया है (विश्वबन्धु, 1966)।

10.6.9. A practical Vedic dictionary

ए प्रैक्टिकल वैदिक डिक्शनरी (A practical vedic dictionary) में वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिषदों, श्रौतसूत्रों, गृह्यसूत्रों, धर्मसूत्रों आदि के शब्दों की व्याख्या हिन्दी व अंग्रेजी में अर्थ सहित कर रखी है। यह ग्रन्थ सूर्यकान्त द्वारा रचित है तथा ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली से सन् 1981 में प्रकाशित है (Suryakant, 1981)।

10.6.10. चतुर्वेद विषय सूची

चतुर्वेद विषय सूची में प्रत्येक वेद के विभाजित वर्गों के विषयों को क्रमानुसार दिया गया है। इसमें उदाहणार्थ ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के प्रथम अध्याय के विषय अग्नि विद्या, वायु विद्या, मित्र लक्षण, इन्द्र विद्या इत्यादि दिए गए हैं। यह ग्रन्थ युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा रचित है तथा इसका प्रकाशन रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ से माघ संवत् 2031 में किया गया है (मीमांसक, माघ संवत् 2031)।

10.6.11. वैदिक कोश

वैदिक कोश में वैदिक वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, अष्टाध्यायी, श्रौतसूत्र, धर्मशास्त्र, गृह्यसूत्र आदि के शब्दों का अकारादिक्रम से यास्क, दयानन्द, पाणिनि तथा जयदेव वर्मा के अर्थों सहित वर्णन कर रखा है। यह दो खण्डों में लिखित ग्रन्थ है जिसकी रचना पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय तथा अनिल कुमार उपाध्याय ने की थी तथा इसका नाग प्रकाशक, दिल्ली के द्वारा इसका प्रकाशन सन् 1995 में किया गया था (उपाध्याय एवं उपाध्याय, 1995)।

10.6.12. वैदिक पादानुक्रम कोश

वैदिक पादानुक्रम कोश मौरिस ब्लूम्फील्ड के ग्रन्थ वैदिक कॉन्कोरडैन्स का हिन्दी अनुवाद है। यह दो खण्डों मे विभाजित है। इस ग्रन्थ को ओमनाथ बिमली तथा सुनील कुमार उपाध्याय ने सम्पादित किया है। परिमल प्रकाशन, दिल्ली ने इसे सन् 2005 में प्रकाशित किया था (बिमली एवं उपाध्याय, 2005)।

10.6.13. An Update Vedic concordance

An Update Vedic concordance नामक अंगेजी ग्रन्थ प्राप्त होता है। जिसमें मौरिस ब्लूम्फील्ड के ग्रन्थ वैदिक कॉनकोर्डैन्स को नवीन बिन्दुओं के साथ परिवर्धित संस्करण बना

कर प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रन्थ को लेखक ने रोमन लिपि में लिखा है। इसमें मौरिस ब्लूम्फील्ड (Maurice Bloomfield) के ग्रन्थ के विषयों को लिया गया है। इस ग्रन्थ में रोमन लिपि में मन्त्रों की अनुक्रमणिका दर्शायी गयी है। यह दो खण्डों मे लिखित है। मारको फ्रान्केस्चिनि (Marco Franceschini) द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 2007 में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, लन्दन तथा मिमेसिस एडिज़िओनि, इटली से किया गया है (Franceschini, 2007)।

10.6.14. यजुर्वेद पदार्थ कोष

यजुर्वेद पदार्थ कोषः में यजुर्वेद के मन्त्रों का अकारादिक्रम से दयानन्द के अनुसार अर्थ प्रस्तुत किया गया है। यह तीन भागों में प्रकाशित है। इसका सम्पादन प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री ने किया है। परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली ने सन् 2009 में इसका प्रकाशन किया था (शास्त्री, 2009)।

10.6.15. बृहद् वैदिक संहिता धातुकोष

बृहद् वैदिक संहिता धातुकोषः दो भागों प्रकाशित ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में पाठों के विभाग तीन प्रकार से किए गए हैं-

10.6.15.1. मन्त्रानुक्रमणी- अकारादिक्रम से मन्त्रों का अनुक्रमण किया गया है।

10.6.15.2. ऋग्वेद धातुकोषानुसार उपसर्ग- ऋग्वेद के पदों में उपसर्गों का प्रयोग हुआ है उन्हें अकारादिक्रम से दर्शाया गया है।

10.6.15.3. धातुकोष- ऋग्वेद के पदों में प्रयुक्त धातुओं का अकारादिक्रम से वर्णन है तथा उनकी मन्त्र संख्या भी दर्शायी गयी है।

इस ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. प्रभात कुमार ने किया है। यह ग्रन्थ प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली से सन् 2011 में प्रकाशित किया गया था (कुमार, 2011)।

10.6.16. वैदिक कोश

वैदिक कोश का सम्पादन सूर्यकान्त ने किया था तथा इसका प्रकाशन चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी ने सन् 2012 में किया था। वैदिक इण्डैक्स के दो भागों में वर्ण, जाति, कृषि एवं ज्योतिष आदि विषयों तथा जनक वसिष्ठ, विश्वामित्र आदि नामों की सूची दी गयी थी। किन्तु इसमें कुछ आवश्यक विषय एवं नाम छूट गए थे। यथा- यज्ञ शब्द की व्याख्या 6-7 पृष्ठों में करी गयी थी, किन्तु इस ग्रन्थ में 36 पृष्ठों में की गयी है। अंशु शब्द जो कि सोम वाचक है वह नहीं दिया गया है। अतः प्रस्तुत कोष में यथा साध्य सभी शब्दों का संकलन लेखक ने किया है (सूर्यकान्त, 2012)।

10.6.17. ऋग्भाष्य-पदार्थ-कोष

ऋग्भाष्य-पदार्थ-कोष में यास्क से लेकर दयानन्द पर्यन्त अकारादिक्रम से वेदों के मन्त्रों के शब्दों का अर्थ दिया गया है। यह आठ भागों में प्रकाशित ग्रन्थ है। इसका सम्पादन प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री तथा निशान्त कुमार ने किया था तथा इसका प्रकाशन परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली ने सन् 2013 ने किया था (शास्त्री एवं कुमार, 2013)।

10.6.18. प्रस्थान त्रयी पदानुक्रम कोष

प्रस्थान त्रयी पदानुक्रम कोष में प्रमुख उपनिषदों के साथ-साथ ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता के पदों और पदार्थों का समावेश किया गया है। यह कोष न तो पूर्ण रूप से पदानुक्रम कोष है और न ही पदार्थकोष है। उपनिषदों के शाङ्कर भाष्य में से कठिन और अप्रयुक्त शब्दों के अर्थ उक्त कोष में दिए गए हैं। इस ग्रन्थ का सम्पादन प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री ने किया था तथा इसका प्रकाशन परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली ने सन् 2013 ने किया था (शास्त्री, 2013)।

10.6.19. वैदिक इण्डैक्स

वैदिक इण्डैक्स ए. ए. मैक्डॉनल (A.A. Macdonell) तथा ए. बी. कीथ (A.B. keith) द्वारा रचित वैदिक इण्डेक्स ऑफ नेम्स एण्ड सबजैक्ट्स (Vedic index of names and subjects) का हिन्दी अनुवाद है। यह दो खण्डों में विभाजित ग्रन्थ है जिसका सम्पादन राम कुमार राय ने किया था तथा इसका प्रकाशन चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी ने सन् 2014 में किया था (राय, 2014)।

10.7. संस्कृत ग्रन्थों से सम्बन्धित वेब आधारित अनुक्रमणिकाओं का सर्वेक्षण

वेब आधारित अनुक्रमणिका में क्षेत्र में जे.एन.यू. में अमरकोश, महाभारत, श्रीमद् भगवद्गीता, आयुर्वेद, बृहदारण्यक उपनिषद, वेदांत आदि विषयों पर वेब आधारित कार्य हो चुका है। वेदों पर अभी तक वेब आधारित अनुक्रमणिका के लिए विशिष्ट कार्य नहीं हुए हैं। वेब आधारित अनुक्रमणिका के क्षेत्र में वेद, पुराण, महाभारत, रामायण, आयुर्वेद, चरकसंहिता आदि ग्रन्थों पर कार्य हो चुके हैं। जिनमें से निम्नलिखित को यहाँ वर्णित किया गया है।

इन्टरनेट सेक्रेड़ टैक्स्ट आरचीव (Internet sacred text archive)[77] के अन्तर्गत वेब पृष्ठ पर ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, शतपथ ब्राह्मण, मनुस्मृति, गृह्यसूत्र, विष्णु सूक्त, पुराण, महाभारत, रामायण, भागवत गीता, वेदान्त सूत्र, कालिदास के ग्रन्थादि विषयों पर पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रस्तुत भाष्यों को समाहित किया गया है। इस वेब पृष्ठ में धर्म, पुराण, किंवदंतियों लोकगीत, मनोगत और गूढ़ विषयों के बारे में इलेक्ट्रॉनिक रूप में ग्रन्थों का एक स्वतंत्र रूप से उपलब्ध संग्रह है। ग्रन्थों का अंग्रेजी अनुवाद किया गया है और जहां संभव हो पाया उसे मूल भाषा में भी प्रस्तुत किया गया है। टैक्सास यूनिवर्सिटी (Texas University) के लिंग्विस्टिकस् रिसर्च सेन्टर (Linguistics Research Center)[78] ने मृत भाषाओं को जीवित रखने के उपक्रम में विभिन्न विषयों को रोमन लिपि में उपलब्ध कराया गया है। इसी उपक्रम के अन्तर्गत ऋग्वेद को भी रोमन

[77] http://www.sacred-texts.com/index.htm
[78] http://www.utexas.edu/cola/centers/lrc/

लिपि में परिवर्तित करके इसे खोज के लिए प्रस्तुत किया गया है[79] । वैदिक मंत्रों के डिजिलाइजेशन के क्षेत्र में आर्यमन्तव्य[80] का कार्य बहुत ही सराहनीय है जिन्होंने न केवल सभी वेदों को ऑनलाइन किया बल्कि सभी मन्त्रों की हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी व्याख्या भी प्रस्तुत की है । आर्यमन्तव्य की स्थापना सन् 2014 में हुई । यह पण्डित लेखराम वैदिक मिशन के अन्तर्गत परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा व्यवस्थित किया जाता है[81] । इसमें चारों वेदों के विभिन्न भाष्यकारों के भाष्यों को यूनिकोड रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

वेदों एवं अन्य संस्कृत के ग्रन्थों के स्कैन प्रतिलिपि के लिए बहुत सारे लोगों ने कार्य किया है तथा इसे ऑनलाइन उपलब्ध कराया है । जिनमें से सबसे पहले आर्य प्रकाश[82] नामक वेबपृष्ठ आर्यसमाज जामनगर, गुजरात द्वारा स्थापित किया गया है । इन्होंने सभी वेदों, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वैदिक संस्कार, अष्टाध्यायी, दयानन्द द्वारा रचित ग्रन्थ, योग, न्याय, सांख्य, वैशेषिक और वेदान्त दर्शन आदि ग्रन्थों की स्कैन प्रतिलिपि को उपलब्ध कराया है । जिसके माध्यम से कोई भी इन ग्रन्थों को पढ़ सकता है । लिटरेचर[83] नामक एक वेब पेज पर सभी वेदों एवं अन्य ग्रन्थों की स्कैन प्रतिलिपि उपलब्ध है जो किसी भी छात्र के लिए सहायक हो सकती है । इसमें अनेकों ग्रन्थों[84] का समावेश किया गया है जिनमें से श्रीराम शर्मा द्वारा भाषित चारों वेद, पुराण, दर्शन, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद, प्रेरणापद कथाएँ, अमृतवाणी आदि ग्रन्थों की स्कैन प्रिलिपियों का समावेश किया गया है[85] । इस क्षेत्र में वैदिकग्रन्थडॉटओआरजी (Vedicgranth.org)[86] का भी योगदान सराहनीय है जहां पर चारों वेदों, उपवेदों, वेदाङ्ग, ब्राह्मण, आरण्यक, सूत्र, स्मृति, दर्शनशास्त्र, उपनिषद्, इतिहास, नीति आदि से सम्बन्धित ग्रन्थों की स्कैन प्रतिलिपि सार्वजनिक

[79] http://www.utexas.edu/cola/centers/lrc/about/history.html
[80] http://www.onlineved.com/
[81] http://www.onlineved.com/about-us/
[82] http://www.aryasamajjamnagar.org/
[83] http://literature.awgp.org/
[84] http://literature.awgp.org/books
[85] http://literature.awgp.org/hindibook/
[86] http://www.vedicgranth.org/

उपयोग के लिए रखी गई है । संस्कृत वेब[87] नाम से वेब पृष्ठ चारों वेदों, रामायण, महाभारत, उपनिषद्, कोष आदि ग्रन्थों की स्कैन प्रतिलिपि स्थापित की गई है।

संस्कृत वाङ्मय खोज एवं अनुक्रमणिका के क्षेत्र में भी बहुत सारे कार्य हुए जिनमें विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का नाम अग्रगण्य है । इस केन्द्र ने प्रो. गिरीश नाथ झा के निर्देशन में संगणकीय भाषाविज्ञान से सम्बन्धित कार्य सन् 2002 से प्रारम्भ किया है । सबसे पहले संस्कृत व्याकरण से संबन्धित बहुत से कार्य हुए हैं जिनमें से सुबन्त विश्लेषक[88] (Chandra, 2006; Chandra, 2007; Chandra, 2007; Chandra, 2011 & Chandra and Jha, 2006), सन्धि विच्छेदक तथा निर्मापक[89] (Kumar, 2007), तिङन्त विश्लेषक[90] (Agrawal, 2007), कृदन्त विश्लेषक[91] (Singh, 2008), कारक विश्लेषक[92] (Mishra & Jha, 2004 and Mishra, 2007), स्त्रीप्रत्ययान्त विश्लेषक (Bhadra, 2007) तथा सुबन्त निर्मापक[93] (Jha, 2003), तिङन्त निर्मापक[94] आदि मुख्य हैं। ऑनलाइन अनुक्रमणिका के क्षेत्र में यहाँ अनेक कार्य हुए हैं जिसमें से निम्नलिखित मुख्य हैं:

10.7.1. ऑनलाइन बहुभाषीय अमरकोश (Online Multilingual Amarakosha): इस सिस्टम[95] के माध्यम से कोई भी ऑनलाइन अमरकोश के पाठ में प्राप्त होने वाले किसी भी शब्द को खोज सकता है । यह सिस्टम बहुभाषीय है जिसमें खोजे हुए शब्द का संस्कृत, हिन्दी, अंगेजी, बांग्ला, पंजाबी, असमी, उड़िया, मैथिली तथा कन्नड़ आदि किसी भाषा में अनुवाद प्राप्त होता है तथा इनमें से किसी भी भारतीय भाषा के माध्यम से खोज की जा सकती है। किसी शब्द की खोज के बाद उसका सन्दर्भ सहित अन्य सूचनाएँ जैसे पर्यायवाची, व्याकरण, आदि उपलब्ध होता है

[87] http://www.sanskritweb.net/
[88] http://sanskrit.jnu.ac.in/subanta/rsubanta.jsp
[89] http://sanskrit.jnu.ac.in/sandhi/gen.jsp
[90] http://sanskrit.jnu.ac.in/tanalyzer/tanalyze.jsp
[91] http://sanskrit.jnu.ac.in/kridanta/ktag.jsp
[92] http://sanskrit.jnu.ac.in/karaka/analyzer.jsp
[93] http://sanskrit.jnu.ac.in/subanta/generate.jsp
[94] http://sanskrit.jnu.ac.in/tinanta/tinanta.jsp
[95] http://sanskrit.jnu.ac.in/amara/index.jsp

(Jha, 2006, Chandrashekar, Singh, Jha, Pandey, Singh, Mishra & Jha. 2010 and Chandrashekar et al, 2009)।

10.7.2. महाभारत खोज (Mahabharat Search): यह कार्य[96] दिवाकर मणि त्रिपाठी (2008) द्वारा किया गया है। जिसके द्वारा महाभारत में आए हुए किसी भी शब्द को कभी भी खोजा जा सकता है। खोजे हुए शब्द का पूर्ण संदर्भ हाइपर लिंक के साथ प्राप्त होता है इस लिंक पर क्लिक करने से उससे सम्बन्धित श्लोक प्राप्त हो जाता है (Mani, Singh, Sinha and Jha, 2009 and Mani & Jha, 2006)।

10.7.3. आयुर्वेद खोज (Ayurveda Search): यह कार्य[97] चरक तथा सुश्रुत संहिता पर आधारित है। सुश्रुत संहिता पर रजनीश कुमार पाण्डेय (2011 and 2012)[98] तथा चरक (Tiwari, 2011) पर अर्चना तिवारी (2011)[99] ने कार्य किया है। जिसके माध्यम से इन ग्रन्थों में किसी भी शब्द को खोजा जा सकता है।

10.7.4. वेदान्त खोज (Vedanta Search): इस सिस्टम[100] के तहत वेदान्त ग्रन्थों में वेद, संहितोपनिषद् ब्राह्मण, वृहदारण्यकोपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, अपरोक्षानुभूति, साङ्ख्यकारिका, रामायण, मेघदूत, ऋतुसंहार, निरुक्त, मेदिनीकोश, हलायुध कोश मङ्खकोश आदि ग्रन्थों पर खोज उपलब्ध है। जिससे इन ग्रन्थों में प्रयुक्त कोई भी शब्द किसी समय खोजे जा सकते हैं (Mani, Singh, Sinha and Jha, 2009; Jha, 2010)।

इसी प्रकार अन्य ग्रन्थों पर भी सिस्टम उपलब्ध हैं। यह केन्द्र ई-शिक्षण पर भी कार्य करता है। जिसके तहत स्कूल के पाठ्यक्रमों पर कुछ कार्य उपलब्ध होता है (Bhaumik, 2009)।

[96] http://sanskrit.jnu.ac.in/mb/index.jsp
[97] http://sanskrit.jnu.ac.in/ayurveda/index.jsp
[98] http://sanskrit.jnu.ac.in/susruta/index.jsp
[99] http://sanskrit.jnu.ac.in/caraka/index.jsp
[100] http://sanskrit.jnu.ac.in/vedanta/index.jsp

संस्कृत ड़ॉक्यूमैन्ट्स (Sanskrit Documents)[101] के लिए एक वेबसाइट प्राप्त होती है। जिस पर अनेक ग्रन्थ प्राप्त होतें हैं जिनमें से कुछ को स्कैन के रूप में तथा कुछ यूनीकोड में भी उपलब्ध हैं। इसमें श्रुति, स्मृति, इतिहास, शास्त्र, भाषा, साहित्य, तन्त्र, वेदान्त, योग, कोष, व्याकरण आदि से सम्बन्धित कार्यों की स्कैन प्रतिलिपि स्थापित है। इस वेबपृष्ठ पर बहुत अधिक कार्यों का समावेश किया गया है।

इस प्रकार यह कह सकते हैं कि इस क्षेत्र में अनेक कार्य हुए हैं। इसकी उपयोगिता भी बहुत है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में शोधकर्त्ताओं एवं जिज्ञासुओं को सामग्री कम समय में अपेक्षित होती है। अतः इस प्रकार के सिस्टम की अवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। इससे सूचनाएँ सटीक एवं बहुत ही कम समय में प्राप्त होती हैं।

[101] http://sanskritdocuments.org/

चतुर्थ अध्याय

ऋग्वैदिक ई-पाठ तथा अनुक्रमणिका तन्त्र विकास के संगणकीय पक्ष

यह अध्याय ऋग्वेदीय अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास के प्रायोगिक कार्यान्वयन का विस्तृत वर्णन करता है । इसमें संगणकीय भाषाविज्ञान की इंडेक्सिंग (Indexing) तथा सूचना पुनर्प्राप्ति (Information Retrieval) की विधियों का प्रयोग किया गया है (Baeza, 2003; Cotter, 2004; Yu, 2012 and Jurafsky, 2013) ।

अनुक्रमणिका हेतु संगणकीय प्रारूप प्रोग्राम के लिए पाइथॉन (Bill, 2014; Dawson, 2010 and Knowlton, 2004) प्रोग्रामिंग भाषा का प्रयोग करता है । जिसमें ऋग्वैदिक मन्त्र तथा इससे सम्बन्धी अन्य सूचनाएँ डेटाबेस से प्राप्त की जाती हैं । सबसे पहले अनुक्रमणिका से सम्बन्धित शास्त्रों का अध्ययन करके इन शास्त्रों की सहायता से अनुक्रमणिका के लिए मन्त्रों का एक डेटाबेस बनाया गया है । इसके बाद इसी डेटाबेस की सहायता से एक खोज इंजन (Search Engine) विकसित किया गया । जिसकी कोडिंग पाइथॉन (Python) भाषा में की गई है । मन्त्रों के डेटाबेस में मन्त्र, संहिता पाठ, मन्त्र का क्रम, विभाजन, पदपाठ, ऋषि, देवता, छन्द, स्वर आदि सभी सूचनाएँ रखी गई हैं । इसी प्रकार अन्य आवश्यक डेटा भी इसी डेटा की अन्य तालिकाओं में रखे गए हैं । खोज हेतु एक प्रयोक्ता इण्टरफेस (User Interface) का भी विकास किया गया है जिसकी सहायता से इस सिस्टम में इन्पुट (Input) दिया जाता है तथा आउटपुट (Output) भी इसी पृष्ठ पर दिखाया जाता है । इस प्रयोक्ता इण्टरफेस (User Interface) का स्क्रीनशॉट (Screenshot) चित्र संख्या 4.1 में दिखाया गया है । सिस्टम सबसे पहले प्रयोक्ता द्वारा दिए गए इन्पुट की पूर्वप्रक्रिया करता है फिर उस खोजे जाने वाले शब्द को मन्त्र के डेटाबेस में सर्च करता है । जिस किसी मन्त्र में खोजा जाने वाला शब्द प्राप्त होता है उस मन्त्र के साथ ही साथ उसकी सारी सूचनाएँ वापस कर देता है ।

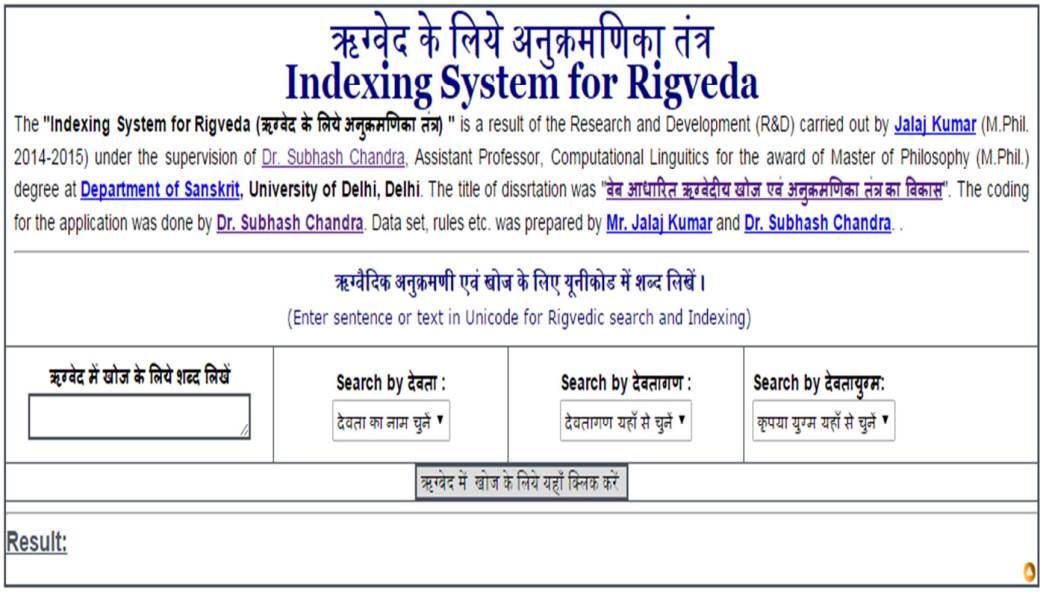

चित्र 4.1: ऋग्वैदिक अनुक्रमणिका तन्त्र का यूजर इण्टरफेस (User Interface)

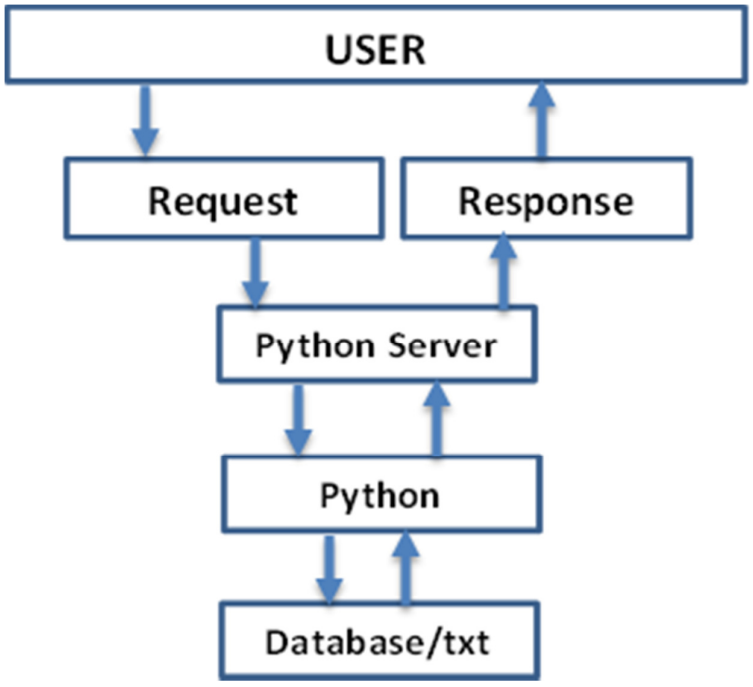

चित्र 4.2: वेब आधारित ऋग्वैदिक अनुक्रमणिका तन्त्र की संरचना (Architecture of the System)

1. ऋग्वैदिक अनुक्रमणिका तन्त्र की संरचना (Architecture of the System)

वेब आधारित ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तन्त्र के प्रयोक्ता इण्टरफेस (Front End) का विकास पाइथॉन सर्वर पेजेज (Python Server Pages) (पीएसपी) में किया गया है तथा डेटा संरक्षण हेतु डेटाबेस एवं टेक्स्ट फाइल का प्रयोग किया गया है जिसे तालिका सङ्ख्या 4.1 में दिखाया गया है । कोडिंग के लिए पाइथॉन प्रोग्रामिंग (Bill, 2014; Dawson, 2010 and Knowlton, 2004) भाषा का प्रयोग किया गया है । इस सिस्टम की संरचना बहु-स्तरीय है जिसको चित्र सङ्ख्या 4.2 में दिखाया गया है । सिस्टम के विभिन्न स्तरों की व्याख्या नीचे प्रस्तुत की गई है।

1.1. पाइथॉन सर्वर पेजेज (Python Server Pages)

यह सिस्टम इन्पुट (Input) तथा ऑउटपुट (output) एक प्रयोक्ता इण्टरफेस (User Interface) की सहायता से स्वीकृत करता है । यह इण्टरफेस पाइथॉन सर्वर पेजेज़ (Python Server Pages) में विकसित किया गया है[102] । इसका स्क्रीनशॉट (Screenshot) चित्र सङ्ख्या 4.2 में दिया गया है । यह इण्टरफेस (Interface) पीएसपी (PSP) में विकसित किया जिसमें वेब पेज के लिए एचटीएमएल (HTML) (Powell, 2010), टेक्स्ट फॉर्मेटिंग (Text Formating) के लिए सीएसएस (CSS) (Powell, 2010) तथा पेज को परिवर्तनशील बनाने के लिए जावा स्क्रिप्ट (Java Script) (Nixon, 2015) के साथ पाइथॉन (Python) (Bill, 2014; Dawson, 2010 and Knowlton, 2004) के कोड (Code) शामिल हैं । कोड (Code) का प्रारूप नीचे दिया गया है ।

```
<!—Import Template for Header and other details -->
<spy:parent src="../template/template.spy" />
```

[102] www.spyce.in

```
 [[.import name=redirect ]]
[[.import name=cookie ]]
 [[\
# Imports all functions for Rigveda
# coding: utf-8
import string, InfoGen, codecs, socket, cgi, os, re
from time import gmtime, strftime
]]
<link href="themes/1/tooltip.css" rel="stylesheet" type="text/css" />
<script src="themes/1/tooltip.js" type="text/javascript"></script>
<style type="text/css">
h4 { font-size: 16px; font-family: "Trebuchet MS", Verdana; line-height:18px;}
        table {
            border-collapse: collapse;
            }
            </style>

  <meta charset="UTF-8">
            <TITLE>Indexing System for Rigveda</TITLE>
            <p align="center"><center>
```

```
<table class="main" border="0" bordercolordark="navy" bordercolor="navy" cellpadding="0" cellspacing="0" width="80%" height="25">

    <tr>

    <td class="main" width="100%" align="center" colspan=3>

    <p align="center"><b><font face="Arial Unicode MS" color="navy"

     size="6px">ऋग्वेद के लिये अनुक्रमणिका तंत्र</font><br>

    <font face="Georgia" color="navy" size="6px">
          

    Indexing System for Rigveda</font></b>

    </p>
```

1.2. स्पाइसी (Spyce) वेब सर्वर (Web Server)

सर्वर के लिए स्पाइसी (Spyce) पाइथॉन सर्वर[103] का प्रयोग किया गया है । स्पाइसी (Spyce) एक सर्वर (Server) के लिए भाषा है जो परिवर्तनशीन एचटीएमएल (HTML) का बड़ी ही कुशलता से समर्थन करता है। एक प्रकार से यह जेएसपी (JSP) के जैसा ही है।

1.3. डेटाबेस एवं टेक्स्ट फाइल (Database and text file as back end)

ऋग्वेद मन्त्र से सम्बन्धित डेटा को नियम डेटाबेस (Database) तथा टेक्स्ट फाइल (Text File) में संरक्षित किया गया है। डेटाबेस के लिए माइएसक्यूएल (MySQL)[104] (Vaswani, 2004

[103] http://spyce.sourceforge.net/

and DuBois, 2015) का प्रयोग किया गया है (Nixon, 2015) जिसमें डेटा को देवनागरी यूनीकोड (Devanagari Database)[105] में रखा गया है । इसके साथ ही कुछ डेटा को टेक्स्ट फाइल में भी रखा गया है। ऋग्वेद मन्त्र डेटाबेस की संरचना को तालिका सङ्ख्या 4.1 में दिखाया गया है।

1.	क्रम सङ्ख्या	1
2.	स्वर सहित संहिता पाठ	अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
3.	स्वरबिना संहितापाठ	अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
4.	मण्डल क्रम	1.1.1
5.	अष्टक क्रम	1.1.1.1
6.	पदपाठ	अग्निम् । ईळे । पुरःऽहितम् । यज्ञस्य । देवम् । ऋत्विजम् । होतारम् । रत्नऽधातमम् ॥
7.	ऋषि	मधुच्छन्दाः वैश्वामित्रः
8.	देवता	अग्निः
9.	छन्द	गायत्री
10.	स्वर	षड्जः
11.	हिन्दी अनुवाद	यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलानेवाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।

तालिका 4.1: ऋग्वेद मन्त्र डेटाबेस की संरचना

2. ऋग्वैदिक अनुक्रमणिका तन्त्र के घटक (Component of Rigveda Indexing System):

यह सिस्टम सबसे पहले प्रदत्त इन्पुट (Input) की जांच करता है। फिर खोजे गए शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में कहाँ-कहाँ हुआ है इसके लिए मन्त्र के डेटाबेस में सर्च करता है तथा सूचना प्राप्त

[104] https://www.mysql.com/
[105] http://unicode.org/

होने पर सभी सूचनाओं को वेब पेज पर दिखाने के लिए भेजता है । इन सभी प्रक्रियाओं के लिए निम्नलिखित घटकों का प्रयोग किया गया है-

2.1. पूर्व प्रकिया (Pre-processor)

यह घटक प्रयोक्ता द्वारा खोजे जाने वाले शब्द में यदि गलती से कोई विशेष वर्ण आदि आ जाता है तो उसे हटाता है तथा हटाने के बाद इसको मन्त्र के डेटाबेस में खोजने के लिए भेजता है ।

2.2. ऋग्वेद अनुक्रमणीकार (Rigveda Indexer)

ऋग्वेद अनुक्रमणीकार (Rigveda Indexer) इस सिस्टम का सबसे महत्त्वपूर्ण घटक है । प्रयोक्ता द्वारा खोजे गए शब्द मन्त्र के डेटाबेस में से ढूँढकर उसकी स्वतः अनुक्रमणी तैयार करता है । खोज निम्नलिखित चार पद्धतियों से होती है:

2.2.1. सम्पूर्ण शब्द के द्वारा खोज (Search by whole word)

इस पद्धति में प्रयोक्ता द्वारा खोजा जाने वाला शब्द जिन-जिन मन्त्रों में पूरे शब्द के रूप में प्राप्त होता है उन सारे शब्दों की अनुक्रमणी स्वतः तैयार की जाती है । उदाहरण के लिए किसी प्रयोक्ता का इन्पुट "अग्निः" है तो मन्त्र में जहाँ-जहाँ "अग्निः" एक पूर्ण शब्द होगा उसकी अनुक्रमणी बनाकर परिणाम दिखाया जाता है ।

2.2.2. इन्पुट अक्षर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों द्वारा खोज (Search by Starts with input word)

इस पद्धति में प्रयोक्ता द्वारा खोजा जाने वाला अक्षर मन्त्रों में प्राप्त होने वाले शब्द के प्रारम्भ में होगा तो पूरे शब्द के साथ अनुक्रमणी स्वतः तैयार की जाती है । उदाहरण के लिए किसी प्रयोक्ता का इन्पुट "अग्नि" है तो मन्त्र में जहाँ-जहाँ "अग्नि" से प्रारम्भ होने वाले शब्द प्राप्त होंगे वह सारा मन्त्र अनुक्रमणी बनेगा । इस पद्धति से "अग्निमीळे" शब्द भी प्राप्त हो जाएगा तथा परिणाम में इसकी भी अनुक्रमणी प्राप्त होगी ।

2.2.3. इन्पुट अक्षर से अन्त होने वाले शब्दों द्वारा खोज (Search by Ends with input word)

इस पद्धति में प्रयोक्ता द्वारा खोजा जाने वाला अक्षर मन्त्रों में प्राप्त होने वाले शब्द के अन्त में होगा तो पूरे शब्द के साथ अनुक्रमणी स्वतः तैयार की जाती है। उदाहरण के लिए किसी प्रयोक्ता का इन्पुट "अग्नि" है तो मन्त्र में जहाँ-जहाँ "अग्नि" से अन्त होने वाले शब्द प्राप्त होंगे वह सारा मन्त्र अनुक्रमणी बनेगा। इस प्रक्रिया से "इन्दाग्नि" शब्द भी प्राप्त हो जाएगा तथा परिणाम में इसकी भी अनुक्रमणी प्राप्त होगी।

2.2.4. इन्पुट अक्षर के मध्य में आने वाले शब्दों द्वारा खोज (Search string in the Middle of the word)

इस पद्धति में प्रयोक्ता द्वारा खोजा जाने वाला अक्षर मन्त्रों में प्राप्त होने वाले शब्द के मध्य में होगा तो पूरे शब्द के साथ अनुक्रमणी स्वतः तैयार की जाती है। उदाहरण के लिए किसी प्रयोक्ता का इन्पुट "अग्नि" है तो मन्त्र में जिस-जिस मन्त्र में "अग्नि" शब्द के मध्य में प्राप्त होगा वह सारा मन्त्र अनुक्रमणी बनेगा। इस प्रक्रिया से "अयमग्निरुरुष्य" शब्द भी प्राप्त हो जाएगा तथा परिणाम में इसकी भी अनुक्रमणी प्राप्त होगी।

2.3. आउटपुट जनरेटर (Output Generator)

ऋग्वेद अनुक्रमणीकार (Rigveda Indexer) द्वारा प्राप्त अनुक्रमणी की सूची को यह घटक पेज परिणाम के रूप में दर्शाता है तथा साथ ही साथ सभी अनुक्रमणी को हाइपरलिन्क (Hyperlink) करता है जिस पर क्लिक करने पर उससे सम्बन्धित सम्पूर्ण मन्त्र खुलता है और उसकी सारी सूचना भी दिखाई जाती है। यह घटक डेटा को वेब पेज के लिए फार्मेट (Format) भी करता है।

2.4. मन्त्र डेटाबेस (Mantra Database)

जैसाकि पहले बताया जा चुका है ऋग्वैदिक मन्त्रों का एक डेटाबेस बनाया गया है जिसमें सभी सूचनाएँ विभिन्न कॉलमों में संरक्षित की गईं हैं। इन सूचनाओं में क्रम सङ्ख्या, स्वर सहित

संहिता पाठ, स्वरबिना संहितापाठ, मण्डल क्रम, अष्टक क्रम, पदपाठ, ऋषि, देवता, छन्द, स्वर तथा हिन्दी अनुवाद आदि शामिल हैं। इन सूचनाओं का विवरण निम्नलिखित है:

2.4.1. क्रम संख्या: इस कॉलम में मन्त्र क्रम संख्या दी गई है। जो 1 से प्रारम्भ होती है। यह प्रत्येक मन्त्र की यूनीक आईड़ी (Unique ID) का भी कार्य करती है।

2.4.2. स्वर सहित संहिता पाठ: डेटाबेस में ऋग्वैदिक मन्त्रों को स्वर के साथ संरक्षित किया गया है। इसका प्रारूप तालिका संख्या 4.2 मे दिखाया गया है।

स्वर सहित संहिता पाठ
अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

तालिका 4.2: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का स्वर युक्त संहिता पाठ

2.4.3. स्वर बिना संहिता पाठ: डेटाबेस में ऋग्वैदिक मन्त्रों को स्वर के बिना संरक्षित किया गया है। इसका प्रारूप तालिका संख्या 4.3 में दिखाया गया है।

स्वरबिना संहितापाठ
अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

तालिका 4.3: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का स्वर बिना संहिता पाठ

2.4.4. मण्डल क्रम- यह ऋग्वेद का सर्वाधिक प्रचलित विभाजन क्रम है जिसका प्रयोग अधिकांशतः होता है। इसमें ऋग्वेद को 10 मण्डलों में विभाजित किया गया है जिसमें कुल 1028 सूक्तों में 10552 मन्त्र हैं। मण्डल विभाजन के उदाहरण को तालिका 4.4 के माध्यम से दिखाया गया है।

मण्डल क्रम
1.1.1

तालिका 4.4: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का मण्डल क्रम

ऋग्वेदिक मन्त्रों को डेटाबेस में मण्डल क्रम में इस प्रकार कॉलम में रखा गया है। यह क्रम सङ्ख्या ऋग्वेद में प्रयुक्त मण्डल क्रम सङ्ख्या के अनुसार ही यहाँ पर रखी गई है।

ऋग्वेद में मन्त्रों का क्रम दो प्रकार से देखा जाता है- अष्टक क्रम तथा मण्डल क्रम। इसको उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं जैसे एक मन्त्र है "अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥"। इस मन्त्र को ऋग्वेद में मण्डल क्रम तथा अष्टक क्रम के आधार पर सङ्ख्या को दिया गया है। मण्डल क्रम को ऊपर तालिका सङ्ख्या 4.4 के माध्यम से दर्शाया गया है। अष्टक क्रम को तालिका सङ्ख्या 4.5 में दर्शाया गया है।

2.4.5. अष्टक क्रम- यह भी ऋग्वेद का विभाजन क्रम है किन्तु इसका प्रयोग केवल ऋग्वेद के पारायण के लिए प्रयुक्त होता है। इस क्रम के अनुसार ऋग्वेद को 8 अष्टकों में विभाजित किया गया है जिनमें से प्रत्येक अष्टक में 8 अध्याय हैं अतः कुल 64 अध्याय हैं तथा उन 64 अध्यायों में कुल 2024 वर्ग तथा 10552 मन्त्र हैं। अष्टक विभाजन के इस उदाहरण को तालिका 4.5 के माध्यम से दिखाया गया है।

अष्टक क्रम
1.1.1.1

तालिका 4.5: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का अष्टक क्रम

2.4.6. पदपाठ- पदपाठ में प्रत्येक पद का विभाजन किया जाता है। इस विभाजन के कारण स्वरों में भी परिवर्तन आता है। अष्ट विकृतियों (पद, क्रम, जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और घन) में पदपाठ भी सम्मिलित है जिसके कारण वेदपाठ की परम्परा विशुद्ध एवं निरन्तर रूप से विद्यमान है। डेटाबेस में पदपाठ को उदाहरण को तालिका 4.6 के माध्यम से दिखाया गया है।

पदपाठ
अग्निम्। ईळे। पुरःऽहितम्। यज्ञस्य। देवम्। ऋत्विजम्। होतारम्। रत्नऽधातमम्॥

तालिका 4.6: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का पदपाठ

2.4.7. ऋषि- ऋषि को मन्त्रों का कर्ता नही अपितु द्रष्टा माना जाता है । विभिन्न ऋषियों ने अलग-अलग मन्त्र का साक्षात्कार किया था जिसके कारण वे मन्त्र ऋषियों द्वारा दृष्ट कहलाते हैं । इस उदाहरण को तालिका 4.7 के माध्यम से दिखाया गया है ।

मन्त्र	ऋषि
अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥	मधुच्छन्दाः वैश्वामित्रः

तालिका 4.7: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र द्रष्टा ऋषि नाम

2.4.8. देवता- जिस देवता से उस मन्त्र में प्रार्थना की गई होती है वह उस मन्त्र का देवता कहलाता है । इस उदाहरण को तालिका 4.8 के माध्यम से दिखाया गया है ।

मन्त्र	देवता
अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥	अग्निः

तालिका 4.8: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का देवता

2.4.9. छन्द- मन्त्र का गान जिस छन्द के अनुसार किया जाता है वह उस मन्त्र का छन्द होता है । इस उदाहरण को तालिका 4.9 के माध्यम से दिखाया गया है ।

मन्त्र	छन्द
अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥	गायत्री

तालिका 4.9: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का छन्द

2.4.10. स्वर- मन्त्र का गान जिस स्वर में किया जाता है वह उस मन्त्र का स्वर होता है । इस उदाहरण को तालिका 4.10 के माध्यम से दिखाया गया है ।

मन्त्र	स्वर
अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥	षड्जः

तालिका 4.10: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का स्वर

2.4.11. हिन्दी अनुवाद – प्रस्तुत तन्त्र में मन्त्र का हिन्दी अनुवाद भी दिया जाएगा। यह हिन्दी अनुवाद सायण के ऋग्वेद भाष्य पर आधारित है। डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र के हिन्दी अनुवाद को तालिका सङ्ख्या 4.11 के माध्यम से दर्शाया गया है।

मन्त्र	हिन्दी अनुवाद
अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥	यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलानेवाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।

तालिका 4.11: डेटाबेस में संरक्षित मन्त्र का हिन्दी अनुवाद

इस प्रकार मन्त्रों के डेटाबेस में सभी सूचनाओं को रखा गया है। यह सभी सूचनाएँ मन्त्र को खोजे जाने पर जो लिन्क उपलब्ध होगा उसको खोलने के पश्चात् ही प्राप्त होगी।

3. ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तन्त्र की प्रक्रिया (Process of the Rigvedic Indexing):

ऋग्वैदिक अनुक्रमणिका तन्त्र विभिन्न चरणों में कार्य करता है। सिस्टम सबसे पहले प्रयोक्ता द्वारा दिए गए इन्पुट की पूर्वप्रक्रिया को करता है फिर उस खोजे जाने वाले शब्द को मन्त्र के डेटाबेस में सर्च करता है। यह सर्च ऊपर बताई गई चार विधियों के माध्यम से होती है तथा परिणाम भी इसी क्रम में दिखाए जाते हैं। खोजा जाने वाला शब्द जिस-जिस मन्त्र में मिलता है अनुक्रमणीकर्ता उसकी अनुक्रमणी बनाता है तथा संरक्षण भी करता है। सर्च पूर्ण होने के बाद परिणाम वेब पेज पर दिखाया जाता है। इसकी पूरी प्रकिया को चित्र सङ्ख्या 4.3 से समझा जा सकता है।

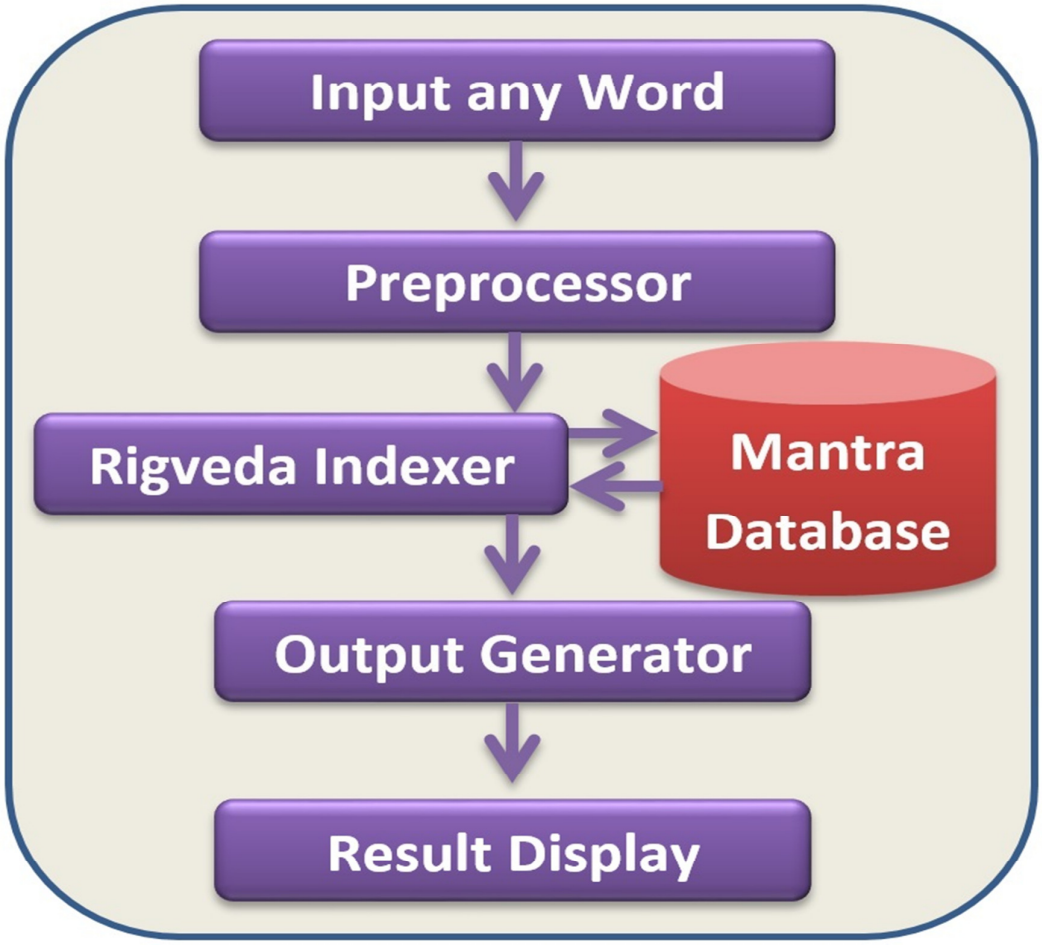

चित्र 4.3: ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तन्त्र की प्रक्रिया

(Process of the Rigvedic Indexing)

पञ्चम अध्याय

वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का परिचय

वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तंत्र का विकास इस लघु शोध प्रबन्ध का परिणामस्वरूप एक ऋग्वेद के लिए वेब आधारित अनुक्रमणिका तंत्र का विकास किया गया है। यह सिस्टम दिल्ली संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय http://sanskrit.du.ac.in पर सार्वजनिक उपलब्ध है। जिसके माध्यम से कोई भी इस वेब पेज पर जाकर किसी भी शब्द को ऋग्वेद में खोज सकता है। अगर खोजा गया शब्द पूरे ऋग्वेद में कहीं पर भी प्राप्त होता है तो उसका पूर्ण सन्दर्भ प्रयोक्ता को प्राप्त हो जाता है। इसके साथ ही साथ इस सन्दर्भ पर क्लिक करने पर पूरा मन्त्र देखा जा सकता है। मन्त्र के साथ उसका पूर्ण संदर्भ (क्रम संख्या आदि), छन्द, देवता, ऋषि, पदपाठ, स्वर आदि की पूर्ण सूचना प्राप्त होती है। इस वेबपेज में प्रयोक्ता के लिए निम्नलिखित जानकारी आवश्यक हैं-

1. इन्पुट मकैनिज्म (Input Mechanism):

वेब पेज पर इन्पुट देने के लिए निम्नलिखित पद्धतियाँ हैं।

1.1 पाठबॉक्स (Text Box):

वेब पेज पर एक पाठबॉक्स है जिसके माध्यम से प्रयोक्ता यूनीकोड (Unicode) देवनागरी में तात्कालिक सन्दर्भ के लिए इन्पुट के रूप में किसी भी शब्द को लिख सकता है जिसका ऋग्वेद में वर्णन किया गया हो। इन्पुट केवल यूनीकोड में देवनागरी लिपि में ही दिया जा सकता है। अन्यथा कोई परिणाम नही प्राप्त होगा। अगर कोई प्रयोक्ता एक साथ एक से अधिक शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहता है तो यह भी सम्भव है। इस पाठबॉक्स में एक साथ एक से अधिक शब्दों का भी नाम इन्पुट स्पेस (" ") के साथ दिया जा सकता है। पाठबॉक्स चित्र सङ्ख्या 5.1 में दिखाई गई है।

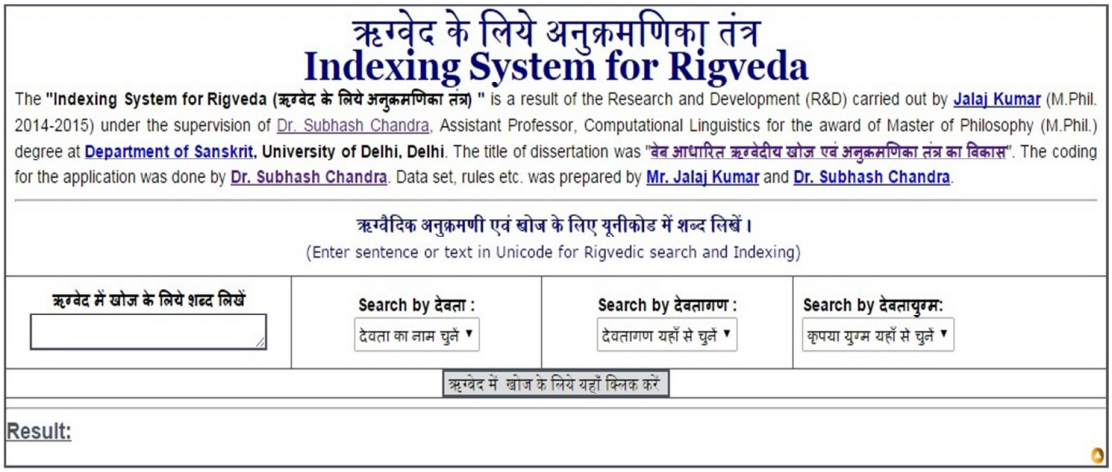

चित्र 5.1: पाठबॉक्स (Text Box)

1.2 देवता नाम से खोज (Search by Devta Name)

अगर कोई प्रयोक्ता देवनागरी लिपि में यूनीकोड में टाइप करने में असमर्थ है तो उसकी सूचना की सुविधा के लिए उपलब्ध सभी देवताओं के नामों की एक सूची (dropdown menu) भी दी गई है जिसका प्रयोक्ता खुद चुनाव कर सकता है। प्रयोक्ता एक बार में एक ही देवता के नाम का चुनाव कर सकता है किन्तु यदि प्रयोक्ता को एक साथ दो देवताओं या देवता गण की सूची प्राप्त करनी है तो उसे आगे की सूचियों को देखना पड़ेगा । इसके लिए उसे कम्प्यूटर के की-पैड पर कन्ट्रोल (Ctrl Key) को प्रेस करके देवता के नाम का चुनाव माउस की सहायता से करना होता है। देवता के नाम से चुनाव की प्रक्रियाओं को चित्र सङ्ख्या 5.1 में दिखाया गया है । देवता से सम्बन्धित मन्त्रों की सूचना तन्त्र के इन्पुट हेतु यह सबसे सुगम विकल्प है इसमें प्रयोक्ता को कुछ भी टाइप करने की आवश्यकता नही होती है केवल उसे चुनाव करना पड़ता है। देवताओं के नाम की सूची चित्र सङ्ख्या 5.2 में दिखाई गई है।

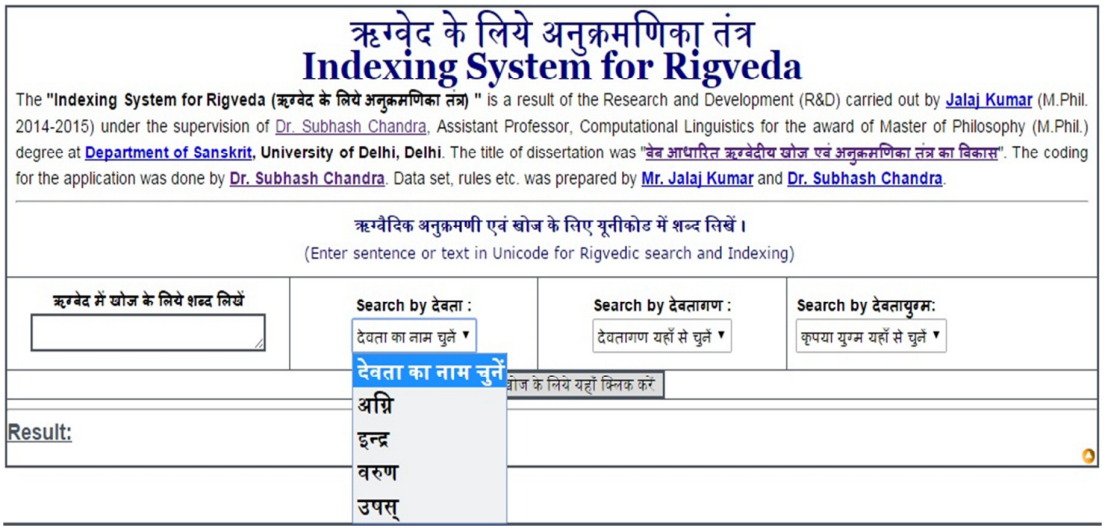

चित्र 5.2: देवताओं के नामों की सूची (Dropdown Menu)

1.3 देवतागण से खोज (Search by Devatagan)

प्रयोक्ता पिछली सूची की ही तरह यहाँ पर मन्त्रों की खोज बिना शब्द का इन्पुट दिए कर सकता है। यहाँ पर देवतागण के नामों की सूची को रखा गया है जैसे आदित्य, रुद्र, मरुत् आदि। अतः देवतागण के बारे में कोई प्रयोक्ता देवनागरी लिपि में यूनीकोड में टाइप करने में असमर्थ है या उसे देवतागण के नामों की सूचना नही है तथा वह उनसे सम्बन्धित सूचनाओं की प्राप्ति करना चाहता है तो उसकी सूचना के लिए उपलब्ध सभी देवतागण के नामों की एक सूची (Dropdown menu) को दिया गया है जिससे प्रयोक्ता देवतागणों का स्वयं चुनाव कर सकता है। प्रयोक्ता एक साथ एक से अधिक देवतागणों के नाम का चुनाव नही कर सकता है। इसके लिए उसे कम्प्यूटर के की-पैड पर कन्ट्रोल (Ctrl Key) को प्रेस करके देवता के नाम का चुनाव माउस की सहायता से करना होता है। देवतागणों के नाम से चुनाव की प्रक्रिया को चित्र सङ्ख्या 5.1 में दिखाया गया है। देवतागणों से सम्बन्धित मन्त्रों की सूचना तन्त्र के इन्पुट हेतु यह सबसे सुगम विकल्प है इसमें प्रयोक्ता को कुछ भी टाइप करने की आवश्यकता नही होती है केवल उसे चुनाव करना पड़ता है। देवतागणों के नाम की सूची चित्र सङ्ख्या 5.2 में दिखाई गई है।

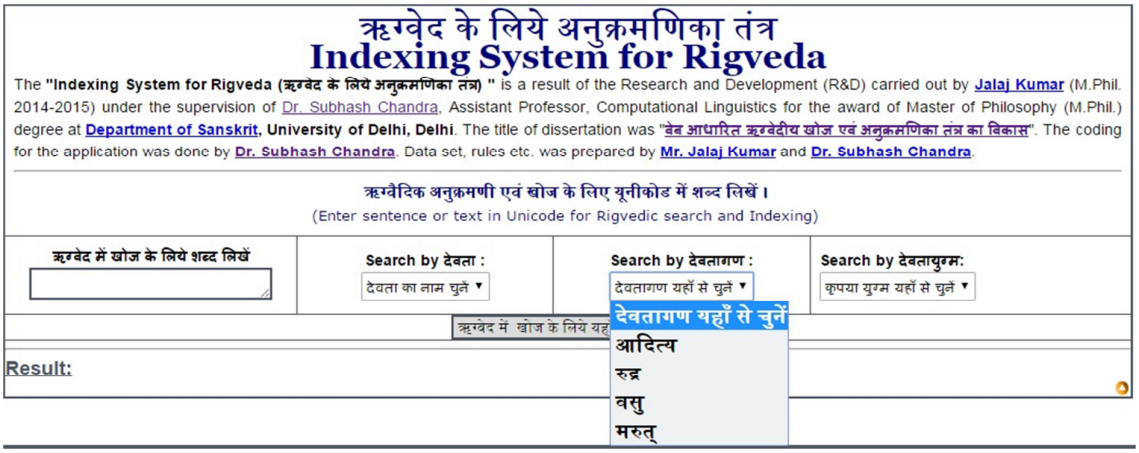

चित्र 5.3: देवतागणों के नामों की सूची (Dropdown Menu)

1.4 देवता युग्म से खोज (Search by Devatayugma)

प्रयोक्ता को पिछली सूचियों की तरह ही यहाँ पर भी मन्त्रों की खोज के लिए शब्द का इन्पुट देने की आवश्यकता नही है । यहाँ पर देवता युग्म के नामों की सूची को रखा गया है । जिन देवताओं की एक साथ प्रार्थनाएँ की गई हैं वह देवता युग्म कहलाते हैं जैसे मित्रावरुणा, इन्द्रासोमा, इन्द्राग्नि आदि । इस प्रकार यदि देवतायुग्म के विषय में कोई प्रयोक्ता देवनागरी लिपि में यूनीकोड में टाइप करने में असमर्थ है या उसे देवतायुग्म के नामों की सूचना नही है तथा वह उनसे सम्बन्धित सूचनाओं की प्राप्ति करना चाहता है तो उसकी सूचना के लिए उपलब्ध सभी देवतायुग्मों के नामों की एक सूची (dropdown menu) को दिया गया है जिससे प्रयोक्ता देवतायुग्म का स्वयं चुनाव कर सकता है । प्रयोक्ता एक साथ एक से अधिक देवतायुग्मों के नाम का चुनाव नही कर सकता है । इसके लिए उसे कम्प्यूटर के की-पैड पर कन्ट्रोल (Ctrl Key) को प्रेस करके देवतायुग्मों के नाम का चुनाव माउस की सहायता से करना होता है । देवतायुग्मों के नाम से चुनाव की प्रक्रिया को चित्र सङ्ख्या 5.1 में दिखाया गया है । देवतायुग्मों से सम्बन्धित मन्त्रों की सूचना तन्त्र के इन्पुट हेतु यह सबसे सुगम विकल्प है इसमें प्रयोक्ता को कुछ भी टाइप करने की आवश्यकता नही होती है केवल उसे चुनाव करना पड़ता है । देवतायुग्मों के नाम की सूची चित्र सङ्ख्या 5.2 में दिखाई गई है ।

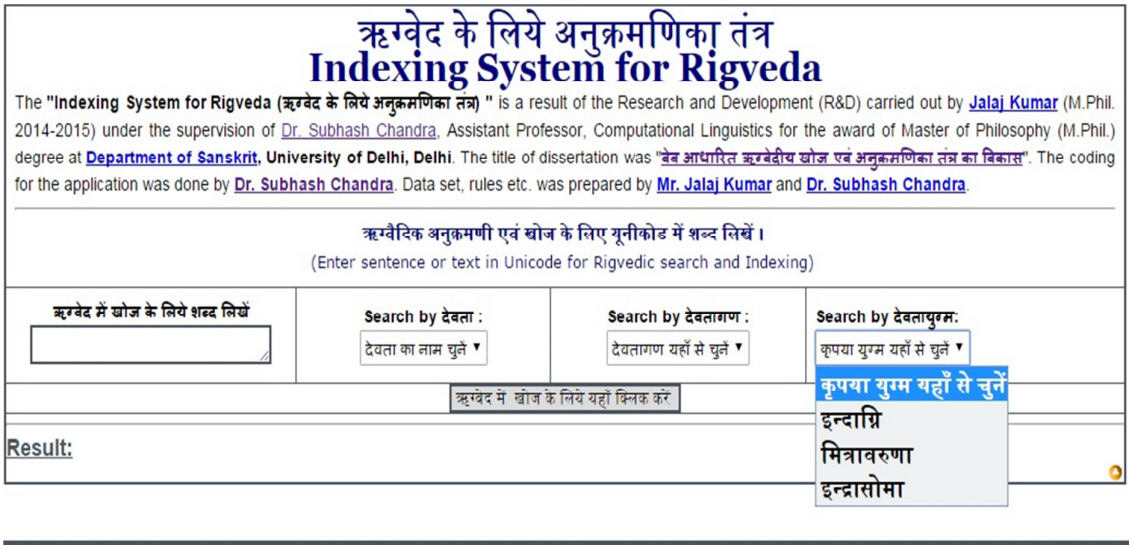

चित्र 5.4: देवता युग्मों के नामों की सूची (Dropdown Menu)

1.5 मण्डल क्रम से खोज (Dropdown Menu)

अगर कोई प्रयोक्ता सीधे मण्डल/सूक्त/मन्त्र के क्रमानुसार मन्त्रों की जानकारी प्राप्त करना चाहता है तो उसके लिए मण्डल/सूक्त/मन्त्र की भी एक सूची (Dropdown menu) दी गई है जिससे प्रयोक्ता सीधा उसमें जाकर मन्त्रों का चुनाव कर सकता है। प्रयोक्ता एक साथ एक से अधिक मण्डल/सूक्त/मन्त्र का चुनाव नही कर सकता है। इसके लिए उसे कम्प्यूटर के की-पैड पर कन्ट्रोल (Ctrl Key) को प्रेस करके मण्डल/सूक्त/मन्त्र का चुनाव माउस की सहायता से करना होता है। मण्डल/सूक्त से सम्बन्धित मन्त्रों की सूचना तन्त्र के इन्पुट हेतु यह सबसे सुगम विकल्प है इसमें प्रयोक्ता को कुछ भी टाइप करने की आवश्यकता नही होती है केवल उसे चुनाव करना पड़ता है।

1.6 ऋग्वेद में प्राप्त होने वाले शब्दों की अकारादि क्रम से खोज

प्रयोक्ता की सुविधा हेतु अकारादिक्रम से वर्णमाला खोज का विकल्प भी दिया गया है। अगर कोई प्रयोक्ता देवनागरी लिपि में यूनीकोड में टाइप करने में असमर्थ है तो उसके सूचना के लिए अकारादिक्रम से वर्णमाला की एक सूची (Dropdown menu) भी दी गई है जिससे प्रयोक्ता स्वयं वर्ण का चुनाव कर सकता है। इससे प्रयोक्ता यदि किसी भी वर्ण से सम्बन्धित मन्त्रों तथा प्रत्येक वर्ण की सङ्ख्या की सूचना प्राप्त करना चाहता है तो उसके लिए यह तन्त्र बहुत उपयोगी सिद्ध

होगा । प्रयोक्ता एक साथ एक से अधिक वर्णों का चुनाव नही कर सकता है । इसके लिए उसे कम्प्यूटर के की-पैड पर कन्ट्रोल (Ctrl Key) को प्रेस करके अकारादि क्रम से वर्णमाला का चुनाव माउस की सहायता से करना होता है । अकारादि क्रम से वर्ण से सम्बन्धित मन्त्रों की सूचना तन्त्र के इन्पुट हेतु यह सर्वाधिक सुगम विकल्प है इसमें प्रयोक्ता को कुछ भी टाइप करने की आवश्यकता नही होती है केवल उसे चुनाव करना पड़ता है ।

1.7 सब्मिट बटन (Submit Button):

सब्मिट बटन से उपरोक्त किसी भी माध्यम में प्रदत्त इन्पुट को सूचना प्रक्रिया के लिए बैक एण्ड प्रोग्राम (Back End Program) को भेजना होता है । सब्मिट करने पर पूरे ऋग्वेद के मन्त्रों के डेटाबेस में खोजा जाता है अगर वह शब्द मिलता है तो उसको सभी सूचना के साथ वापस कर देता है तथा अगर वह शब्द नही मिलता है तो "यह शब्द ऋग्वेद में नही है" के साथ वापस कर देता है । सब्मिट बटन चित्र सङ्ख्या 5.1 में **"ऋग्वेद में खोज के लिये यहाँ क्लिक करें"** से दिखाया गया है ।

2. आउटपुट (Output)

आउटपुट के रूप में प्रदत्त इन्पुट के रूप में मन्त्र के विषय में सभी सूचनाएँ परिणाम बटन से नीचे प्रिंट होती हैं । मन्त्रों की अनुक्रमणिका सूची प्रयोक्ता द्वारा किए गए चुनाव पर आधारित होती है । इन्पुट किए गए चेनाव के आधार पर अनुक्रमणिका सूची में मन्त्रों का लिन्क दिया जाता है जिसे तालिका सङ्ख्या 5.1 में दिखाया गया है । उनमें से किसी भी लिन्क पर क्लिक करके उसकी पूरी सूचना प्राप्त की जा सकती है जिसका एक प्रारूप तालिका संख्या 5.2 में दिखाया गया है ।

search for 'अग्नि' found 315 results in 'ऋग्वेद'

शब्द	अनुक्रमणिका
अग्नि	1.1.1/1.1.1.1
अग्नि	1.1.2/1.1.1.2
अग्नि	1.1.3/1.1.1.3
अग्नि	1.1.5/1.1.1.5
अग्नि	1.12.1/1.1.22.1
अग्नि	1.12.2/1.1.22.2
अग्नि	1.12.6/1.1.22.6
अग्नि	1.12.9/1.1.23.3
अग्नि	1.23.20/1.2.11.5
अग्नि	1.26.10/1.2.21.5
अग्नि	1.27.1/1.2.22.1
अग्नि	1.36.1/1.3.8.1
अग्नि	1.36.2/1.3.8.2
अग्नि	1.36.17/1.3.11.2
अग्नि	1.36.18/1.3.11.3
अग्नि	1.38.13/1.3.17.3
अग्नि	1.58.7/1.4.24.2
अग्नि	1.60.4/1.4.26.4
अग्नि	1.69.3/1.5.13.3

तालिका 5.1: अनुक्रमणिका सिस्टम से प्राप्त अनुक्रमणी सूची का एक प्रारूप

खोजा गया शब्द	अग्नि : (ऋग्वेद)
संहिता पाठ	अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
मण्डलक्रमांक/अष्टक.अध्याय.वर्ग.मन्त्रसंख्या	1.1.1/1.1.1.1
स्वरयुक्त संहिता पाठ	अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
पदपाठ	अग्निम् । ईळे । पुरःऽहितम् । यज्ञस्य । देवम् । ऋत्विजम्। होतारम् । रत्नऽधातमम् ॥
ऋषि	मधुच्छन्दाः वैश्वामित्रः
देवता	अग्निः
छन्द	गायत्री
हिन्दी अनुवाद	यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलानेवाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ ।

तालिका 5.2: खोजे गए शब्द का परिणाम

इस प्रकार वेब आधारित तन्त्र की सहायता से प्रयोक्ता द्वारा किसी भी शब्द को खोजने पर अनुक्रमणिका सिस्टम में अनुक्रमणी सूची के रूप में लिन्क के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जिसके प्रारूप को तालिका 5.1 के माध्यम से दर्शाया गया है। लिन्क को खोलने पर मन्त्र के विविध परिणाम प्राप्त होगे जिन्हें तालिका 5.2 के माध्यम से दर्शाया गया है।

निष्कर्ष एवं भावी अनुसन्धान की सम्भावनाएँ

1. निष्कर्ष

यह शोध तथा तन्त्र का विकास कार्य दिल्ली विश्वविद्यालय से एम. फिल. उपाधि हेतु 1.5 वर्ष में सम्पन्न किया गया है जिसमें एम.फिल. में पढ़ाया जाने वाला छः मास का पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है । इसके बाद शोध एवं तन्त्र के विकास का कार्य प्रारम्भ होता है । समयाभाव के कारण इस शोध में चारों वेदों में से ऋग्वेद का ही चुनाव किया गया है। एक वर्ष के मध्य ऋग्वेद के मन्त्रों का एक संगणकीय डेटाबेस बनाया गया। इस डेटाबेस से सूचना प्राप्ति के लिए विभिन्न नियम तथा उदाहरणों के विश्लेषण हेतु भी बहुत सारे छोटे-छोटे कार्य किए गए। इस सिस्टम में 6 प्रकार के सर्च सिस्टम का निर्माण किया गया है। प्रयोक्ता किसी भी माध्यम का बिना किसी रुकावट के प्रयोग कर सकता है । इसके बाद सिस्टम के मूल्यांकन का कार्य किया गया जो एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है। इस मूल्यांकन के पश्चात् कुछ कमियाँ प्राप्त हुई हैं जिनको दूर करने का प्रयास भी किया गया है । इसके बाद इस सिस्टम को http//:sanskrit.du.ac.in नामक दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की विभागीय वेबसाइट पर सभी के उपयोग के लिए उपलब्ध कराया गया। यद्यपि इस सिस्टम का विकास बहुत ही सावधानी से किया गया है तथापि इसमें बहुत सी कमियां भी हैं जिसको भविष्य में दूर करने का प्रयास किया जाएगा।

1.1. सिस्टम की कुछ विशिष्टताएँ:

1. यह सिस्टम ऋग्वेद के मन्त्रों से सम्बन्धित सभी सूचनाएँ प्रदान करता है।
2. मन्त्रों की सम्पूर्ण सूचनाएँ प्रामाणिक ग्रन्थों के आधार पर दी गई हैं।
3. ऋग्वेद के मन्त्रों से सम्बन्धित जानकारियाँ जैसे क्रम सङ्ख्या, स्वर सहित मन्त्र, मन्त्र विभाजन, पदपाठ, देवता, ऋषि, छन्द, स्वर आदि प्रस्तुत की गई हैं।
4. सिस्टम में मन्त्रों को खोजने के लिए 6 प्रकार के माध्यमों को प्रयोक्ता के लिए उपलब्ध करवाया गया है । प्रयोक्ता पाठबॉक्स में शब्द इन्पुट करके, देवता के नाम, देवतागण, देवतायुग्मों की सूची, अकारादिक्रम से वर्णमाला खोज तथा मण्डल/सूक्त/मन्त्र के अनुसार पाठ में जाकर परिणाम को प्राप्त कर सकता है।

5. इस सिस्टम का प्रयोग शोधकर्ता, ऋग्वेद को जानने के जिज्ञासु, छात्र, अध्यापक तथा अन्य सभी इसका उपयोग कर सकते हैं। शोधकर्ताओं के लिए यह तन्त्र विशेष उपयोगी है। कोई शोधकर्ता अपने शोध कार्य के लिए ऋग्वेद के मन्त्रों से शब्द को प्राप्त करना चाहता है तो उसके लिए यह अत्यन्त उपयोगी है। जैसे कोई शोधकर्ता रस पर कार्य कर रहा है तथा वह रस शब्द का ऋग्वेद में प्रयोग खोजना चाहता है तो रस शब्द का जहाँ-जहाँ प्रयोग हुआ है वह यहाँ से प्राप्त कर पाएगा।

1.2. सिस्टम की कुछ सीमाएँ:

1. अभी तक यह सिस्टम केवल देवनागरी यूनीकोड में इन्पुट लेता है तथा इसी फॉर्मेट में परिणाम देता है। अतः यह सिस्टम केवल हिन्दी माध्यम के जिज्ञासुओं के लिए ही उपयोगी हो सकता है।
2. यह सिस्टम सन्धि युक्त शब्दों को अलग करके परिणाम नही दे सकता है। इस खामी को दूर करने का प्रयास भविष्य में किया जाएगा।
3. यह सिस्टम अभी मात्र ऋग्वेद के मन्त्रों में ही खोज कार्य करता है। ऋग्वेद के मन्त्रों के अतिरिक्त अन्य वेदों का डेटा अभी तक उपलब्ध नही है। अतः अन्य वेदों के मन्त्रों की सूचना प्रयोक्ता को नही प्राप्त हो सकेगी।

2. भावी अनुसन्धान की सम्भावनाएँ

प्रस्तुत विषय वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास में वैदिक अनुक्रमणिका तथा भाषाविज्ञान के क्षेत्र में भविष्य में शोध की बहुत अधिक सम्भावनाएँ हैं। जिनमें से निम्नलिखित को यहाँ प्रस्तुत किया गया है:-

2.1. वैदिक संहिताओं के लिए ऑनलाइन अनुक्रमणिका:- प्रस्तुत अनुक्रमणिका तन्त्र का निर्माण ऋग्वैदिक मन्त्रों तथा उनसे सम्बन्धित देवताओं की सम्पूर्ण जानकारी हेतु बनाया गया है। इसी प्रकार अन्य वैदिक संहिताओं तथा उनसे सम्बन्धित अन्य ग्रन्थों के लिए भी अनुक्रमणिका तन्त्र तथा छन्दों एवं देवताओं का परिचय देने के लिए भी तन्त्र का निर्माण किया जा सकता है।

2.2. वैदिक संहिताओं पर सायण भाष्य- वैदिक संहिताओं पर उपलब्ध भाष्यों में से सायण भाष्य को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है अतः सायण भाष्य तथा उनके भाष्य के प्रत्येक शब्द का अर्थ एवं व्युत्पत्ति प्रस्तुत करने के लिए भी ऑनलाइन सिस्टम बनाया जा सकता है।

2.3. वैदिक संहिताओं पर उपलब्ध अन्य भाष्यों का ऑनलाइन सिस्टम- वैदिक संहिताओं पर प्राप्त अन्य विद्वानों के भाष्यों का ऑनलाइन सिस्टम बनाया जा सकता है। इस सिस्टम में प्रत्येक शब्द के अनुसार अर्थ को बताने का सिस्टम भी बनाया जा सकता है।

2.4. सन्धियुक्त शब्दों को तोड़ना- वर्तमान में यह सिस्टम इन्पुट किए गए सन्धि युक्त शब्दों को तोड़ नही सकता है। भविष्य में इस प्रणाली पर कार्य किया जा सकता है।

संगणकीय भाषाविज्ञान के इस क्षेत्र में वर्तमान में ऋग्वेदीय मन्त्रों के तन्त्र पर शोध का कार्य ऋग्वेद संहिता के आधार पर किया जा रहा है। भविष्य में सम्पूर्ण वैदिक संहिताओं पर ऑनलाइन अनुक्रमणिका प्रणाली से मन्त्रों को पढ़ने की सुविधा दिल्ली विश्वविद्यालय की वेब-साईट पर शीघ्र उपलब्ध होगी। जिससे किसी भी समय किसी भी स्थान पर वेदों के जिज्ञासु इस सुविधा का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस क्षेत्र में और भी कार्य कार्यरत हैं यथा- भविष्य में दिल्ली विश्वविद्यालय की वेब-साईट पर एसा सर्च-इंजन तैयार किया जा रहा है जिससे किसी भी समय कोई भी जिज्ञासु किसी भी मन्त्र (चाहे वह किसी भी वेद से प्राप्त हो) को यूनिकोड में टाईप करके सर्च करता है तो वह उस मन्त्र में से सम्बन्धित पूर्ण जानकारी जो कि पूर्व में बताई जा चुकी हैं तथा उसके साथ मन्त्रों का अर्थ सायण भाष्य सहित उपलब्ध होगा। मन्त्रों का अर्थ बहुभाषीय तथा पाश्चात्त्य विद्वानों के भाष्यों के आधार पर भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ (References)

हिन्दी ग्रन्थ (Hindi References):

1. अवस्थी, विश्वम्भर दयाल. 1983. *वैदिक साहित्य, संस्कृति और दर्शन.* सरस्वती विद्या प्रकाशन, इलाहबाद।

2. आर्य, रवि प्रकाश. 2001. *सामवेद संहिता.* परिमल पब्लिशर्स, दिल्ली।

3. उपाध्याय, चन्द्रशेखर एवं कुमार, अनिल. 1995. *वैदिक कोश.* नाग प्रकाशक, दिल्ली।

4. उपाध्याय, बलदेव एवं चौबे, व्रज बिहारी. 1996. *संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास.* भाग 1-18. उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

5. उपाध्याय, बलदेव एवं पाण्डेय, ओमप्रकाश. 1997. *संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास.* भाग 2-18. उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

6. उपाध्याय, बलदेव. 2006. *वैदिक साहित्य और संस्कृति.* शारदा संस्थान, वाराणसी।

7. कुमार, प्रभात. 2011. *बृहद् वैदिक संहिता धातुकोषः.* प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।

8. गर्बे, रिचर्ड़. 1983. *आपस्तम्ब श्रौतसूत्र.* भाग 3-3. मुन्शीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

9. गुप्ता, पुष्पा. 2011. *संस्कृत साहित्य का बृहद् इतिहास.* ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।

10. गैरोला, वाचस्पति. 1960. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

11. गैरोला, वाचस्पति. 1969. *वैदिक साहित्य का इतिहास.* सम्वर्तिका प्रकाशन, इलाहबाद।

12. गोयल, प्रीतिप्रभा. 1999. *संस्कृत साहित्य का इतिहास (वैदिक खण्ड).* राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।

13. जिज्ञासु, ब्रह्मदत्त. 1964. *अष्टाध्यायी भाष्य प्रथमावृत्ति (1-3 अध्याय).* भाग 1-3. रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर।

14. झा, मुनिशवर. 2004. *संस्कृत वाङ्मय का परिदर्शन.* अमर ग्रन्थ पब्लिकेशन्स, विजय नगर, दिल्ली।

15. तिवारी, शशि. 2014. *वेदव्याख्यापद्धतयः.* प्रतिभा प्रकाशन, शक्तिनगर, दिल्ली।

16. द्विवेदी, कपिलदेव. 2010. *वैदिक साहित्य का इतिहास.* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

17. पाठक, जगन्नाथ. 1960. *ऋग्वेदभाष्यभूमिका.* चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

18. पाठक, युगलकिशोर. 1888. *चरणव्यूह.* चौखम्बा, बनारस।

19. पाण्ड़े, गोविन्द चन्द्र. 2008. *ऋग्वेद.* लोकभारती, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहबाद।

20. पाण्ड़ेय, ओमप्रकाश. 2004. *वैदिक खिल सूक्त मीमांसा.* नाग पब्लिशर्स, दिल्ली।

21. पाण्ड़ेय, ओमप्रकाश. वि. सं. 2031. *वेदत्रयी परिचय.* नागरी मुद्रण, वाराणसी।

22. पाण्ड़ेय, सत्यनारायण. 1975. *संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास.* साहित्य भण्ड़ार, मेरठ।

23. बिमली, ओमनाथ एवं उपाध्याय, सुनील कुमार. 2005. *वैदिक पादानुक्रम.* परिमल प्रकाशन, दिल्ली।

24. दत्त, भगवद् एवं राज, हंस. 1926. *वैदिक कोषः.* विश्वभारती अनुसंधान परिषद, ज्ञानपुर।

25. भट्टाचार्य, सिद्धेश्वर. 1973. *यजुर्वेद संहिता.* काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी।

26. भारद्वाज, विश्वनाथ शास्त्री एवं भारद्वाज, बलिराम शास्त्री. 1987. *संस्कृतसाहित्येतिहासः.* चौखम्बा ओरियन्टल, वाराणसी।

27. मिश्रा, जगदीश चन्द्र. 1998. *वैदिकवाङ्मयस्येतिहासः.* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

28. मीमांसक, युधिष्ठिर. माघ संवत् 2031. *चतुर्वेद विषय सूची.* रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़।

29. मीमांसक, युधिष्ठिर. 1973. *ऋग्वेद भाष्यम् (महर्षि दयानन्द विरचितं).* रामलालकपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ ।

30. रघुवीर. 1979. *पैप्पलाद संहिता.* आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, कमला नगर, दिल्ली ।

31. राय, राम कुमार. 2014. *वैदिक इण्डैक्स.* चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी ।

32. रावत, मीरा रानी. 2015. *अनुक्रमणी साहित्य: एक परिशीलन.* परिमल पब्लिकेशन्स, शक्ति नगर, दिल्ली ।

33. लाल, कृष्ण. 1978. *संस्कृत-शोधप्रक्रिया एवं वैदिक अध्ययन.* विभुवैभवम्, सरस्वति विहार, दिल्ली ।

34. लाल, कृष्ण. 2006. *संस्कृत-शोध: वैदिक अध्ययन.* जे. पी. पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली ।

35. विद्यालङ्कार, बुद्धदेव. 1964. *ऋग्वेद मण्डल-मणि सूत्र.* समर्पण शोध संस्थान, नई दिल्ली।

36. विन्टरनिट्ज़, एम. 1961. *प्राचीन भारतीय साहित्य का इतिहास.* मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी ।

37. विश्वबन्धु. 1955. *वैदिक पदानुक्रम कोष:.* विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर।

38. विश्वबन्धु. 1964. *अथर्ववेदः (शौनकीयः).* विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर।

39. विश्वबन्धु. 1964. *ऋग्वेद.* विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर ।

40. विश्वबन्धु. 1966. *ऋग्वेदः.* विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर ।

41. वेदान्ताचार्य, गोविन्द एवं शास्त्री, प्रेमाचार्य. संवत् 2046. *शुक्ल यजुर्वेद संहिता.* सद्गुरु इन्टरनैशनल वेद मिशन, मुम्बई ।

42. शर्मा, उमाशंकर. 2010. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी ।

43. शर्मा, उमेश चन्द्र. 1977. *अनुवाकाऽनुक्रमणी.* विवेक प्रकाशन, अलीगढ़ ।

44. शर्मा, विश्वनाथ एवं शर्मा, रामचन्द्र. 1983. *सामवेद संहिता.* नाथन मुद्रणालय, मद्रास ।

45. शर्मा, श्रीराम एवं शर्मा, भगवती देवी. 1995. *ऋग्वेद संहिता.* शान्तिकुञ्ज (ब्रह्मवर्चस), हरिद्वार।

46. शर्मा, श्रीराम एवं शर्मा, भगवती देवी. 1996. *अथर्ववेद संहिता.* शान्तिकुञ्ज (ब्रह्मवर्चस), हरिद्वार।

47. शर्मा, सरनाम सिंह. 2011. *शोध-प्रक्रिया.* कल्पना प्रकाशन, दिल्ली।

48. शास्त्रिदातारः, हरिकृष्ण. 1989. *संस्कृत वाङ्मयम्.* कीर्तिसौरभप्रकाशनम्, वाराणसी।

49. शास्त्री, अशोक चन्द्रगौड़. 2007. *संस्कृतवाङ्मयैतिह्येवैदिकवाङ्मयम्.* नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली।

50. शास्त्री, कृष्णकुमार. 1972. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* भारती भवन, पटना।

51. शास्त्री, गुरुप्रसाद. 1938. *व्याकरणमहाभाष्यम्.* भाग 1. 6. प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।

52. शास्त्री, जगदीशलाल. 1983. *मनुस्मृतिः.* मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।

53. शास्त्री, ज्ञानप्रकाश एवं कुमार, निशान्त. 2013. *ऋग्भाष्य-पदार्थ-कोष.* परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

54. शास्त्री, ज्ञानप्रकाश. 2009. *यजुर्वेद पदार्थ कोषः.* परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

55. शास्त्री, ज्ञानप्रकाश. 2013. *प्रस्थान त्रयी पदानुक्रम कोष.* परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

56. शास्त्री, दिनेश चन्द्र. 2005. *ऋग्वेद में उपमा.* संस्कृत ग्रन्थागार, दिल्ली।

57. शास्त्री, दिनेश चन्द्र. 2005. *वैदिक उपमा कोष.* सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

58. शास्त्री, देवर्षि कलानाथ. 2009. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* साहित्यागार, जयपुर।

59. शास्त्री, परशुराम. 1930. *तैत्तिरीय संहितायाः पदानुक्रमणी.* भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना।

60. शास्त्री, बाल एवं पाण्ड़ेय, रमाकान्त. 1994. *वेद दीपिका.* यूनिवर्सिटी ऑफ सागर, मध्यप्रदेश।

61. शास्त्री, रामकृष्ण एवं शास्त्री, विश्वनाथ. 1977. *अथर्ववेद संहिता.* चौखम्बा ओरियन्टल, वाराणसी।

62. शास्त्री, रामप्रताप त्रिपाठी. 2005. *वायुपुराणम्.* हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

63. शास्त्री, रूप किशोर एवं गौतम, अमलधारी सिंह. 2013. *ऋक् संहिता (शांखायन).* महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी।

64. शास्त्री, श्री कान्त. 2000. *अथर्ववेद संहिता.* माधव पुस्तकालय, कमला नगर, दिल्ली।

65. शुक्ल, सिध्दनाथ एवं शुक्ल, उषा. 2011. *ऋग्वेद.* श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़।

66. सहगल, मनमोहन. 1979. *हिन्दी शोध-तन्त्र की रूप-रेखा.* पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

67. सहाय, राजवंश. 1978. *संस्कृत साहित्य का बृहत् इतिहास.* चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

68. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर एवं शर्मा, श्रुतिशील. 1968 *महाभारत आदिपर्व.* स्वाध्याय मण्डल, औंध, पारड़ी।

69. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1939. *ऋक् संहिता.* स्वाध्याय मण्डल, औंध, पारड़ी।

70. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1965. *अथर्ववेद संहिता.* स्वाध्याय मण्ड़ल, औंध, पारड़ी।

71. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1967. *ऋग्वेद का सुबोध भाष्य.* स्वाध्याय मण्ड़ल, पारड़ी।

72. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1970. *वाजसनेयि माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेद संहिता.* स्वाध्याय मण्ड़ल, औंध, पारड़ी।

73. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1980. *ऋग्वेद का सुबोध भाष्य.* स्वाध्याय मण्ड़ल, औंध, पारड़ी।

74. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1983. *काठक संहिता.* स्वाध्याय मण्ड़ल, औंध, पारड़ी।

75. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1983. *काण्व संहिता.* स्वाध्याय मण्डल, औंध, पारड़ी।

76. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1983. *तैत्तिरीय संहिता.* स्वाध्याय मण्डल, औंध, पारड़ी ।

77. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1983. *मैत्रायणी संहिता.* स्वाध्याय मण्डल, औंध, पारड़ी ।

78. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1983. *सामवेद संहिता.* स्वाध्याय मण्डल, औंध, पारड़ी ।

79. सिंह, उमेश प्रताप. 1999. *शुक्ल यजुर्वेद प्रातिशाख्य: एक परिशीलन.* कला प्रकाशन, वाराणसी ।

80. सिंह, नागशरण. 1990. *ऋग्वेद परिचय.* नाग प्रकाशक, दिल्ली ।

81. सूर्यकान्त, 1972. *संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास.* ओरिएण्ट लॉंगमैन लिमिटेड़, नई दिल्ली ।

82. सूर्यकान्त. 1982. *वैदिक देवशास्त्र.* पाणिनि, अन्सारी रोड़, नई दिल्ली ।

83. सूर्यकान्त. 2012. *वैदिक कोश.* चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी ।

84. सेन, चतुर. 1983. *वैदिक संस्कृति पर दृगस्पर्श.* सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली ।

85. स्वरूप, लक्ष्मण. 1939-1955. *ऋगर्थदीपिका.* मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी ।

86. स्वामि, श्रीधर एवं शास्त्री, जगदीश लाल. 1983. *श्रीमद्भागवतपुराणम्.* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।

87. स्वामि, हरि. 1987. *शतपथ ब्राह्मण.* ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।

अंग्रेजी पुस्तकें (English References):

1. Agrawal, Muktanand. 2007. *Computational identification and analysis of Sanskrit verb-forms of bhavaadigana*. Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

2. Anderson, J. D. & Carballo, Pérez J. 2001. The nature of indexing: How humans and machines analyze messages and texts for retrieval. Part I: Research, and the nature of human indexing. *Information Processing and Management*, 37 (2001), pp. 231–254.

3. Baeza, Richardo. 2003. *Modern Information Retrieval*. Pearson Education, North America.
4. Balnaves, J., Gerrie, B. & Oxley, S. 1980. *A workbook in information retrieval (Fifth ed.)*. Canberra College of Advanced Education, Canberra, Australia.
5. Bhadra, Manji. 2007. *Computational analysis of gender in Sanskrit noun phrases for Machine Translation*. Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru Univerity, New Delhi.
6. Bhowmik, Priti. 2009. *Evolving e-learning methods for Sanskrit E-learning in the context of secondary syllabus of CBSE*. Ph.D. Thesis, Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru Univerity, New Delhi.
7. Bill, Lubanovic. 2014. *Introducing Python*. Shroff Publishers & Distributers Private Limited, Mumbai.
8. Bloomfield, Maurice .1906. *Vedic Concordance*. Motilal Banarasi Das, Delhi.
9. Chand, Devi. 2000. *The Samveda*. Munshirammanohar lal publishers, New Delhi.
10. Chakravorti, Madhavadasa. 1978. *A Short History of Sanskrit Literature.* Asian Publication Services, New Delhi.
11. Chandra, Subhash & Jha, Girish Nath. 2006. Sanskrit Subanta recognizer and analyzer for machine translation. *28th All India Conference of Linguistics*. Department of Linguistics, Banaras Hindu University, Banaras.
12. Chandra, Subhash. 2006. Computational identification and analysis of complicated Sanskrit noun phrases. *Proceeding of 2nd International Conference on cognitive Science, Centre for Behavioral and Cognitive Sciences*. University of Allahabad, Allahabad.
13. Chandra, Subhash. 2011. Using Sanskrit Language Tools-Sandhi and Subanta. *Relevance of Sanskrit for science and technology*. Gandhi Memorial National College, Ambala.
14. Chandra, Subhash. 2007. A Morphological Analyzer for Sanskrit Nominal Inflectional Morphology (subanta-padas). *The First International Symposium on Sanskrit Computational Linguistics*. Paris.
15. Chandra, Subhash. 2007. *Machine Recognition and Morphological Analysis of Subanta-padas*. Diss. Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

16. Chandrasekhar, R, Bhadra, Manji, Singh, Surjit Kumar, Kumar, Sachin, Chandra, Subhash, Agrawal, Muktanand & Mishra, Sudhir Kumar. 2009. Sanskrit Analysis System (SAS). *Lecture Notes in Computer Science 5402*. Springer Berlin, Heidelberg.
17. Chandrashekar, R, Singh, Umesh Kumar, Jha, Vibhuti Nath, Pandey, Satyendra, Singh, Surjit Kumar, Mishra, Mukesh & Jha, Girish Nath. 2010. Online Multilingual Amarakosha: the relational lexical database. *5th Global Wordnet Conference*. IIT Mumbai.
18. Clarke, C. & Cormack, G. 1995. Dynamic Inverted Indexes for a Distributed Full-Text Retrieval System. *TechRep MT-95-01*. University of Waterloo.
19. Cotter, Hilary. 2004. *Microsoft Indexing Services and Search Severs: The Complete Resource*. Apress.
20. Dawson, Michael. 2010. *Python Programming for the Absolute Beginner*. Delmar Cengage Learning.
21. Doyle, L. B. 1975. *Information retrieval and processing*. Melville, Los Angeles.
22. DuBois, Paul. 2015. *MySQL*. Pearson Education.
23. Ellis, D. 1996. *Progress and Problems in Information Retrieval*. Library Association Publishing, London.
24. Faraj, N., Godin R. & Missaoui, R. 1996. Analysis of an automatic-indexing method based on syntactic analysis of text. *Canadian Journal of Information and Library Science-Revue Canadienne des Sciences de l'Information et de Bibliotheconomie*.
25. Fiedel, R. 1994. User-centered Indexing. *Journel of the American Society for Information Sciences.*
26. Franceschini, Marco. 2007. *An Update Vedic concordance*. Harward University, London.
27. Golub, K. 2005. *Automated subject classification of textual web pages, for browsing*. Department of Information Technology, Lund University, Lund.
28. Griffith, Ralph T. H. 1990. *Yajurveda Samhita*. Nag publishers, Delhi.
29. Griffith, Ralph T. H. 1893. *Samved Samhita*. Nag Publishers, Delhi.
30. Hodges, J. E. 2000. *Automated systems for the generation of document indexes*. Encyclopedia of Library and Information Science. Marcel Dekker, New York.

31. Jacobs, Charles E., Finkelstein, Adam & Salesin, David H. 2006. *Fast Multiresolution Image Querying*. Department of Computer Science and Engineering. University of Washington.
32. Jha, Girish Nath. 2003. A Prolog Analyzer/Generator for Sanskrit Subanta Padas. *Language in India (volume 3:11).*
33. Jha, Girish Nath. 2006. Computational lexicography and Amarakosha: an online RDBMS approach. *National Seminar of Language and Interface*. Dept. of Linguistics, Delhi University.
34. Jha, Girish Nath. 2010. Text Encoding and Search for Sanskrit. *19th International Vedanta Congress*. Center of Indic Studies, University of Massachusetts, Dartmouth.
35. Jurafsky, Daniel. 2013. Speech and Language Processing: An Introduction to Natural Language Processing. *Computational Linguistics and Speech Recognition*. Pearson Education.
36. Keenan, S. 1973. *Progress in automatic indexing and prognosis for the future*. AFIPS Press, Montvale.
37. Knowlton, James O. 2004. *Python: Create-Modify-Reuse*. Wrox.
38. Kumar, Sachin. 2007. *Sandhi splitter and analyzer for Sanskrit (with special reference to ac Sandhi).* Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru Univerity, New Delhi.
39. Licklider, J. C. R. 1965. *Libraries of the future*. MA: M.I.T. Press, Cambridge.
40. Luhn, H. P. 1959. Auto-encoding of documents for information retrieval systems. *In M. Boaz, Modern Trends in Documentation.* Pergamon Press, London.
41. Luhn, H. P. 1961. Automated intelligence systems: Some basic problems and prerequisites for their solution. *In E. Tomeski, R. W. Westcott, & M. Covington (Eds.), The clarification, unification & integration of information storage & retrieval proceedings of February 23rd 1961 symposium.* Management Dynamics, New York.
42. Macdonell, A. A. 1886. *Sarvanukramani of the Rigveda*. Claurandan Press, Oxford.

43. Macdonell, A. A. & Keith, A. B. 1958. *Vedic index of names and subjects*. Motilal banarasidas. Jawahar Nagar, Delhi.
44. Mani & Jha. 2006. Online Indexing of Ādiparva of Mahābhārata. *28th All India Conference of Linguistics*. Department of Linguistics, BHU.
45. Mani, Diwakar, Singh, Umesh Kumar, Sinha, Prachi & Jha, Girish Nath. 2009. Automatic Indexing System for texts of Indian Intellectual Tradition. *18th International Vedanta Congress*. University of Massachusetts, Dartmouth.
46. Mishra, Sudhir & Jha, Girish Nath. 2004. A karaka analyzer for Sanskrit. *International Conference on Speech and Language Technology*. New Delhi.
47. Mishra, Sudhir Kumar. 2007. *Sanskrit karaka analyzer for Machine Translation*. Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru Univerity, New Delhi.
48. Nixon, Robin. 2015. *Learning PHP, MySQL & JavaScript with j Query, CSS & HTML5*. Shroff Publishers & Distributers Private Limited, Mumbai.
49. Pandey, Rajneesh. 2011. *Online Indexing Of Sushruta Samhita*. Diss. Special center for Sanskrit studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.
50. Pandey, Rajneesh K. 2012. Text Encoding and Search for Ayurvedic Textx. *LAP Lambert Publishing Academy*. Germany.
51. Parasher, R. G. 1989. *Index and Indexing system*. Medallion press, New Delhi.
52. Powell, Thomas. 2010. *HTML & CSS: The Complete Reference*. McGraw Hill Education.
53. Salton, G. 1968. *Automated language processing. In C. A. Cuadra, (Ed.). Annual review of information science and technology*. Encyclopaedia Britannica, Chicago.
54. Seth, A. Maislin. 2004. Notes on automatic indexing. *Tripod*.
55. Singh, Surjit Kumar. 2008. *Kridanta recognition and processing for Sanskrit*. Diss. Special Center for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru Univerity, New Delhi.
56. Stevens, M. E. 1970. Automatic indexing: A state-of-the-art report. *National Bureau of Standards Monograph 91 reissued with additions and corrections SD Catalog No. C13.44:91)*. Government Printing Office, Washington, DC, U.S.

57. Kant, Surya. 1981. *A practical Vedic dictionary*. Oxford University press, Delhi.
58. Taube, M., & Wooster, H. 1958. *Information storage and retrieval: Theory, systems, and devices*. Columbia University Press, New York.
59. Tiwari, Archana. 2011. *Online Indexing in Caraka Samhita*. Diss. Special center for Sanskrit studies, New Delhi.
60. Varadachari, V. 1960. *A History of the Samskrta Literature.* Ram Narain Lal Beni Prasad, Allahabad.
61. Vaswani, Vikram. 2004. *MySQL(TM): The Complete Reference*. McGraw Hill Education (India) Private Limited.
62. Watters, C. 1992. *Dictionary of information science and technology*. Academic Press, San Diego.
63. Wilson, H. H. 1978. *Rig Samhita*. Nag Publishers, Jawahar Nagar, Delhi.
64. Winternitz, Maurrice. Translated by Mrs. S. Ketkar. 1972. *A History of Indian litreture.* Oriental books reprint corporation, New delhi.
65. Yu, Cui. 2002. High-Dimensional Indexing: Transformational Approaches to High-Dimensional Range and Similarity Searches. *Lecture Notes in Computer Science*. Springer.

वेबसाइट ग्रन्थ (Web References):

1. Arya Prakash, 2016, Web: http://www.aryasamajjamnagar.org/ (Obtained on January 31, 2016).
2. Internet Sacred Text Archive, 2016, Web: http://www.sacred-texts.com/index.htm (Obtained on February 20, 2016).
3. Literature, 2015a, Web: http://literature.awgp.org/ (Obtained on March 30, 2015).
4. Literature, 2015b, Web: http://literature.awgp.org/books (Obtained on April 10, 2015).

5. Literature, 2015c, Web: http://literature.awgp.org/hindibook/ (Obtained on April 20, 2015).

6. Mcgill school of computer science, 2015, Web: http://www.cs.mcgill.ca/~rwest/link-suggestion/wpcd_2008-09_augmented/wp/r/Rigveda.htm (Obtained on March 21, 2015)

7. MySQL: The world's most popular open source database, 2016, Web: https://www.mysql.com/ (Obtained on March 1, 2016)

8. Sanskrit Documents, 2016, Web: http://sanskritdocuments.org/ (Obtained on January 19, 2016).

9. Sanskrit Web, 2016, Web: http://www.sanskritweb.net/ (Obtained on February 24, 2016).

10. Spyce: Python server pages, 2016a, Web: http://spyce.sourceforge.net/ (Obtained on January 19, 2016).

11. Spyce: Python server pages, 2016b, Web: www.spyce.in (Obtained on January 23, 2016).

12. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015a, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/index.jsp (Obtained on April 29, 2015).

13. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015b, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/subanta/rsubanta.jsp (Obtained on April 29, 2015).

14. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015c, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/sandhi/gen.jsp (Obtained on May 8, 2015).

15. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015d, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/tanalyzer/tanalyze.jsp (Obtained on May 11, 2015).

16. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015e, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/kridanta/ktag.jsp (Obtained on July 15, 2015).

17. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015f, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/karaka/analyzer.jsp (Obtained on August 2, 2015).

18. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015g, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/subanta/generate.jsp (Obtained on August 26, 2015).

19. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015h, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/tinanta/tinanta.jsp (Obtained on September 15, 2015).

20. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015i, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/amara/index.jsp (Obtained on October 23, 2015).

21. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015j, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/mb/index.jsp (Obtained on November 30, 2015).

22. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015k, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/ayurveda/index.jsp (Obtained on December 19, 2015).

23. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2015l, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/susruta/index.jsp (Obtained on Demeber 31, 2015).

24. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2016m, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/caraka/index.jsp (Obtained on January 5, 2016).

25. The Computational Linguistics R&D at Special Centre for Sanskrit Studies J.N.U., 2016n, Web: http://sanskrit.jnu.ac.in/vedanta/index.jsp (Obtained on January 14, 2016).

26. The Unicode Consortium, 2016, Web: http://unicode.org/ (Obtained on March 20, 2016).

27. The University of Texas at Austin: Linguistics Research Center, 2016a, Web: http://www.utexas.edu/cola/centers/lrc/ (Obtained on February 29, 2016).

28. The University of Texas at Austin: Linguistics Research Center, 2016b, Web: http://www.utexas.edu/cola/centers/lrc/about/history.html (Obtained on March 2, 2016).

29. VedicGranth.Org, 2016, Web: http://www.vedicgranth.org/ (Obtained on March 10, 2016).

30. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016a, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Search_engine_indexing#Index_design_factors (Obtained on March 2, 2016).

31. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016b, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Database_index (Obtained on March 3, 2016).

32. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016c, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Subject_indexing (Obtained on March 4, 2016).

33. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016d, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/WebCrawler (Obtained on March 5, 2016).

34. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016e, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/AOL (Obtained on March 7, 2016).

35. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016f, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Excite (Obtained on March 9, 2016).

36. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016g, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Blucora (Obtained on March 11, 2016).

37. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016h, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Bing (Obtained on March 13, 2016).

38. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016i, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Ask.com (Obtained on March 15, 2016).

39. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016j, Web: https://en.wikipedia.org/w/index.php?title=Miva_(company)&action=edit&redlink=1 (Obtained on March 17, 2016).

40. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016k, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/LookSmart (Obtained on March 17, 2016).

41. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016l, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Web_crawler (Obtained on March 23, 2016)

42. Aryamantavya, 2016a, Web: http://www.onlineved.com/ (Obtained on February 15, 2016).

43. Aryamantavya, 2016b, Web: http://www.onlineved.com/about-us/ (Obtained on February 15, 2016).

सहायक ग्रन्थ (Bibliography):

हिन्दी ग्रन्थ (Hindi Bibliography):

1. अरविन्द. 1976. *अग्निमन्त्रमाला.* अरविन्द सोसायटी, पाण्डिचेरी।

2. आचार्य, सुद्युम्न. 1998. *निघण्टु-निर्वचनम्.* रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़।

3. कट्टि, रङ्गनाथ एवं शंकर, पारायण. 2006. *ऋगर्थोद्धार.* अड़िग पूर्णप्रज्ञ विद्यापीठ, बैंग्लूरु।

4. कश्यप, आर. एल. 2003. *तैत्तिरीय संहिता.* श्री अरविन्दो कपाली शास्त्री इन्स्टीट्यूट ऑफ वैदिक कल्चर, बैंगलुरु।

5. खोखर, जीत सिंह. 2001. *वैदिक दर्शनम्.* नाग पब्लिशर्स, जवाहर नगर, दिल्ली ।

6. गुप्त, नाथुराम. वि. सं. 2035. *वेद और जीवन.* सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड, दरिया गंज, नई दिल्ली ।

7. गुप्ता, बाबू हरिदास. 1903. *चरणव्यूह.* बनारस ।

8. गोविन्दवेदान्त एवं प्रेमाचार्य शास्त्री. 2000. *शुक्ल यजुर्वेद संहिता.* सद्गुरू गंगेश्वर इन्टरनेशनल वेद मिशन, तुलसी निवास, मुम्बई ।

9. गौड़, रामस्वरूप शर्मा. 1989. *सामवेद संहिता.* चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी ।

10. चन्द्र, ईश्वर एवं जोशी, कन्हैया लाल. 2011. *ऋग्वेद संहिता.* परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

11. चानना, देवराज. 1961. *ऋग्भाष्य संग्रह.* मुन्शीराम मनोहर लाल पब्लिकेशन्स, दिल्ली ।

12. चौबे, व्रज बिहारी. 2010. *ऋक् सूक्त मणिमाला.* कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन, वाराणसी ।

13. चौहान, रामसिंह. 2011. *संस्कृत साहित्य का प्राचीन एवं अर्वाचीन इतिहास.* ऋतु पब्लिकेशन्स, जयपुर ।

14. जोशी, के. एल. 2000. *अथर्ववेद संहिता.* परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली ।

15. जोशी, सीताराम जयराम. 1933. *नीतिमञ्जरी.* हरिहर मन्दिर, बनारस ।

16. झा, नरेश. 2012. *धातुपाठ.* चौखम्बा सुर भारती, वाराणसी ।

17. झा, सुरकान्त. 2013. *वेदकाल का निर्णय.* चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी ।

18. दिवेकर, एच. आर. 2004. *ऋग्वेद सूक्त विकास.* मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी।

19. देव, सुदर्शन. 1974. *दयानन्द यजुर्वेद भाष्य.* आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली।

20. द्विवेदी, कपिलदेव. 2001. *वेदों में आयुर्वेद.* विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर।

21. द्विवेदी, व्रज वल्लभ. वि. सं. 2046. *शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता.* राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थानम्, कलकत्ता।

22. नारायणशास्त्री, के. वी. 1959. *काण्डानुक्रमणिका.* भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना।

23. पाण्डुरंग, शंकर. 1989. *अथर्ववेद संहिता.* कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

24. पल्सुले, जी. बी. 1963. *छन्दोऽनुक्रमणी समीक्षा.* भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना।

25. प्रसाद, बाबू वाराणसी. 1886. *चरणव्यूह.* काशी संस्कृत प्रेस, वाराणसी।

26. दत्त, भगवद्. 1920. *पञ्चपटलिका.* डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर।

27. भगीरथ, हरिप्रसाद. 1884. *वाजसनेयि सर्वानुक्रमसूत्र.* जगदीश्वर प्रेस, बम्बई।

28. भट्ट, एम. एस. 1987. *ऋग्विधान.* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

29. मित्र, राजेन्द्र लाल. 1893. *अनुवाकानुक्रमणी.* एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता।

30. मित्र, राजेन्द्र लाल. 1893. *आर्षानुक्रमणी.* कलकत्ता।

31. मित्र, राजेन्द्रलाल. 1893. *बृहद्देवता.* एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता।

32. मिश्र, किशोर. 1985. *चरणव्यूह,* विजयप्रेस सरसौली, वाराणसी ।

33. मिश्र, राजेन्द्र प्रसाद. 1988. *ऋक् मन्त्रार्थ समालोचना.* जयपुर ।

34. मैक्डॉनल, ए. ए. 1904. *बृहद्देवता.* हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, कैम्ब्रिज ।

35. मैक्डॉनल, ए. ए. 1965. *बृहद्देवता (पुनर्मुद्रण).* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।

36. योगी, सत्यभूषण. 1967. *निघण्टु तथा निरुक्त.* मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली ।

37. राज, कून्हन. 1932. *ऋग्वेदानुक्रमणी ऑफ माधव भट्ट.* यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास, मद्रास ।

38. रामगोपाल. वि. सं. 1979. *अथर्ववेदीय बृहत्सर्वानुक्रमणिका.* वैदिकाश्रम, लाहौर ।

39. राय, रवि प्रकाश एवं जोशी, कन्हैया लाल. 2005. *ऋग्वेद संहिता.* परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली ।

40. राय, रामकुमार. 1963. *शौनकीय बृहद्देवता.* हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, कैम्ब्रिज ।

41. लाल, कुँवर. 1984. *आपस्तम्बकल्प में यज्ञविद्या.* इतिहास विद्या प्रकाशन, दिल्ली ।

42. वर्मा, जयनारायण एवं गुप्ता, पुष्पा. 1991. *संस्कृत साहित्य का इतिहास.* तरुण प्रकाशन, गाज़ियाबाद ।

43. पाल, विजय. 1985. *कात्यायन सर्वानुक्रमणी.* कलकत्ता ।

44. विद्यामार्तण्ड, आचार्य धर्मदेव. 1979. *ऋग्वेद.* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

45. विद्यामार्तण्ड, विश्वनाथ. ज्येष्ठ संवत् 2031. *सामवेद.* जन ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली ।

46. विद्यालङ्कार, विश्वनाथ. 1975. *अथर्ववेद भाष्य.* रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ ।

47. विद्यावारिधी, विजयपाल. 1979. *माधवीयानुक्रमणी.* रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़।

48. विश्वबन्धु. 1935. *मन्त्रार्षाध्याय.* ड़ी. ए. वी. कॉलेज, लाहौर।

49. विश्वबन्धु. वि. 2022. *अथर्ववेद बृहत्सर्वानुक्रमणिका.* विश्वेशरानन्द संस्थान, होशियारपुर।

50. विश्वबन्धु. वि. सं. 2022. *अथर्ववेदीय बृहत्सर्वानुक्रमणिका.* विश्वेश्वरानन्द संस्थान, होशियारपुर।

51. शर्मा, उमेशचन्द्र. 1977. *ऋग्वेद-सर्वानुक्रमणी.* विवेक पब्लिकेशन्स, अलीगढ़।

52. शर्मा, उमेशचन्द्र. 1978. *चरणव्यूह.* विवेक पब्लिकेशन्स, अलीगढ़।

53. शर्मा, उमेशचन्द्र. 1981. *छन्दोऽनुक्रमणी.* विवेक पब्लिकेशन्स, अलीगढ़।

54. शर्मा, उमेशचन्द्र. 1982. *आर्षानुक्रमणी.* विवेक पब्लिकेशन्स, अलीगढ़।

55. शर्मा, बी. आर. 1988. *काण्व संहिता.* वैदिक संशोधन मण्ड़ल, पूना।

56. शर्मा, भीष्मदत्त. 2013. *ऋग्वेद संहिता.* चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

57. शर्मा, राम. 1972. *अथर्ववेद.* संस्कृति संस्थान, बरेली।

58. शर्मा, विरेन्द्र मुनि. 1988. *वेदाङ्ग निघण्टु निरुक्त.* विश्ववेद परिषद आदर्श प्रेस, लखनऊ।

59. शर्मा, विश्वनाथ. 1983. *सामवेद संहिता.* नाथन प्रिटिंग प्रेस, मद्रास।

60. शास्त्री, अनन्तराम ड़ोगरा. 1938. *चरणव्यूह.* चौखम्बा, बनारस।

61. शास्त्री, के. एस. वेंकटराम. 1968. *गलितप्रदीप.* विलास प्रेस, श्रीरंगम्।

62. शास्त्री, छज्जूराम. 2012. *निरुक्त पञ्चाध्यायी.* मेहरचन्द लक्षमणचन्द पब्लिकेशन्स, लाहौर।

63. शास्त्री, जगदीशलाल. 1971. *वाजस्नेयि सर्वानुक्रमसूत्र.* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

64. शास्त्री, माधव. 1915. *शुक्ल यजुर्वेदीय काण्व संहिता (सायण भाष्य).* चौखम्बा संस्कृत सीरिज़, वाराणसी।

65. शास्त्री, रामकृष्ण. 1900. *काण्डानुक्रमणिका.* कोलपाड़ी।

66. शास्त्री, रामगोपाल. 1921. *अथर्ववेदीय दन्त्योष्ठ्य विधि.* लाहौर।

67. शास्त्री, शिवनारायण. 1972. *वैदिक वाङ्मय में भाषा चिन्तन.* इण्डोलॉजिकल बुक हाउस, दरियागंज, दिल्ली।

68. शास्त्री, श्रीकान्त. आग्रहायण 2031. *अथर्ववेद संहिता.* माधव पुस्तकालय, कमला नगर, दिल्ली।

69. शास्त्री, श्रीराम. 2012. *निरुक्त.* परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।

70. शास्त्री, हरिदत्त एवं कुमार, कृष्ण. 1985. *ऋक् सूक्त संग्रह.* साहित्य भण्डार, मेरठ।

71. शास्त्री, हरिदत्त. 1960. *ऋक् सूक्त संग्रह.* विश्वेशरानन्द वैदिक शोध संस्थानम्, होशियारपुर।

72. श्रीनिवासाचार्य. 1896. *चरणव्यूह.* तरंगिणी प्रेस, मद्रास।

73. सरस्वति, ओङ्कारनाथ. *अथर्ववेद का एक सरल संक्षिप्त अध्ययन.* ओङ्कारनाथ ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग, गोरखपुर।

74. सरस्वती, जगदीश्वरानन्द. 1989. *ऋग्वेद सूक्ति सुधा.* जयपुर।

75. सागर, जीवानन्द. 1892. *सामवेद (सायण भाष्य).* कलकत्ता ।

76. सातवलेकर, दामोदर श्रीपाद. 1970. *वाजसनेयि माध्यन्दिन शुक्ल यजुर्वेद संहिता.* स्वाध्याय मण्ड़ल, औंध, पारड़ी ।

77. सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर. 1962. *अथर्ववेद ब्रह्मविद्या प्रकरण.* वैदिक स्वाध्याय मण्ड़ल, औंध, पारड़ी ।

78. सामश्रमी, सत्यव्रत. 1951. *गलितप्रदीप.* सत्य प्रेस, कलकत्ता ।

79. सामश्रमी, सत्यव्रत. 1983. *सामवेद संहिता.* मुन्शीराम मनोहर लाल पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

80. सिद्धान्तालङ्कार, हरिशरण. 2011. *ऋग्वेदभाष्यम्.* भाग 7. श्रीधूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थन्यास, हिन्ड़ौन सिटी, राजस्थान ।

81. सोनटक्के, एन. एस. एवं धर्माधिकारी, टी. एन. 1970. *तैत्तिरीय संहिता.* भण्ड़ारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना ।

अंग्रेजी ग्रन्थ (English Bibliography):

1. Benophe, Thyodar. 1848. *Samveda.* Leipzing.

2. Black, Paul E. 2006. Inverted index, Dictionary of Algorithms and Data Structures. *National Institute of Standards and Technology*. USA.

3. Brown, E.W. 1995. Execution Performance Issues in Full-Text Information Retrieval (Technical Report 95-81). *Computer Science Department*. University of Massachusetts Amherst.

4. Chanda, Devi. 1981. *The Samveda.* Munshiram Manoharlal Publications, New Delhi.

5. Foster, C. C. 1965. *Information retrieval: information storage and retrieval using AVL trees*. Cleveland, Ohio, United States.

6. Cutting, D. & Pedersen, J. 1990. Optimizations for dynamic inverted index maintenance. *Proceedings of SIGIR*.

7. Grossman, Frieder & Goharian. 2011. *IR Basics of Inverted Index*. Tang, Hunqiang.

8. Gusfield, Dan. 1999 and 1997. *Algorithms on Strings, Trees and Sequences: Computer Science and Computational Biology*. Cambridge University Press, USA.

9. Heaps, H.S. 1972. Storage analysis of a compression coding for document data base. *INFOR 10,47-61*.

10. Landauer, W. I. 1963. The balanced tree and its utilization in information retrieval. IEEE Trans. on Electronic Computers. *Vols. EC-12, No. 6*.

11. Partitioning, Linear Hash. 2006. MySQL 5.1 Reference Manual. *18.2.3.1*.

12. Macdonell, Arthur A. 2015. *A history of Sanskrit literature.* Kaveri Books, New Delhi.

13. Macdonnel, A. A. 1917. *A Vedic reader for students.* Oxford University Press, London.

14. Peterson, Peter. 1974. *Hymns from the Rigveda.* BORI, Poona,

15. Rajwade, V. K. 1940. *Yaska's Nirukt.* BORI, Poona.

16. Brin, Sergey & Page, Lawrence. 2006. *The Anatomy of a Large-Scale Hypertextual Web Search Engine*. Stanford University.

17. Tomasic, A. 1993. et al. Incremental Updates of Inverted Lists for Text Document Retrieval. *Stanford University Computer Science Technical*, Stanford.

18. Obesaki, Toni L. & Ambrose. Automated Indexing: The key to Information Retrieval in the 21st Century. *Alli University.*
19. Trie. Dictionary of Algorithms and Data Structures. *National Institute of Standards and Technology*. USA.
20. Vaidya, C. V. 1986. *History of Sanskrit literature.* Parimal Publications, Shakti Nagar, Delhi.
21. Whitney, William Dwight. 1987. *Atharvaveda Samhita.* Nag Publishers, Delhi.

वेबसाइट ग्रन्थ (Web Bibliography):

1. Tripod, 2016, Web: http://taxonomist.tripod.com/indexing/autoindex.html. (Obtained on March 20, 2016).
2. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016a, Web: https://en.wiktionary.org/wiki/bottleneck (Obtained on March 20, 2016).
3. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016b, Web: https://en.wikipedia.org/w/index.php?title=Miva_ (company)&action=edit&redlink=1 (Obtained on March 20, 2016).
4. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016c, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/AOL (Obtained on March 20, 2016).
5. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016d, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Array_data_structure (Obtained on March 20, 2016).
6. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016e, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Subject_indexing (Obtained on March 20, 2016).
7. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016f, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Suffix_array (Obtained on March 20, 2016).
8. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016g, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Bibliometrics (Obtained on March 20, 2016).

9. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016h, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Blucora (Obtained on March 21, 2016).
10. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016i, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Boolean_data_type (Obtained on March 21, 2016).
11. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016j, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Burrows%E2%80%93Wheeler_transform (Obtained on March 21, 2016).
12. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016k, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Byte (Obtained on March 22, 2016).
13. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016l, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Character_encoding (Obtained on March 22, 2016).
14. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016m, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Citation_index (Obtained on March 22, 2016).
15. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016n, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Data (Obtained on March 22, 2016).
16. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016o, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Database_index (Obtained on March 22, 2016).
17. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016p, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Distributed_hash_table (Obtained on March 23, 2016).
18. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016q, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/DNA (Obtained on March 23, 2016).
19. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016r, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Document-term_matrix (Obtained on March 23, 2016).

20. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016s, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Excite (Obtained on March 23, 2016).
21. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016t, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Hash_function (Obtained on March 23, 2016).
22. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016u, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Hash_table (Obtained on March 23, 2016).
23. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016v, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Latent_semantic_analysis (Obtained on March 24, 2016).
24. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016w, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/N-gram (Obtained on March 24, 2016).
25. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016x, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Search_engine_indexing#Index_design_factors (Obtained on March 24, 2016).
26. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016y, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Suffix_tree (Obtained on March 24, 2016).
27. Wikipedia: The Free Encyclopedia, 2016z, Web: https://en.wikipedia.org/wiki/Trie (Obtained on March 24, 2016).

प्रथम परिशिष्ट

ऋग्वेद मन्त्र डेटाबेस की संरचना

1.	क्रम सङ्ख्या	1
2.	स्वर सहित संहिता पाठ	अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
3.	स्वरबिना संहितापाठ	अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
4.	मण्डल क्रम	1.1.1
5.	अष्टक क्रम	1.1.1.1
6.	पदपाठ	अग्निम् । ईळे । पुरःऽहितम् । यज्ञस्य । देवम् । ऋत्विजम् । होतारम् । रत्नऽधातमम् ॥
7.	ऋषि	मधुच्छन्दाः वैश्वामित्रः
8.	देवता	अग्निः
9.	छन्द	गायत्री
10.	स्वर	षड्जः
11.	हिन्दी अनुवाद	यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलानेवाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ ।

द्वितीय परिशिष्ट

सर्च किए गए शब्द से प्राप्त होने वाली अनुक्रमणिका सूची का एक प्रारूप

search for 'अग्नि' found 315 results in 'ऋग्वेद'

शब्द	मन्त्र संख्या
अग्नि	1.1.1/1.1.1.1
अग्नि	1.1.2/1.1.1.2
अग्नि	1.1.3/1.1.1.3
अग्नि	1.1.5/1.1.1.5
अग्नि	1.12.1/1.1.22.1
अग्नि	1.12.2/1.1.22.2
अग्नि	1.12.6/1.1.22.6
अग्नि	1.12.9/1.1.23.3
अग्नि	1.23.20/1.2.11.5
अग्नि	1.26.10/1.2.21.5
अग्नि	1.27.1/1.2.22.1
अग्नि	1.36.1/1.3.8.1
अग्नि	1.36.2/1.3.8.2
अग्नि	1.36.17/1.3.11.2
अग्नि	1.36.18/1.3.11.3
अग्नि	1.38.13/1.3.17.3
अग्नि	1.58.7/1.4.24.2
अग्नि	1.60.4/1.4.26.4
अग्नि	1.69.3/1.5.13.3
अग्नि	1.69.6/1.5.13.6
अग्नि	1.70.1/1.5.14.1

तृतीय परिशिष्ट

परिणाम के रूप में प्राप्त अनुक्रमणिका के लिन्क पर क्लिक करने पर प्राप्त विस्तृत सूचना

खोजा गया शब्द	अग्नि : (ऋग्वेद)
संहिता पाठ	अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
मण्डलक्रमांक/अष्टक.अध्याय.वर्ग.मन्त्रसंख्या	1.1.1/1.1.1.1
स्वरयुक्त संहिता पाठ	अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥
पदपाठ	अग्निम् । ईळे । पुरःऽहितम् । यज्ञस्य । देवम् । ऋत्विजम्। होतारम् । रत्नऽधातमम् ॥
ऋषि	मधुच्छन्दाः वैश्वामित्रः
देवता	अग्निः
छन्द	गायत्री
हिन्दी अनुवाद	यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलानेवाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ ।

चतुर्थ परिशिष्ट

ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तन्त्र की प्रक्रिया

(Process of the Rigvedic Indexing)

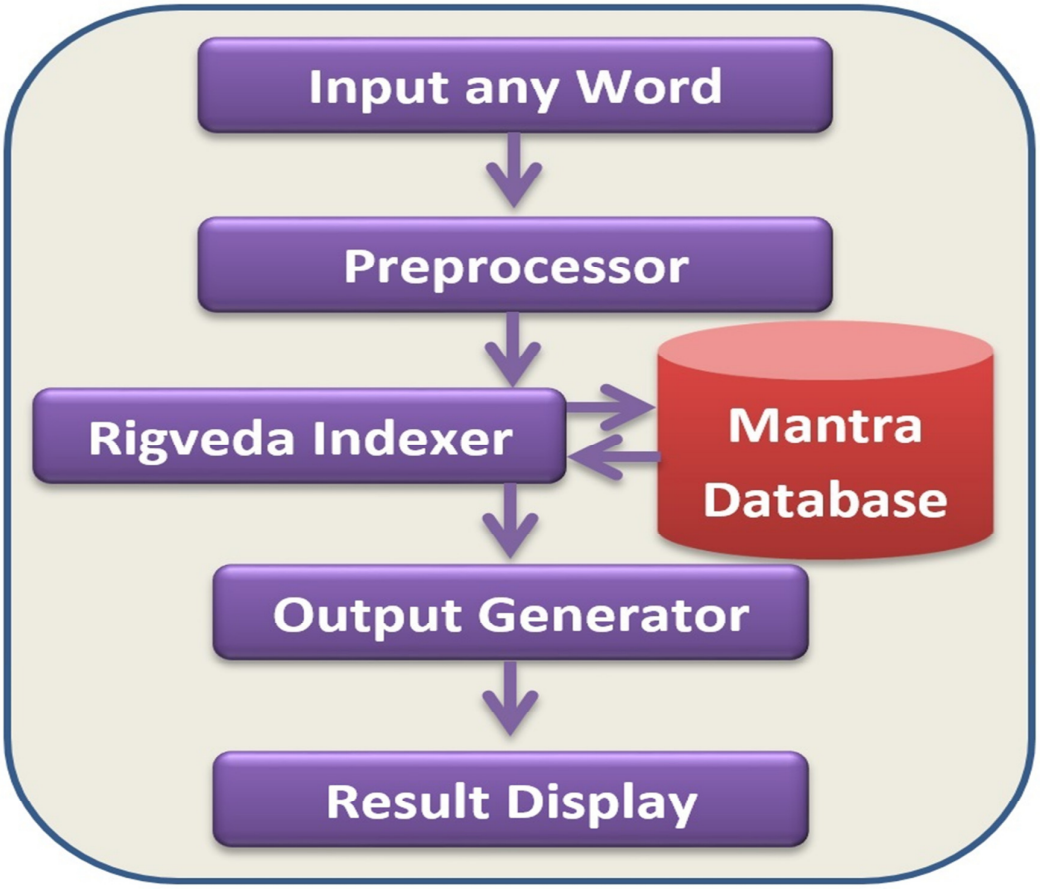

पञ्चम परिशिष्ट

ऋग्वेद के लिए अनुक्रमणिका तंत्र का इण्टरफेस

(User Interface for Rigvedic Indexing System)

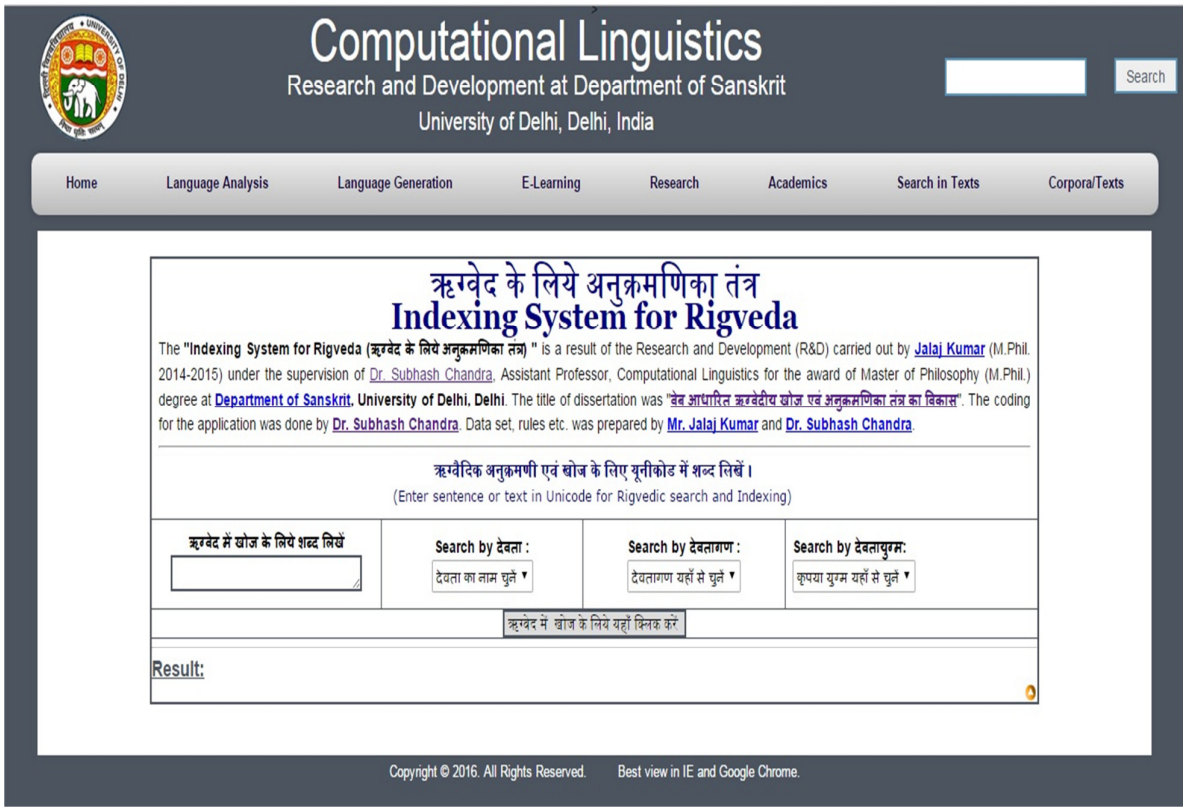

षष्ठ परिशिष्ट

देवतानाम के अनुसार सर्च विकल्प में देवताओं की सूची का प्रारूप

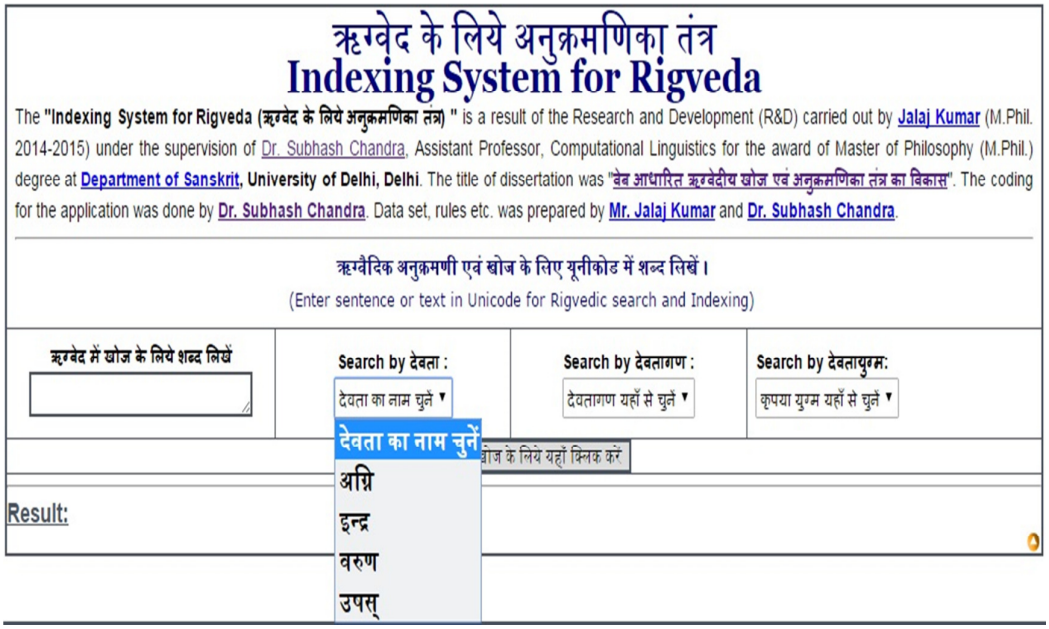

सप्तम परिशिष्ट

देवतागण के अनुसार सर्च विकल्प में देवतागणों की सूची का प्रारूप

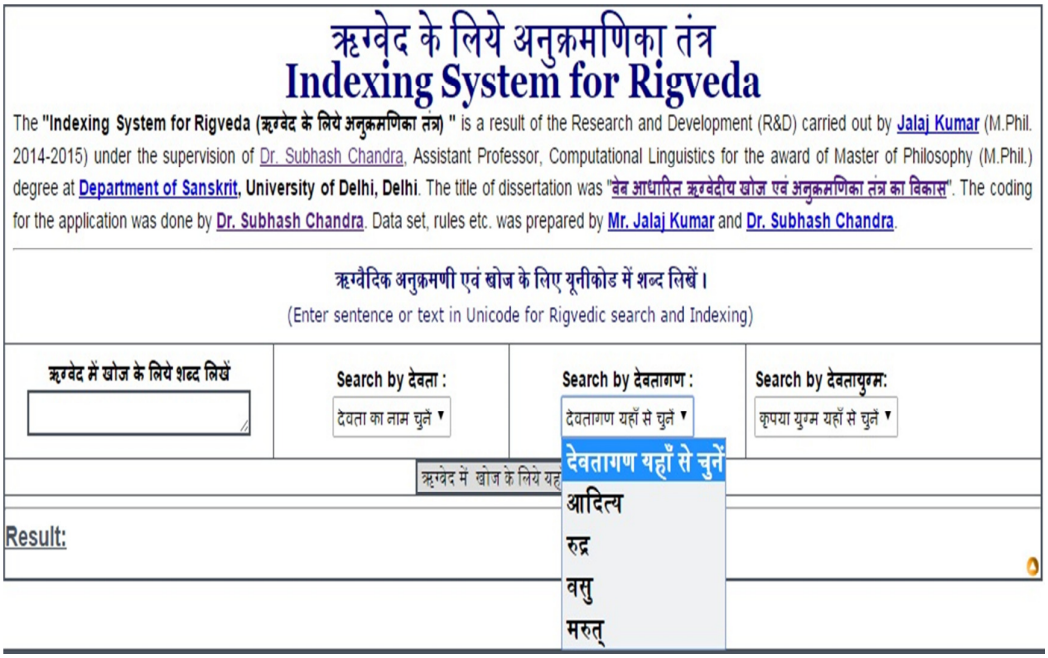

अष्टम परिशिष्ट

देवतायुग्म के अनुसार सर्च विकल्प में देवतायुग्मों की सूची का प्रारूप

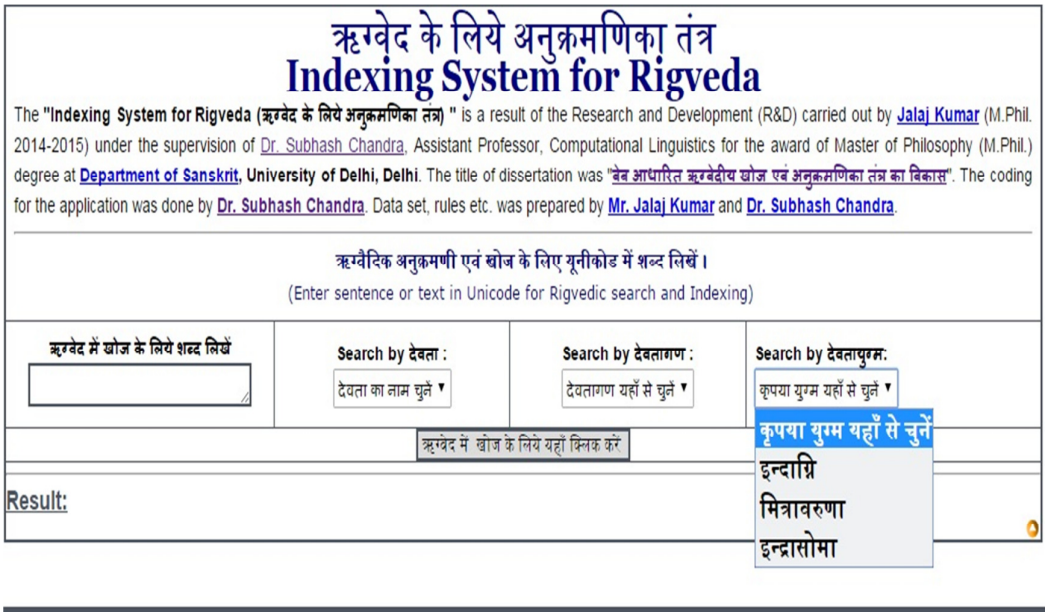

नवम परिशिष्ट

वेब आधारित संस्कृत छन्द सूचना तन्त्र की संरचना

(Architecture of the System)